* श्री *

जोहरी [illegible] विरचित

आत्महित

* सुभगावली

जिसको

निज बुद्धीके अनुसार देशप्रसिद्ध नवीन राग
रागणियोंके गीतोंकी चालमें भजन बनाकर
और संपूर्ण भजनानुरागियोंका श्रीजिनेंद्र
महाराजमें अनुराग बढानेके वास्ते यह
पुस्तक विनामूल्य देनेकेलिये बणाय

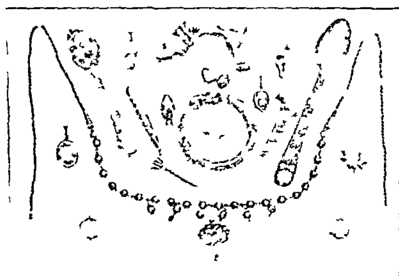
और

बालचन्द्र यन्त्रालय जयपुरमें

छपवाय

प्रकाशितकी।

प्रथमबार १००० — तारीख १ मई १९०७ — मि० वैशाखवदी १ सं० १९६४ का

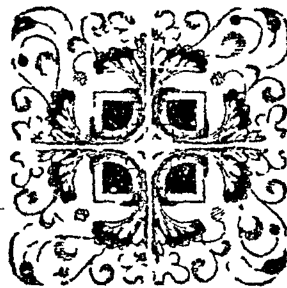


बाचकोंसे प्रार्थना ।

प्रियबाचकगणो मे जो ये पुस्तक आत्म-हितउपाय सुगुणावली निज बुद्धि अनुसार जोड़-के बाचनार्थ श्रीसवाईजयपुरमे बालचन्द्रयन्त्रा-लयमे छपाकर आपलोगोकी सेवामें हाजिर कर-ताहूं सो आपलोग कृपा करके आदर यत्नसे रखेगे और गुणवानोके गुणगानेमे हमेशा तय्यार रहेगे यथा शक्ति व्रत पचखानादि शुभकार्यसे बा-ज न आवेंगे कुगुरु भ्रष्टाचारोको को छोड़ कर सुगुरु शुद्धआचार पालने वाले बयालीस दोष रहित आहार पानीके गवेषीसतरे भेदे संजमधारी बारह भेद तपकारी पंचसुमति तीनगुपति पंच महाव्रत धारी निग्रथ साधुजनकी सतसगतमें हमे-शा लवलीन रहेगे ।

एक अर्ज यहभीहे के इस पुस्तकके छपते समय कई जगे अक्षर मात्रादिकी भूल रही है जिसको गुणीजन शुद्धरीतीसे बांचेगे मेरी नि-गाहमे इस माफिक है ।

अनुक्रमणिका



॥ श्री ॥

प्रस्तावना।



सकल भव्य जीवों से मेरी यह प्रार्थना है कि इस अपार संसारमें जीव पापकर्म उपार्जन करके अनेक प्रकार के दुःखों के विभागी हुए जाते हैं, निज स्वभावको भूल कर पर स्वभाव में रत रहते हैं, कुगुरु, कुदेव, कुधर्म, मे रच रहे हैं, खोटी मति को अच्छीमति समझ कर अंगीकार कर रहे हैं, और कितनेक भद्रिक भव्य जीव अच्छी मतिको अच्छी जान तो लेते हैं मगर अंगीकार किया हुवा छोड नहीं सक्ते जैसे रायप्रसेनी सूत्रमें लोह वणिकका दृष्टान्त है। और कितने ही ऐसे हैं के रागद्वेष में लिप्त होकर धर्म अधर्म को तो कुछ नहीं जानते केवल मति पक्षपात से कुदेव, कुगुरों को नहीं छोडते ॥ २ ॥ कितने ऐसे भी हैं न्याय अन्याय, धर्म अधर्म, साधु असाधु को वे कुछ नहीं जानते और अपनेही मतको अच्छा समझते हैं उनके भावे सेत सेत सर्व दूध और पीत पीत सर्व स्वर्ण है ॥ ३ ॥ चौथे नरकके जीव ऐसे भी हैं कि अपनी बात को छोडते नहीं और दूसरे की सुनते नहीं ॥ ४ ॥ इस तरे संसार मे च्यार प्रकार के अनेक मनुष्य हैं, इस हेतु सर्व सज्जनो से मेरी यह प्रार्थना है कि सम्यक्‌परिणामों से हिताऽहित धर्माऽधर्म का विचार करके सार को ग्रहण करें क्योंकि अनन्तकाल में मनुष्यशरीर का पाना मुशकिल है उसमें आर्यक्षेत्र उत्तम कुल पाना दुर्लभ है।

कठिन है, कदाचित ए सब होयतो दीर्घ आयु पूर्ण इंद्रीबल, होना अत्यंत ही दुर्लभ है फिर सद्गुरु संयोग और वीतराग के वचन श्रवण में चित्त लगाना मुसकिल है, फिर सास्त्र श्रवणके बाद सत्याऽसत्य का निर्णय कर असत्यका त्याग और सत्य का ग्रहण करना तथा धर्मकार्यमें प्रवृत्तहोना महामुसकिल है।

सब लोग जानते हैं कि एक दिन मरणा है, नजरमें देखते देखते स्वजन स्नेही भाई व मित्र, गरीब, अमीर, राजा, प्रजादि सब चले जा रहे हैं जैसें ही एक दिन सब को जाना होगा सर्वदा स्थिर कोई भी नहीं रहता लेकिन विचार ऐसा बांधते हैं कि- हम अजर अमर ही हैं अथवा लाखो क्रोडो वरसों तक जीना होगा, मरते हैं सो और हैं, हम कोई और हैं, मोह कर्म वससे मदांधकी तरे हो रहे हैं, और धर्म कार्य करना वा किसी गुणवानके पास सुनना, निरपक्ष पुस्तकों को देखना तो व्यर्थ समझे है कहते हैं हमें फुरसत नहीं मिलती लेकिन, उन लोगो को- यह विचार अवश्य चाहिए के जिस वक्त कालवली आवेगा तो कोई डाक्टर, वैद्य, हकीम, ज्योतसी, वली धनी, सूरमा कुटम्ब, फोज, पलटन, किला, तोपखानादि, किसीका जोर नहीं चलेगा आखिर शरीरको छोडकर एका एक जीव शुभाशुभ कर्मको संग लेकर पर भवमे जायगा, इसलिये अवश्य चाहिए कि जरा न आवे रोगन व्यापे इन्द्रीयों का वल पराक्रम हीन न पडे, जिसके पहले पहले जो कुछ बन सके यथासक्ति धर्म कार्य करै जिससें पर भवमे दुखः न पावे, और अनादिकालसें जीव कर्म संततीके साथ है उससें मुक्ति होनेका मार्ग मिले, इसलिये सर्वथा प्रकार हिन्सा, झूट, चोरी, मैथुन, परिग्रहादि कुकर्मोका त्याग करके शुद्ध सा

धुपना पाले, अथवा साधुपना नहीं ग्रहण कर सकैतो, जीवा जीव पुन्यपापादिक यथार्थ विचार करके यथाशक्ति व्रत पच खान और शुद्ध श्रावकपणा पाले, और गुणवन्तोका गुणगानों में हमेसा तत्पर रहे, जिससे अपनी आत्मा का कल्याण होय. मैंने जो निजबुद्धि अनुसार गुणवानोंके गुण गाये हैं सोमेरे हितेच्छु सज्जन धर्मानुरागी भाइयो के वाचनार्थ ये पुस्तक, आत्महित उपाय सगुणावली, छपाकर प्रकट करीहै सो कविजन, पंडित जन गुणवान इसै पढ कर मेरा हास्य न करेंगे मुझे कोई ऐसा व्याकर्ण, काव्य, कोष, ह्रस्व, दीर्घादि, वर्णोंका विशेष बोध नहीहै सो कोई भूल रहगई होवे तो गुणीजन क्षमा करेंगे, मैं नें तो अपने आत्महितार्थ जिनगुण गाये है श्रीजिनराज देवके गुणोंका तो पार नहीं है अनन्त है और मेरी बुद्धि छोटी सी जैसे कोई वावना पुरुष बडे ऊंचे अमृतफल तोड खाने के लीये प्रयास करे या कोई कुंडमे तैरने वाला मनुष्य अपने भुज बल से महा कल्लोल लोल समुद्र मे तिरणे के हेतु कूदपडेतो लोग हास्य करे तैसेही जिनगुणतो महा आगाध समुद्र और में अल्प मति क्या उनका वर्णन कर, सक्ता हूं इस लिए यहभी हास्यका कारणहे मैंने एकांति कर्म निरजराका कारण समझ कर गुणानुवाद किया है, सो कृपा कर अवस्य पढै और जो कोई जोड करणे में या लिखने में अथवा छपने में भूल रह गई होयतो क्षमा करे।

आपका हितेच्छु और गुणवानो का दास श्रावक
जोहरी गुलाबचंद लूणिया जयपुर

इति निवेदनम् ।

॥ दोहा ॥

सकलसौख्य दाता सदा विघन हरण गुणगेह ।
त्रिभुवन तारक ईश प्रभु प्रणमूं अरिहंत देव॥ १ ॥
कर्म चतुष्टय नाश करि पायो जिन निज धाम ।
द्वादश गुण संयुक्त जे अतिशय गुण अभिराम ॥ २ ॥
श्रीपरमातम परम पद पाये कर्म हटाय ।
ज्ञान स्वरूपी ज्योतिमय निज संपद सुखदाय ॥३॥
ज्ञानानन्त गुणाष्टयुत अतिशय जसु इकतीस ।
सर्वसिद्धिदायक सदा सिद्ध नमूं जगदीश ॥ ४ ॥
आचारज तीजे पदे गुण षट्तीस सुहाय ।
जिन आगम आचर्ण रत प्रणमूं तेहना पाय ॥ ५ ॥
उपाध्याय जिन श्रुत धरू शास्त्र अर्थ भंडार ।
गुण पच्चीसे शोभता प्रणमूं वारं वार ॥ ६ ॥
मोक्षमार्ग साधन करे पाले पँचा चार ।
सप्त बीस गुण धर सदा नमूं साधु सुखकार ॥ ७ ॥
श्रीजिनशासनदीपतो पञ्चम अरके मांहि ।
भिक्षु गुण निधि सागरू सुमर्‍यॉं हित सुख थाय॥८॥
वर्तमान गणपति भलो मुनि पटडाल मुनीश ।
सेवकने सुर तरु समो करे ज्ञान बकसीस ॥ ९ ॥

एमहुनें प्रणामी करि पुनि सरस्वती सुप साय ।
गुणावंता गुण गावतां प्रगटे बुद्धि अथाय ॥ १० ॥
है अनंत जिनराज गुण कहत न आवे पार ।
किंचित संग्रह करि कहृ निज बुद्धी अनुसार ॥ ११ ॥

प्रश्न ॥

जिन किसको कहते हैं

उत्तर ॥

जिन कहेते है जीतने वालोको

प्रश्न ॥

जीतने वाले तो जोधा सूरमां कहाते हैं सो वैरीको बस करिके अपना जय करे उन्हीको कहते हो या और कोई बात है।

उत्तर ॥

परसेना को बिडार कर शत्रूको बस करे एतो संसारिक संग्राम है, ऐसा संग्रामतो अपना जीव आगे अनन्त वार किया जिससे कर्मबन्ध होकर उदय आने से दु ख प्राप्त भया तो मानो यह जय कहाँ हुई पराजय हुई।

प्रश्न ॥

तो फिर किस संग्रामके लिए कहते हो कहो ॥

उत्तर ॥

इसलोकमें जितने जीवहैं सो असंख्यात प्रदेसी हैं ज्ञान दर्शन चरित्रादि गुणों करके संयुक्त हैं और अनंत सक्तिवंतहै वे दो प्रकारके सिद्ध और संसारि सिद्ध कर्मों रहित संसारी कर्मों सहित अनादिकालसे ज्ञानावर्णादि करिके ढके हुए हैं और कर्मोंसे लोलीभूत होरहे हैं ।

उस पर द्रष्टान्त ॥

तेल और तिल लोली भूत जैसे जीव और कर्म लोली भूत । १ ।

धातु माटी लोली भूत तैसे जीव कर्म लोली भूत २

घृत और दुग्ध लोली भूत वैसे जीव कर्म लोली भूत ३

इत्यादि द्रष्टान्त करके अनंत सक्तिवंत जीव कर्मोंसे लिप्तहैं और मलीन होकर मलीन रत्नकी तरे अपनी बुनियाद को कभीभी नहीं पहुंचता जैसे बांझ स्त्रीके पुत्र नहीं वैसे अभव्य को मुक्ति नहीं

उनको अभव्य कहते है और जो शुद्धसामग्री पाके अनन्त चतुष्टय गुण प्रकट कर सके और करेगे वो भव्य कहलाते है।

प्रश्न ॥

कर्म क्या चीज है

उत्तर ॥

इसका जवाब से बिस्तार तो जेनसिद्धांतोमेहे लेकिन इहां संक्षेप मात्र कहते है।

सुनिए

कर्म जड है चउफरसी पुद्गल हे रुपी हैं उनके नाम ज्ञानावरणी १ दर्शनावरणी २ बेदनी ३ मोहनी ४ नांम ५ गोत ६ अन्तराय ७ आयुष्य ८ इनमें च्यार तो अघातिक शुभाशुभ कर्म ह।

१ बेदनी साता असाता
२ नाम शुभ अशुभ
३ गोत ऊंच नीच

४ आयुष्य शुभ अशुभ ।

ए च्यारों पुन्य पाप दोनों हैं इनके अनेक भेद हैं और च्यारों कर्मघातिक हैं जीवकाजेसा जैसा गुण दबाया है तैसाही इन कर्मोंके नाम हैं ।

१ ज्ञानावरणी कर्म ज्ञान आडा आमणी है ।
२ दर्शनावरणी दर्शनगुण आमणी है ।

३ मोहनी कर्म के उदय से जीव उन्मत्त होकर मदांध की तरें होजाता है ।

४ अन्तराय कर्म जीवको लाभ नहींहोने देताहै ।

ए च्यारं अशुभ कर्म हैं इन कर्मोंको दूर कर राग द्वेष के जीतनेसे ज्ञान दर्शन चारितादि निज गुण प्रकट किया है उनको जिन कहते हैं उनकी अतिशय महिमादि गुणोंका पार नहीं है जिसका वर्णन शास्त्रों में कहाहै सो पढने से या सुणने से मालुम न हो सक्ता है, कर्म रूप बैरी को हटाके अपणी जय के करणे वाले, अरिहंत बिजई को जिन कहते हैं उनका मत याने बिचार को जिन मत कहते हैं ।

चतुर्विंशतिजिनस्तवनम्

श्रीऋषभजिनस्तवनम्

राग भैरवी ।

आदि समे श्रीआदि जिनंदको स्मरण महा-सुखदाई रे ॥ नाभिभूप मरुदेवीको नन्दन कीरति त्रिभुवन छाई रे। धुरराजेश्वर धुर भिक्षाचर धुर परमेश कहाई रे ॥ १ ॥ तीन ज्ञान संपन्न सदागम चरण लेत जिनराई रे। मन पर्जव तव ज्ञान भयो है कल्पातीत कहाई रे ॥ २ ॥ क्षपक श्रेणि चढ घनघातिक अघ क्षय कीये जिनराई रे ॥ लहि केवल भविजन प्रतिबोधत भूमण्डल छवि छाई रे ॥ ३ ॥ लोकालोक प्रकट सब जाणे छांनी वस्तु न कांई रे ॥ योग निरोधी शिव पद पाम्यां सिद्धि सदा सुखदाई रे ॥ ४ ॥ उगणीसे चोपन मगशिर सित रवि बारस दिन आई रे । गुलाबचन्द आनन्द मोह श्रीजिनस्तवना गाई रे ॥

अथ २ श्रीअजित जिनस्तवनम् ।

दरश देख जीवको दीदार भयो राजी । एचाल

अजित जिनंद फंद मेट सरणा गही तेरी ॥ आं० कर्मनको बंध काप मोटो जग मांहि पाप, जपूं जाप सोंप मोय तुम आंणा डोरी ॥ १ ॥ तुमहो त्रिभुवनके स्वांम वांछित सब पूरो कांम आठोंजाम नाम तेरो जपूं हाथ जोरी ॥ २ ॥ अनंत बली आप होय जीत सकै नांहि कोय। अजित नाम ताम स्वाम अरज सुनो मोरी ॥ ३ ॥ भविजन तुम धरत ध्यान दया दिल मांहि आन ॥ सेवक को दीन जान काटो भव फेरी ॥ ४ ॥ उगणीसे चोपन्न जांण पौषकृष्ण चौथ मान ॥ गुलावचंद अरज आज करते करजोरी ॥ ५ ॥

अथ ३ संभव जिनस्तवनम्

राग आसावरी ।

संभव जिन नित वंदो वंदत होत अनंदो रे । भविका संभव जिन नित वंदो ॥ श्रावस्थी नगरी अति सुंदर जितारथ तिहारा यो सेनादे राणी उर

उपनां संभव नाम कहायो रे ॥ संभव० ॥ १ ॥ लछन अश्व तणो हद मोहै च्यारसो धनुष शरीरो। साठ लाख पूरवनूं आयू पाम्यां भव जल तीरो रे । संभव० ॥ २ ॥ इक सय दोय थया मुनि गण धर दोय लाख अणगारो। तीनलाख पुनि साठ सहस गिण समणी तणो परिवारो रे। संभव० ॥ ३ ॥ संभव जिनको नांम जप्यांथी पामे शिव पुर राजो तीन लोकके साहिब स्वामी तारन तिरन जहाजोरे संभव० ॥ ४ ॥ उगणी से चौपन मगशिर सित चौदस मंगल वारो । गुलाबचंद कहे संभव जिनको स्मरण महासुखकारो रे । का भविका० ॥ ५ ॥

अथ ४ अभिनंदन जिन स्तवनम्

राग काफी

रयाँरे तोय लाज न आवै भटकत गण घकि वार। यचाल

वंदारिया जिन वचनोंकी वरस रही सुख दाय ॥ (आंकडी) केवल ज्ञान घटा प्रकटी तब लोकालोक स्वभाव जानत प्रभुजी जीव चराचर का नीं वस्तु न काय ॥ वंदारिया० ॥ १ ॥ वचनामृत वरषत धुनि गरजत भविजन सुन हर्षाय स्याद

बाद दोय विजुरी चमकत देखत कुमति डराय ॥ वदरि० ॥ २ ॥ ज्ञात इक षोडश गणधर प्रभुके पूरव धर मुनिराय । गूंथि गूंथि भव जनको पावत अंग उपंग वणाय ॥ वदरि० ॥ ३ ॥ केइ नर उत्तम चरन गहै तव केइ श्रावक पर्याय । व्रत धारक समदृष्टि सुधारक केइ दरस देख हुलसाय ॥ वदरि० ॥ ४ ॥ उगणीसे चौपन हितकारी माघ मास सुखदाय ॥ अभिनंदन जिनराज तणा ये गुलावचंद गुण गाय ॥ वदरिया० ॥ ५ ॥

अथ ५ सुमतिनाथ जिनस्तवनम्

राग

(नाथ कैसे गजको फंदछुडायो ए चाल)

सुमति जिन तुम साहिब सुखकारी मंतौबार बार बलिहारी ॥ (आंकडी) सुमति सुधारन कुमति विडारन आप भये अवतारी । भविक उधारन भव जल तारण कारण अशुभ विडारी ॥ १ ॥ जिन आणां विन धर्म प्ररूपै या कुमति वडी छै धुतारी ॥ अनुकंपहिकूं अनुकूल कहै प्रतिकूल कहै

नहि दारी ॥ २ ॥ तुम पसाय सुमति मुझ प्रगटी प्रगट भयो उजियारी । सावद निरवद भेद कह्या जव अंतर आंख उघारी ॥ ३ ॥ तेरा पंथे सत तंत है म्हंत वडा उपगारी । तसु पदपंकज मुझ मन भमरो सरणा गह्यो गुणधारी ॥ ४ ॥ उगणीसे चोपन माघ अष्टमी श्रीजयनगर मझारी ॥ गुलावचंद जिनराज तणां गुण गावत धर हुसियारी ॥ ५ ॥

अथ ६ पद्मप्रभ जिन स्तवनम्
राग चालखडकाकी

पद्म जिनराज महाराज अलवेसरू नाम शिव धाम आराम नीको, भविक प्रतिबोध शुध सोध अविरोध तर पावियो आवियो सुजसटीको ॥ १ ॥ चतुर्विधसंघनो नाथदुखभंजनो रंजनो भ्रमरभावि मन लुभायो ॥ अरज अव धारिये पार उतारिये स्वांम मे तांहरे सरण आयो ॥ २ ॥ लाख त्रण तीसहज्जार साहू भला ब्रह्ममुखलाख पुनि सहस वीशै समणि सुखदायिका आप शासन विषे काया अढाई सत धनुप दीसै ॥ ३ ॥ ध्यांन वर ध्याय शिवपाय अविचल थया गुण ग्रह्या अष्ट तुम सुख-

के दाता। यंकेतीसे खरी अतिशये परिवरी नांम भजिया भवी थामें शाता ॥ ४ ॥ संमत् उगणीसे वर वरस पच्चपन्नमें माघमासे वदी तीज आयो। कहत गुलाव गुनगावतां ध्यावतां हरष आनंद मनमां पायो ॥ ५ ॥

अथ ७ सुपार्श्वजिनस्तवनम्

(वामासुतपासजीप्रभुपूजो एचाल)

सुपारस स्वांमजी मुजै प्यारो एतो जिन वरमोहनगारो। अं०) शोभै काशी नगर सुनीको नंदन प्रतिष्ट नृपातिको। सुवरण वरण तहतिको ॥ १ ॥ छत्रतीन सिंहासन सौहे चामर युग विहुपासे मोहै। द्रुम अशोक जिनपें होवै ॥ २ ॥ इंद्र नरिंद्रादिक सव आवै तृग डानी शोभा रचावै। चौमुख जिनजी दरसावे ॥ ३ ॥ सुरतीर्यञ्च वहू नरनारी समव सरन होवै अतिभारी। तिणारो आगममें अधिकारी ॥ ४ ॥ उगणीसे चोपन्नै वरसे फागण सित एकम दिवसें। कांई गुलाव शशी मन हुलसे ॥ ५ ॥

अथ ८ चंद्रप्रभजिनस्तवनम्

राग पीलू

होजी हो जिनंद हां मोयतो भरोसो राजरा चरनांरो मोयतो आ० ॥ महासेनराजा तात त्रिसलाद राणी मात तेहनूं तूं अंगजात स्वेत वरणोरो ॥ १ ॥ तुमहो त्रिभुवन नाथ कीजे साथ दीजे हाथ धरम परम संसार तिरणारो ॥ २ ॥ अरज करत एक प्रभुमेरी राखो टेक तुम दरसन सुद्ध आतम करणारो ॥ ३ ॥ तेरेहुं आधीन लीन जलमे मगन मीन चंदस्वाम नाम धाम दुःखके हरनगे ॥ ४ ॥ करम भरम काप शिव सुख मोय-साप गुलावचंद आनंद शरणारो । मो० ॥ ५ ॥

अथ ९ सुविधि जिन स्तवनम्

राग मल्हार सोरठ

पपयापापी पियाजीरी वाणी न बोल एचाल

तारो हो जिनजी एसमार असार । आ० सुग्रीव नंदन कुबुधि विहंडन सुबुधि सदा सुख कार । धनरामादे राणी जननी जायो सुत सुख कार ॥ १ ॥

बहुत भम्योंमें भवसागरविच अष्टकरमकी लार नर सुर तिय नरक निगोदै कहत नआवै पार ॥ २ ॥ कुबुधि केलवी बहु दुख पायो अवतो नजर निहार दीनदयाल कृपाल कृपा कर अपनूं विरद संभार ॥ ३ ॥ सुविधि करी समकित रस पीनूं कीनूं सुगुरु अंगीकार । तेमोय दीनूं अजब न गीनूं ते विसरूं नहि इणवार ॥ तारो० ॥ ४ ॥ उगणीसे पचपन वैशाष कृष्ण बीज सुक्र कुंवार ॥ गुलाबचंद आनंद हद पायो श्रीजयनगरमझार ॥ ५ ॥

अथ १० शीतल जिन स्तवनम्

सातिय गुलाब फवै जय गनेंम एचाल

प्रभु तुम गुन सुन अति हरखायो । मुझ मन घन हुलसायो रे॥आ० शीतलस्वामी अंतरजामी गुण नांमी शिव पांमी जी अविचल धामी नहि कोइ खामी आप भये आरामी जी ॥ १ ॥ सर्वलोक शीतल होने से शीतल नाम कहायो रे । जिन जनम्या जिन अवसर जगमें निपज्यो धान सवायो जी ॥ २ ॥ च्यार कषाय अगनसुं अधिकी तैं शुभ ध्याने आयाजी

शीतल ध्याने शीतल होयनें निरमल केवल पायो रे प्रभु० ॥ ३ ॥ जगवत्सल जगनायक जगमे पुरुषोत्तम सुखदायो। सुमरण सांचो मुझ मन गच्यो आछो ये भव पायो। प्रभु० ॥ ४ ॥ उगणीसे पचपने आषाढ कृष्ण चोथ भल आयो। रामराय हुलस्यो अकूरा गुलाबचंद गुण गायो। प्रभु० ॥ ५ ॥

अथ ११ श्रेयांस जिनस्तवनम्।

राग सोरठ।

कुबरीन जादूडारा मोया श्यामि ह्याग्रे गचाल।

श्रेयांस स्वांम मंग मे शरण गह्या अब तेरा रे श्रेयांस० (आकडी) गुरु गुण ध्याने जिन वर जांणों मनमान्या मुजकेरा। जिन वचजोवी परसनहो वी धान्या सुगुरु मलेरारे श्रे०॥ १ ॥ नाथ निरंजन आप जगतमें भजन दुखका डेरा। निरलोभी निकलक भयेहो पाखंड हे भव तेरारे श्रे०॥ २ ॥ वनिता सग दग हे केई आडंबर जन घेरा। केई लोभी मोभी मानी भस्म लगाय भुलेरा रे। श्रेयांस० ॥ ३ ॥ ऐसे जगमे

कुगुरु कुदेवा मिलिया वेर घणेरा । सुगुरु सुदेव सुसेव धर्मकी विसरुं नहिं इणवेरा रे ॥ श्रेयांस० ॥ ४ ॥ उगणीसे पचपन आषाढ पंचमीदिवस सुनेरा । गुलाबचंदकी येही अरज है टाग भव भव फेरा रे ॥ श्रेयांस० ॥ ५ ॥

अथ १२ वासुपूज्यजिनस्तवनम् ।

राग कहरवा ।

बे पीना में तुकुल धारी कारीर ज्यान वे । एचाल ।

मेरे मन वासुपूज्य जिन भावे मेरे० (आंकडी) रूप अनूपम शोभित है तन लाल वरण दरसावै । मे० ॥ १ ॥ सुमति धार जपलै जग तारक काहे को कुमति वढावै । मेरे० ॥ २ ॥ जिन आणां विन धर्म न होवै श्रीसिद्धांत वतावै । मे० ॥ ३ ॥ देव सुगुरु शुध धर्म अहिंसा समकितवंत कहावै । मे० ॥ ४ ॥ निश्चय जिनको ध्यान धरंता फेर गरभ नहिं पावै । मे० ॥ ५ ॥ क्षपक श्रेणि चढ योग निरोधी शिव पुर वेग सिधावै । मे० ॥ ६ ॥ गुलावचंद आनंद भयो है हुलस हुलस गुण गावै । मे० ॥ ७ ॥

अथ १३ विमलजिनस्तवनम् ।

राग खमाच ।

बताने मणि ज्ञान गली गण श्याम । एचाल

बतादे प्रभु सिद्ध मिलनको दाव । बतादे प्रभु० (आंकडी) विमलनाथ प्रभु आप निरंजन भजन दुखको घाव । व० ॥ १ ॥ विमल ध्यांनथी शिव पद पाया विमल भये उमराव । व० ॥ २ ॥ नाम स्थापनां द्रव्य निक्षेपा तुर्य सूर्य जिम भाव । व० ॥ ३ ॥ भाव निक्षेपे भविजन ध्यावो भाव वदनको चाव । व० ॥ ४ ॥ गुलाबचंदकी एही अरज है पातक दूर पलाव । व० ॥ ५ ॥

अथ १४ अनतनाथस्तवनम् ।

होजी म्हारे भिक्षुने भारी मालतणी ररजोरी जी धरमना धोरीजी एचाल—

चविप्राणत देव लोकसुंजी कांई सुजशा उदरे आय । सिंहसेन नृप सुत भलोजी नांमें अनंत कहाय । भजो जिनरायाजी परम सुखदाया जी हे जि एतो पूरण परमानंद तणी वलिहारीजी ती रथ करनारी जी । हो० ॥ १ ॥ आयो नक्षत्र रेवती

कांई जन्म थयो तिणवार । छप्पन दिश कुमारियां जी कांई करै निज कृत्य विचार । भजो जिनराया जी० ॥ २ ॥ सुरपति आसन कंपियो कांई चिंतै चित्त मझार । निरखी चेन चराचरी कांई देवै अवधि तिहिवार । भ० ॥ ३ ॥ जांणयूं मानुष खेत्रमें कांई जनम लियो जगतार । मग अष्ट पग सामों जई कांई करै स्तवनां हितकार । भ० ॥ ४ ॥ आवी निज आवासमां कांई घंट सुघोष पुराय । करुणा महोत्सव उमह्यो कांई जांणी निज पर्याय भ० ॥ ५ ॥ सो सुर चालो वेगसुं कांई लहि निज निज परिवार । इम कहि सोहम पति तदा कांई आयो नृप आगार । भ० ॥ ६ ॥ हे जगजननी जनमियो तूं भव जल तारन हार । ले जावां महो च्छव भणी कांई मंदिर गिरइण वार । भ० ॥ ७ ॥ पंच रूप वैक्रिय करी कांई शक्रवणां उछरंग । इकै लेई जिनराज नै कांई चमर उभय अति चंग । भ० ॥ ८ ॥ छत्र धरै इक पूठ ले कांई वज्र ग्रही इक सार । आगै चालै हेजसुं कांई नाटक विविध प्रकार । भ० ॥ ९ ॥ मंदिर गिर ऊपर जई कांई पांडुक वन कै माहि । सिंहासण सासय वसे कां-

ई देख्या नयन ठराय । भ० ॥ १० ॥ चौसठ इंद्र आविय । कांई जय जय शब्द उचार । सौधर्मेश निज गोदमे कांई लेवे थई हुसियार । भ० ॥ ११ ॥ अच्युत पतिना हुकमथी कांई तीरथ जल सवि-ठाठ । कलसा विशेष करावतां कांई चौसठ पुनि मह्स आठ भ० । १२ । करि उच्छव घर आविया कांई माता प्रति कहे एह । तुम सुत छे हम शिरधणी कांई राखिज्यो जतन करेह । भ० ॥ १३ ॥ अमृत अंगुठे करी कांई निज निज कल्प विचाल । आवे इम विस्तार छे कांई जिन आगममें न्हाल । भ० ॥ १४ ॥ तज विषया सज संयमी कांई योग छांडि जिन राय गरु समय शिव पामियां कांई गुलाब कहे गुण गाय । भ० ॥ १५ ॥

अथ १५ धर्मनाथजिनस्तवनम् ।

माजरी में होरी खेलन कैसे जाऊँ मैया ना बोले मोंसे एकवार ।

आपरीमे या विध पूजा रचाऊँ तादिन शिव सुखपाऊँ गाऊँ मैतो या विध पूजा रचाऊँ (आं०) दीपक नाग जांगा नव तले सम कित जोत जगाऊँ ता० ॥ १ ॥ करुणा नीर धीर सुध निरमल

उपसम कलस ढुलाऊँ। ता० ॥ २ ॥ ज्यावच्च सुगुरु लूहन तन तपस्या अगर धूप महकाऊँ। ता० ॥ ३ ॥ चंदन खमन दमन इन्द्रिनको केशर कुंकुम मिलाऊँ। ता० ॥ ४ ॥ जिन गुन चुन माला कुशुमांकी पावन गल पहराऊँ। ता० ॥ ५ ॥ अक्षत वरत धरत जिन आगल ब्रह्म पकवान चढाऊँ। ता० ॥ ६ ॥ तवन ढाल सिझाय सुगारस बहु वाजित्र वजाऊँ ता० ॥ ७ ॥ करि उपदेश जिनेश वचन नूं घंट सुघोष पुराऊँ। ता० ॥ ८ ॥ योग निरोध विरोध करमको एक समय सिध थाऊँ। ता० ॥ ९ ॥ आतम संपति कंपत नाही शिव सुख फल पुनिपाऊँ ता० ॥ १० ॥ इस विध पूजा करतां मेरा भव भवपाप धुलाऊँ। ता० ॥ ११ ॥ धर्मधुरंधर धरम जिनेश्वर धर्म ध्यान चित ल्याऊँ। ता० ॥ १२ ॥ प्रभुसें अरज गुलाब करत है में जिन शरणै आऊँ। ता० ॥ १३ ॥

अथ १६ श्रीशांतिनाथ स्तवनम्।

राग सोहनी।

कलसे तू बेकल हुआ क्या तेरे मजार है ए चाल।

शान्ति नाथ शान्तिकरो शांति तेरो नामहै (आं०) विश्वनंद कर आनंद काट फंद कर्म कद तिमिर नाश कर उजास जय दीनंद स्वाम है शांति० ॥ १ ॥ करन सौख्य हरन दुःख धरम मुख्य जन निकुख्य आय राय चक्रिपाय शरन्न तरन ठाम है । शांति० ॥ २ ॥ मिटत ताप जपत जाप हो मिलाप सजन आप । ऐसे नाथ साथ आथ पाय मुक्ति धाम है । शां० ॥ ३ ॥

पुनः शांति स्तवनम् ।

गलयकोई मति राखज्यो एदेशी ।

शांति करण प्रभु शांतिजी विस्वसेन जीरा नंदोजी । अचिरा उदरे ऊपनां मृगलांछन सुखकंदोजी । शांति ॥ १ ॥ जन्म समय सुर बहुमिल्या आया चौसठ इन्द्रोजी । दुख उद्वेग सहु नासिया थायो अधिक आंनदोजी । शांति० ॥ २ ॥ तुम नामे मरद मिले तुम नामे सुख थावे जी । रोग शोक सहु उपसमे दालिद्र दूर पलावे जी । शां० ॥ ३ ॥ तुम नामें सहुदुख टले इद्रादिक पद पावे जी । निश्चय सुमग्गा आपणे कीया अविचल थांजीवे

शांति ॥ ४ ॥ भो भविजन थे जिन तणो ध्यान धरो इक चित्तो जी । नांम जप्यां संकट टले पामें भल भल वित्तोजी । शांति० ॥ ५ ॥

अथ १७ कूंथुनाथस्तवनम् ।

ए विनतीं अवधारो पार उतार ज्यो हो स्वाम (एआंकडी) कुंथुनाथ करुणा गर स्वामी जी पूरणा आशा खाशा थांमीजी थांपर वारी हो जिनजी नां-मी शिव पद पामी आरामी थया हो राज० ॥ १ ॥ भुवन अनुत्तरनां सुर ध्यावैजी । मोहन मुद्रा निरख सुख पावे जी । थांपै वारी म्हारा जिनजी तुमनी सेवा चावे उमावे सुर सहू हो राज थांपै वारी म्हारा जि-नजी । ए विनती अव० ॥ २ ॥ करत प्रष्ण तिहां-थी अमराजी जिम पंकज कूं चाहै भमराजी थांपै वारी म्हारा जिनजी भक्त तणी भक्तीनी शक्त नां जांणछोजी राज । थांपै० ॥ ३ ॥ जिन उत्तर प्रष्ण नूं देवै जी निर्जर अनुत्तर में जाण लेवै जी थापै वारी हो ॥ सुखमें अति सुख पामें दरस तुम देखिनै हो राज थांपै वा० ॥ ४ ॥ उगणीसे पचपन माघ मासेजी अष्टमी दिवस भलै गुरु-

मम कित वर कर करणी नीकी फांकी कुमति भगाइ । द्वादश व्रतधारी सुखकारी वारूं सुमति जगाई। जिनन्दजीसू लगन लगाई । या विध होरी मचाई ॥ १ ॥ ज्ञान गुलाल ताल जिन आगम भर पिचकारी चलाई । कर चरचा किरचा अघ कारण पाखड ताज उडाई । कम्म दल दूर हटाई । या विध० ॥ २ ॥ करुणानीर धीर जिन वचनां सुचनां निज जिय मांई । आतम गुन ओलख गोलख कूं ज्ञान दर्शन में वधाई। अमोलक ए रिद्धँ पाई॥या विध०॥३॥ राय सुदर्शन देवाराणी सुत अरि जिन सुख दाई । तीरथनाथ साथ सहँससाहू तीस धनुप तनु पाई । सुद्ध मग मोक्ष सिधाई॥यावि०॥ ४॥ उगणीसे पचपन माघमासे खास वसत ऋतु आई । गुलाबचद आनंद भयो है श्रीजिनस्तवनां गाई । फलो सुभ आस सवाई ॥ या० ॥ ५ ॥

अथ १६ मल्लि जिनस्तवनम्

म्हारार स्वामी बोलोनी वाला एदेसी ॥

राग गुजराती

सजरा निरमयप्रभू केचाला एदे शी ।

मल्लि जिन साहिबरे सांचा। मेरे प्रभु अमृत सम वाचा लागे छै सब पाखंड मुज काचा॥ मेरे॥ १॥ सोहै पच्चवीस धनुष देही धरे सुर हरख निरख केई। तेरे जिन चरण शरण लेई। मल्लि०॥२॥ पूरव खट मंत्री मन भाया। तसु तुम ज्ञानें समुझाया। स्वल्प कालेकेवल पाया। म०॥ ३॥ भली तुम अमृत सम वांनी। सुनि जन शिव सुखकी खांनी। अकेरा पाय थया ज्ञानी। म०॥ ४॥ करत जिनस्तवनां सहु सावै वसन्त रितु पच्चपनमें आवै। खुसी थइ गुलाब शशी गावै। म०॥ ५॥

अथ २० मुनि सुव्रतजिनस्तवनम्

राग मांढ

थांने आईजि अनादी नींद जरा टुक जोवोतो मही-एचाल

श्रीमुनि सुव्रत जिनराज तणां गुणगावो तो सही (आंकडी) निज सरूप सुखदाइ सदा तुम ध्यावो तो सही। अध्यातम रूप अनूप भूप शिवपा-वोतो सही। श्री०॥ १॥ ए पुद्गल नूं रूप कूप म-तजावोतो मही। तुम छांडी विषय विकार मार दिल

ल्यावोतो मही। श्री० ॥२॥ कुमति कदाग्रह छोड मांड मथ आवो तो मही। ये नग भव दुलभ पाय कुपथ पुलावो तो सही। श्री० ॥ ३ ॥ लहि सामग्री मार टाग क्रम आवो तो सही। चरन ग्रही भावि वचन जचन फुरमावो तो सही। श्री० ॥ ४ ॥ उगणीसे पचपन मन सुध ठावो तोसही। कहे गुलाबचंद आ- नन्द अचल सुख पावोतो सही। श्री० ॥ ५ ॥

अथ २१ नमि जिनस्तवनम्

(धीठामें धोठा क्या विगा॰या तरा ण्देशी) १

चेतन सुखदाई नमिए नमि जिनराया निज गुण लिय ल्याई नमिए सुगुण सुहाया (आंकडी) कवण अछे तू किन, सग मोह्या रे जिया एम विचारो जी ध्यान धेय ओलखकर कम्गा अ- पनू काज सुधारो। चेतन ० ॥ १ ॥ द्रव्य थकी ए सास्वत जानो तीनकालरे मांयो। केवल दर्शन ज्ञांन अक्रेपिण कम्मा वरणाछिपायो। चे० ॥ २ ॥ भाव थकी तो कह्यो असास्वत पंचम अग मम्का- री। चेतन गुण नहि घटे वधे निल पलटै पज्जाय धा री। चे० ॥ ३ ॥ कुमति विडारी सुमति सुधा-

री जपोजाप जिनजीको । जीछै कारण करले सुध करणी पतिथा शिवरमणी को । चेतन ॥ ४ ॥ निज ध्येय ध्यांतां जिन गुण गातां सुख संपद हद पावैजी । नमिय नमो दुख गमो सर्वथा गुलाबचंद गुनगावै । चे० ॥ ५ ॥

अथ २२ नेमि जिनस्तवनम्

चाल ग़ज़ल

इम कहती राजुलनारी सखी मेरो नेमनाथ सुखकारी छवि लागत है अतिप्यारी भला सुभ रथतणी असवारी ए रथ तणी असवा री ॥ संग आएहै गिरधारी लख कोतल घोडा भारी लख को तल मिले सब जादव बंस उदारी । इम० ॥ १ ॥ लख पसुवन कर इकठारी भेर मिजमानी राय विचारी घपसांरा करण कूं त्यारी खिले वन बाग बगीचे सारी नेमी सर तोरण आए । जब पसु मिल शब्द सुनाये सुनि जिन वर करुणां ल्याये सुन तजी रथ फेर चले गिरनारी । इम० ॥ २ ॥ तब कृष्ण कहै सुन भाई । तेरे ये स्यों आई दिलभाई भाखे नेमीश्वर राई मेरे पशु जीव हमारे तांई नाहि परणी एह वी नारी वधू शिव वरस्यूं

सुध अपारी गिर सम धीरजता कीनी लहि केवल: शिव वर लीनी कहे गुलाब शशी सुख भीनी कहे । जाउ तसु चरण कमल वाले हारी । इम० ॥ ३ ॥

अथ २३ पार्श्वजिनस्तवनम्
राग लावणी

करे क्षणमाहि लोहको कंचन ते पारस जगमें काचो इक भवमें सुखियो थाय जिणीसुं तिणमें मति राचो तुम प्रभु पारस सांच पारस वचन सुधारस हितकारी तसु ओलख सरणू चरण गह्या सें करदे आप समों भारी । अपने मनकूं वश कर चेतन नमिये पारस सुखकारी । निज परगुन जानी हित आनी करले नाथ तणी यारी ॥ १ ॥ कल्पतरू जिम आशा पूरन चूरनकरम भरम अघकू । तम मेटन जैसें करे उद्योत रवी जगकू । सुण साहिब स्वाम सुधाम पाम आगम थयो हे अति तुम कूं । अब सादृश रूप भूप होनें की चाहलगी हमकूं अपने० ॥ २ ॥ थई संजमी तपस्या करता क्षायक श्रेणि चढी आवे । त्रणदशमें स्थाने नाण भलो के वल पावे अघातिक कर्म च्यार क्षय कीव येक

समय में शिव जावे। इम कहे गुनाव सिनाव उनीकूं सुख थावे। अपने० ॥ ३ ॥

अथ २४ महावीरजिनस्तवनम्

आज सुर इंद्र इंद्र वीर गुन गावता ॥ प्राणान्ति लोक भवन तिहांथी सुदेव च्यवन आय देवानन्दा उदर चतुर्दश दिखावता। आज० ॥ १ ॥ राय सिधारथ तात त्रिसलादेराणी मात अमर गरभ हरणा करी तास उदरे ल्यावता। आ० ॥ २ ॥ फाल्गुनी उत्तरा जांण जनम्यो सुदिन जगति मांन। रासि कंन्या हेम वरणों सकल दुःख गमावता। आ० ॥ ३ ॥ अथिर धार मन विचार आत्मसार संयमभार वारे वरस तेरा पक्ष तपथी अघ धूलावता। आ० ॥ ४ ॥ साल द्रुम हेठे आय भावनां सू सुद्धभाय केवल पाय जिनंदराय भविक कूं समझावता। आ० ॥५॥ हजार चोदै साहु वंस आरज्या छतीस सहंस सुवुधि वहुनांण जांण पूर्वधर उमावता। आ० ॥ ६ ॥ नृपति पावां पुर अरदास अरज है करो चौमास विन तडी चित मांन तीरथपाति ठावता आ० ॥ ७ ॥ कातिक वदी दीपमाल करस च्यार दू-

र ढालं रचवि छेत रयणा अर्थ गोत्तमे सिघावता आ० ॥ ८ ॥ उगनीसे पचपन जांन भलो दिवस खुसी मांन गुलावचन्द हरख धरी तवन कूं सुनावता । आ० ॥ ६ ॥

अथ २४ चतुर्विंशति जिनस्तवनम्
राग कालिगडा

प्रभुजी का शोभा वरणी न जाय मेरे प्र० एआकडी

उसभ आजेत समव अभिनंदन सुमति पद्म सुपाश्सराय । प्र० ॥ १ ॥ शशि प्रभ जिन पुनि सुविधिनाथजी शीतल श्रेयास सदा सुखदाय । प्र० ॥ २ ॥ वासुपूज्य श्री विमलनाथजी अनंत धर्म जगतारक साय । प्र० ॥ ३ ॥ शांतिकरण प्रभु शांतिनाथजी कुंथु अरि मल्लीदेव कहाय । प्र० ॥ ४ ॥ मुनि सुव्रत नमि नेमि पारस प्रभु श्रीवर्धमान चरम जिनराय प्र० ॥ ५ ॥ ए चोवीश जगत जयवंता एहतणां चरणां चितल्याय प्र० ॥ ६ ॥ श्रीभिक्षु गुरुमाल्ल गणाधिप राय शशी जयमघव कहाय प्र० ॥ ७ ॥ माणकलालतणें पट मोहे डाल गणी जिन जिग महाराय प्र० ॥ ८ ॥ चतु र्विं-

शिति तीरथ पति केरी करी स्तवनांये तासु सुप-साय प्र० ॥ ९ ॥ उगणीसै पचपन संवत मन्न ऋत वसंत भवि पिक हुलसाय। प्र० ॥ १० ॥ शुभ दिन सुभघडि शुभ पलजानों तादिन जिनका त व न व ना य ।प्र०॥ ११ ॥ निज बुधि माफक में गुनगाया प्रभु गुन केरा पारन पाया प्र० ॥ १२ ॥ कहत श्रावक धर्म प्रभावक गुलाबचंद आनंद अधिकाय प्र० । ॥ १३ ॥

अथ पंचपद स्मरणाम्।

दोहा

श्री उसभा दि जिनेश्वरा चउवीसे सुखदाय ।
वंदू वेकर जोड कै नित प्रति सीस नमाय ॥ १ ॥
चंद्रानन धुर चर्म फुन वारिषेण जिनराय ।
ऐरव क्षेत्र विषे थया नमूं नमूं हितलाय ॥ २ ॥
भरत पंच पुनि ऐरवय तेय विषे अवधार ।
चउवीसी थइजे सदा प्रणामूं अनंत अपार ॥३॥
बिदेह पंचमें जे विजय इक सय साठ विचार ।
थया जिनेश्वर तेह नमूं करण जोग सुध धार॥४॥

वर्त्तमान तीरथ पति विचरे अतिशय धार ॥
निर्मलगुण ज्ञानादि जे प्रणमूं वारं वार ॥ ५ ॥

ढाल ।

चेतन चेतोरे यह संसार असार (एदेशी)

जिनरायारे शरणातिहारे स्वाम ए विनती अवधारिये जिनरायारे जि० तुम गुण अधिक अमाम दुरगतिके दुख टारिये ॥ जि० ॥ १ ॥ भमतां भव भवमांहि मनुष जनम यह पावियो ॥ जि० पायो आरज देश उत्तम कुल वलि आवियो ॥ जि० ॥ २ ॥ सुणी आगे नांणी नीठ अवसर पय समा ॥ जि० धन धन है तुम्हनाण वाह वाह तुम्ह ने वर्णी खमा ॥ जि० ॥ ३ ॥ जिन ॥ तुम्ह आगामे धर्म अधरम आण वाहिर ॥ जि० वाणी गुण पं- तीस अतिशय चउतीस ताहिर ॥ जि० ॥ ४ ॥ द्वाद- शगुण श्रीकार छत्र चामर ओपे भला अजि ॥ अशोक वृक्ष उदार सुर जिम पूरण शशिकला जि० ॥ ५ ॥ द्वादश पर पद मांहि बेसी देशनां देवना ॥ जि० लोका लोक स्वभाव भावन सुर ना सेवना ॥ जि० ॥ ६ ॥ नहीं तुम्ह सुम्हणे फेर

अंतर ज्ञानें जांणियो ॥ जि० हुं करमांने केड़
हिव संवेग नित आंणियो ॥ जि० ॥ ७ ॥
जपतो थारो जाप तुम कहि जिम करणी करूं
जि० भव भवनां दुख काप ध्यान तुमारो नित
धरूं ॥ जि० ॥ ८ ॥ कारण कारज सिद्ध विन
कारण कारज नहीं ॥ जि० ते माटै निज सिद्ध
प्रकट करण सुमरण सही ॥ जि० ॥ ९ ॥ नि-
मित्त कारण हो आप उपादान निज आतमा ॥ जि०
करता पणौ सुथाप मोक्ष कार्य होय स्यात मां
जि० ॥ १० ॥ आज भलो सुविहाणां आज
कृतारथ हूं थयो ॥ जि० उदय भयो भल भांण
सुमरण सेती सुख लह्यो ॥ जि० ॥ ११ ॥

ढाल

केवला वरणी खय थयो प्रगट्यो केवल नां-
णो रे काल गये वर्त्तमान नूं आगमिया नूं जा-
णूं रे ॥ ज्ञान दरसण प्रणमूं सदा वारी चारित
तप सुख कंदो रे आतम गुण शिव पंथ ए वारी
आदरतां आनंदो रे ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥

दोहा

आदि अंत वेहू नही सकल स्वभाव अवर्ण ॥
सिद्ध नमू नित हित भणी कारज सिद्धी कर्ण ॥१॥
साहि अछेपिण अंत नहीं पाम्या पद निर्वाण ॥
करमा वरणी त्तय करी प्रगट वसू गुण जाण ॥ २ ॥
परमातम पद पावियो निरावर्ण निज रूप ॥
लोकअग्र शिव सुख लही आतम सपति भूप ॥३॥
त्रिक रण सुभ योगे करी प्रणमूं वारं वार
इण भव पर भव ने विषे सरणांरो आधार ॥ ४ ॥

ढाल

म्हारा प्रभुजी ओन्नभेडे मती खीजो (एदेशी ।

अत समें तुम योग निरोधी कर शैले शीकर्ण चोदश गुण स्थानक फरसी ने थयो चेतन निरावर्ण हो प्रभुजी आप तणों मोय शरणो भव भव पातक हरणो हो प्रभुजी ॥ आप० ॥ १ ॥ अ इ उ ऋ ऌ पंचाक्षर गुणतां जिती वार इतनी स्थिति में कर्मविनाशी एक समय गतिधार हो ॥ प्र० ॥ आ० ॥ २ ॥ ऊर्ध्वलोक लोकांते जइ ने जोतमे जोत प्रकाशी अजर अमर अक्षय निरुपाधी जन्म मरण दुख नाशी हो ॥ प्र० आ० ॥ ३ ॥ चरम शरीर तणी

अवगाहन तेहनां त्रण भाग जाणूं। आतम प्रदेश विमल संकोची दोय भाग परिमाणूं हो ॥ प्र० आ० ॥ ४ ॥ अतिशय एक तीस अति ओपै परम समाधी पामी ॥ कहां लग दरशासकूं गुण तारा अहो अहो अंतरजामी हो प्र० आ० ॥ ५ ॥ तीन कालनां सुर सुख कहिये अनंत वरांगना देइये॥ तेहथी अनंत गुणो अधिकेरा तुम सुख पाम्या कहिये हो ॥ आ० ॥ ६ ॥ तिलमां तेल है ज्यास अनादि करमां संग जिम जीवो ॥ घाणियांदिक चारित्र उपावै पामी मुक्ति अतीवहो प्र० आ० ॥ ७ ॥ धातू माटी अलग करणकूं कारण वन्ही धारो ॥ करणी करी सर्व संवरथी करमसुं कियो छुटकारो हो प्र आ० ॥८॥ पयमें घृत प्रत्यत्त न दीसें फूलमें अतर छिपायो॥ ज्यूं चेतन इण कर्म सघाते रह्यो ममत दुख पायोहो। प्र० आ० ॥९॥ आपतो कारज सिद्ध करीने अमरापुर अवतारिया। कामक्रोधवस जीव अज्ञानी चिहुगति माहे रडियाहो प्र० आ० ॥१०॥ जिन वांणी सुण रयण अमोलकहूं इण भवमे पायो। आदरव तुंत्र ने तुमसुमरण आनन्द हर्ष सवायो हो प्र० आ० ॥११॥

ढाल

वेदनी क्षय थइ तेह सँवारी आतमीक सुख पायाजी नाम क्षायकथी गुण वध्यो वारी भाव अमूर्तिक थायाजी ॥ज्ञान० ॥ १ ॥ गोत आऊ खोनासिया वारि अगुरु लघू सुखदायाजी अघ घटियां गुण परगट्यां वारि अटल अवगाहनगयाजी ॥ ज्ञान दर्शन प्रणमू सदा ॥ २ ॥

दोहा

पद तृतीय आचार्य गणी गुण पट तीस सुहाय ।
तासु चरण प्रणमूं सदा मन वच तन लय ल्याय ॥१॥
निरावरण रूपी रवि आंथमियां अंधियार ।
दीपक जिम गणि जोतिथी भवि जीवां उजियार ॥२॥
अष्ट संपदा जेहनी पट दश ओपम सार ।
च्यार प्रकारे संघनें मुनिपतिनूं आधार ॥ ३ ॥

ढाल

था पर वारि हो जिनजी आमेरियादेवल्में चन्मुहावणा होलाल एदेशी—

थांपर वारिहो सुगुरुजी गण वत्सल गण नायक स्वांम सुहावणां हो लाल ॥ (आंकडी)

श्री जिन आंग्या सहित सुध पालोजी अन्य समण समणीकूं भालोजी ॥ थांपै वारी दोष वैयालीस-टालो सभालो महांवयनीकाजी ॥ थां० ॥ १ ॥ तज परभाव स्वभाव में रमताजी सिख सिखणी से छांडी ममताजी थांपै आतमीक सुख गमता चावनां एकांत तिणारीजी ॥ थांपैं० ॥ २ ॥ अंग उपांगादिक सिज्झायाजी क्रोधादिक तज निज ध्येयें ध्यायाजी थांपै । शुक्ल भला ध्यन साय सदा तुम ध्यावतांजी ॥ थांपै० ॥ ३ ॥ पट धारी गछ थंभ सुहायो जी सासन प्रभुनो जवर जमायो जी थांपै मिथ्या तिमिर हटायो वधायो गण सुखदायो जी थांपैं० ॥ ४ ॥ नीत विमलथी पालो पलावो जी अज्ञा डोरो झाली झलावोजी । थांपैं० । सुलभ भवी समझावो वतावो मारग आछो जी ॥ थांपैं० ॥ ५ ॥ धन तुझ नांण दरसण चरितो जी पर ग्रंथि टाग ए तुझ वित्तोजी ॥ थांपैं० सहु जंतू पै हित्तो पीहर षटकायनांहो स्वांम ॥ थांपैं० ॥ ६ ॥ मुख पूरण शसि जिम हदनींकोजी पायो महीमें जसनूं टींकोजी ॥ थांपैं० हुं तुम मुक्ति नजीको तहतीको गणपतिनीकोजी ॥ थांपैं० ॥ ७ ॥ चेतन सत्र

लो निज गुण दरिया जी निर्मल नीर गुण। कर भरियोजी ॥ थांपै० करम पटल से टरियो उधरियो निज गुण भालीजी ॥ थांपै० ॥ ८ ॥ तपसी लघु सिख वृद्धनी सारोजी करतां असनांदिकनी संभारो जी ॥ थांपै० । मुनिजन नै आधारो जिहाज सम इण भवै हो स्वांम थांपैं० ॥ ६ ॥ पट दरसन जानी महमांनी जी गंगा जल जिम अमृत वाणीजी थांपै० ध्यांनी आतम ज्ञानी पोतानी ऋद्धि वखांणोजी ॥ थांपै० ॥ १० ॥ प्रणमूं वे कर जोडि गणींदाजी सरण तुमारो है सुखकंदोजी ॥ थांपै० मेटण अघ दल फंदा करूं तुझ उपासनां हो स्वांम ॥ थांपैं० ॥ ११ ॥

ढाल ।

मति श्रुति नांण तणां धणी वारी निर्मल बुध अधिकायोरे ॥ चउदे पूरव धारिका वारी जिन-जिम सोभ सयवायोरे ॥ ज्ञान दरसण प्रणमूं सदा-वारी चारित तप सुख केंदोरे ॥ आतम गुण शिव पंथ ए वारी आदग्तां आनंदो रे ॥ ज्ञान० ॥ १ ॥

दोहा

पद चतुर्थ सुमरूं सदा उवझाया अणगार ॥
पांचवीश गुण सहित जे ज्ञानै गुण भंडार ॥ १ ॥
वमी भोग संसारका जाणों जहर समांन ॥
आचारज पद योग है नमो नमो गुणखांन ॥ २ ॥
तत्वधार निर्णय करी भणै भणावै जेह ॥
सासनमांहि महामुनी टारै कर्म निरेह ॥ ३ ॥

राग आसाउरी में

मुनीश्वर स्मरण तुम्हांरो साचो । में तो पायो इण भव आछो (ए आकडी) सात नयें विसतार सहित जे चउ निक्षेप वखाणों । सास्वता सास्वत वस्तु बहु विद है तदूदृष्टांत ओखांणो हो ॥ मु० ॥२॥ स्याद वाद मारग प्रभू केरो तास प्रकाशक स्वामी भांगा सप्त थकी ओलखावें कुमति कदाग्रह वांमी हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ पांच ज्ञांननूं भेद सिखावे मति श्रुति अवधि विचारे । मन पर्जव केवल ए पांचूं तेहना दोय भेद धारो हो ॥ मु० ॥४॥ प्रत्यक्ष और परोक्षादिकनो सर्व भेद समझावे हित आणी उवझाय नमीजे सुंदर भावनां भावे मु०

मुक्ति निसाणी हो ॥ मु० ॥ ५ ॥ पाहण सम अ- बनीत समणकूं करदे रतन सरीसो ॥ वाह वाह स- क्ती एह तुम्हारी चरण नमाउं सीसो हो ॥ मु० ॥ ६ ॥ यह संसार सुपननी माया विजली ज्यों चमकारो ॥ डाभ अणी जलसो आऊपो भांपे स- भा मझारो हो ॥मु०॥ ७ ॥ चउगति भ्रमण करता जिवडो मान वरो भव पायो ॥ रत्न चितामणी खोय अज्ञानी पडयो नरकगति मांयो हो ॥मु० ॥ ८ ॥ वेदना दस परकार क्षेत्रनी दे परमधामी मारे ॥ मुदग रथी चूरण तनुकेरो दुर्गंध महा अधि यारो हो ॥ मु ।९। अधरम करियेह वा दुख पावै धर्मथी शिव पुरजावे इण विध दे उपदेस भविकक् फल शुभ अशुभ वतावे हो॥मु० ॥ १० ॥ कारमां सुख सुरनां मुनि जांणे पातिक अलघाटाले ते उवझाय नमीजे वलि वलि जिनसासन उजवाले हो ॥ मु० ॥ ११ ॥

ढाल ।

मोह करम पतलो करे धारी सरधा सांची भासेरे। गणी आगे मत्री सरा वारी भिन्न भिन्न भेद प्रकासे रे ज्ञान दरसण प्रणमू सदा धारी चारित्र- तप सुखकंदोरे आतमा गुण शिव पथ ए धारी आ-

दरतां आनंदोरे ॥ ज्ञान दर्शन प्रणमूं सदा ॥ १ ॥

दोहा

सकल साध अढि द्वीपमें उत्कृष्टा नव सैसकोड़ि।
विचैर मानू क्षेत्र में वंदू वे कर जोड़ ॥ १ ॥
भवसागर में डूबतां पर तिण झाझ समान ।
लेस्या सुध आलंबनै ध्यावै निरमल ध्यांन ॥ २ ॥

ढाल

इण सरवरि पारीपाल ऊभा दोय राजवी म्हारा लाल ऊभा दोय राजवी । एचाल।

संजम धरि मुनिराय सुधारे आतमां हो लाल सु (आंकड़ी) तन पूतलकूं जाणै छ सात धातमां हो । लाल सु०॥ १ ॥ महाव्रत पंचप्रकारकरण तीन जोग मां हो लाल ॥ सु० इर्यासुमति मझार चलै उपयोग मां हो लाल॥ चलै० ॥ २ ॥ तृण जिम सुख षट्‌ खंड तणां छिनमें तजे हो लाल तणां छिनमें ॥ जांणी विषनू भांड एक संजम सझैहो लाल॥ एक संज०॥ ३ ॥ सहस अठार शीलांग तणा धोरी भला हो लाल तणां धो ॥ नव-

विय ब्रम्ह व्रत मांहि सदा चढती कला हो लाल ॥ स० ॥ ४ ॥ तपस्या द्वादश भेद करंता हित भणी हो लाल ॥ क० देव कर्म ऊछेद नहीं चूके अणी हो लाल ॥ न० ॥ ५ ॥ गुरुनू विनय भरपूर व्यावचमें रक्त है हो लाल ॥ व्या० आमो सही पमुहा वहु लब्धीनी सक्ति है हो लाल ॥ ल० ॥ ६ ॥ एक इकज्ञांन वैराग तणी करै वारताहो लाल ॥ त० एक इक ध्यांन में मग्न रहै अघ टालता हो लाल ॥ रहै० ॥ ७ ॥ लोपै नहीं गुरुकार सुगुण हिरदै धरै हो लाल ॥ सु० अप्रतिबंध विहारे नव कल्पी करै हो लाल ॥ तेन० ॥ ८ ॥ गोपै मन वच काय भ्रमर वत गोचरी हो लाल ॥ अ० खमें परी सह वावीस परवाह नहीं लोचरी हो लाल ॥ पर० ॥ ९ ॥ पंचमां आरामांय भिक्षु गणि फाविया हो लाल ॥ भि० श्रद्धायथार्थ वताय भविक समझाविया हो लाल ॥ १० ॥ भ० च्यार जाति नां देव महामुनि सेवतां हो लाल ॥ ११ ॥ म० अधिष्ठायक इण सासनैरे वहु देवता हो लाल ॥ अनुरागी जिनधर्मी श्रावक श्राविकाहो लाल॥ श्रा० समद्रष्टी हलुकर्मी भवि शुभ भावका हो लाल ॥१२॥ तसु विपतासव

दूरकरै सुरसायता हो लाल ॥ क० पावै अूध भरपूर ए समरण गायता हो लाल ॥ एस० ॥ १३ ॥ मि त्तू पटधारी माल भद्रक गुण पाविया हो लाल ॥भ० समकित बोध पमाय अमरपुर जाविया हो लाल ॥ अ० ॥ १७ ॥ राय शशी सुखदाई तखत तीजै भलाहो लाल ॥ त० तूर्य पाट जयाचार्य थया नित निरमला हो लाल ॥ थ० ॥ १५ ॥ मघवा सम मघराज तणौ पट सोहतां हो लाल त० माणिक भवोदधि पाज भाविक मन मोहताहो लाल भ०॥१६॥ तसु पट जेम जिनेश अछै वर्तमानमें हो लाल येनामे डाल दिनेश अमी जसुवांणामें हो लाल ॥ अ० ॥ १७ ॥ रटता लाखों जीव एक तसु नांम नै हो लाल एक० काटता कर्म अतीव श्रद्धा सुध पामनै हो लाल अ० ॥१८॥संवत उगणीसे सार सतावन आवियो हो लाल ॥ जयपुर नगर मझार समरण ए ध्यावियो हो लाल ॥ १६ ॥ डाल गणी सूपसाद श्रावक मन भावियो हो लाल ॥ गुलावशशी सुखदाय आनंद हद पावियो हो लाल ॥२०॥ निज बुध माफक एह करी स्तवना भली हो सुख संपति हद लेहथइ अति रंग रली हो लाल ॥२१॥ पाप उद-

यजे विपाक दालिद्रादिकदुखमिटे ॥ उपसम रागन सोगजप्या सकटकट ॥ २२ ॥ सावण धर सुचिमास भलो दिन आवियो हो ॥ भलो पत्र पदागे जाप पंचमी दिन गादियोहो लाल ॥ २३ ॥ इति

अथ वीरसासनस्तुती ।

म्हानै घणोरे सुहावै थारो घाघरियो । एदेशी ।

म्हानै घणोरे सुहावै सासन वीरनो (आंकडी) कहि ए चतुम्मारग ए मोक्षनां तसू ओलखियां भव पाररे भलो सासण पावे ते नरा जाणो धन धन तस अव-ताररे॥म्हाने०॥१॥ ज्ञान दरसण चरण सू जांनिए करे निर्जरा कर्म वेधांणरे। प्रगटे आतम सत्ता एक-त्वता जांणे स्वपर वस्तु निज ठाणरे ॥ म्हानै ॥२॥ तोड्याकर्म च्यार घन घातिया गुण द्वादश धुर पा-दमायरे ॥ थया सकल कारज सिध तेहना वीजे पद अठगुण अधिकायरे ॥ म्हानै ॥३॥ करे सारण वार-ण चोयणा समपद वलि गुण पट् तीसरे ॥ आथै सूरज केवलि सारिसो सोभे दीपक जेम जगीम-रे म्हानै० ॥ ४ ॥ भणा द्वादस अगादि सूत्रको देवे

वाचना दान सुरंगरे ॥ चउथै उवझाय पद वंदिये त्यांरो निरमल नाण सुरंगरे ॥ म्हानै० ॥ ५ ॥ त्यावै भवर तणी पर गोचरी पालै महव्वय पंच प्रकारेरे जंतू करुणावंत मुनीसरा तपसी लब्धि तणा भंडाररे ॥६॥ प्रगट्या पंचम अरके महागुणी श्रीभिक्षू भवोदधि पाज रे ॥त्यार पाटै भारी माल जाणिये तीजेराय शशी गणराजरे॥ म्हानै ॥७॥ एतो जयगणी तुर्यपट जय करो तसु पट मघवा सुखदायरे॥ वलीपाट छठै माणक भला संपति दिन दिन अधिक अथाहरे॥म्हानै॥८॥ओपै पटधारी मुनि पटगणी हिवडा सदृश जेम जीणं दरे ॥ गणपतिडाल शशी गुण सागरूं ज्यांरो मुख पूनमको सो चंदरे ॥ म्हानै ॥९॥ करतां समरण पंचपरमेष्टिनो भागै संकट सर्व ततकालरे॥जपतां अशुभ कर्म दूरै टलै थावै आनंद मंगल मालरे म्हानै॥ १० ॥ एहो महामंत्रसुधजे जपै त्यारी सायकरै सुरसायरे ॥कहै गुलाबचंद सुख पामिये वले त्रिपतानै आत्र कोयरे॥ म्हानै ॥ ११ ॥

अथ स्तवनम्।

राग कालंगडामें ।

मेरा प्रभु चरणां चित लग रह्यारी मेरा० (आकडी) मोह मिथ्या तकी नींद उछट गई ज्ञांन-उजेरा जग रह्यारी ॥ मेरा० ॥ १ ॥ स्वपर विचार धार सुध सरधा प्रवचन रंगे रंग रह्यारी ॥ मेरा० ॥ २ ॥ कुमति कदाग्रह छोड़ मोड़ मद रतनत्रय के संग रह्यारी ॥ मेरा० ॥ ३ ॥ आतम रूप भूप घट अतर शुद्ध स्वरूपे रमरह्यारी ॥ मेरा० ॥ ४ ॥ गुलाबचद आनंद भयो अब सब दुख दूरै भग गयारी ॥ मेरा ॥ ५ ॥

राग भैरवी ।

चाल गज़ल की ।

मोतिया बेला चमेली दा बनाया सेरा । एचाल

आयो सरनें राजेर मोये आधार तेरा (आ०) आगे तुम हमारे संग भव भवमे अनेक रंग अब तुम नाथ भय मैंहूं दास तेरा ॥ आयो० ॥ १ ॥ आपहो करमां रहित हमहैं करमों सहित काटें गे

कर्म तभी होवेंगे जैसे तेरा॥ आ० ॥ २ ॥ मुझमें अनंत नांण करमां वरणसें छिपांन विन कारण कारज नहीं ताते ध्यांन तेरा॥ आ० ॥ ३ ॥ सांचेंहै तिहारी वांण अहिंसा में धर्म मांन कुगुरु कुपंथ छांड़ लिया पंथ तेरा॥ आ० ॥ ४ ॥ मिटतहैं दुखों केदंद कटतहैं कर्म फंद कहै गुलाब अति आनंद नाम लेत तेरा ॥ आ० ॥ ५ ॥

ढाल

संहल्यो मिल पूजन चालोंनें गनगोर (एचाल)

प्रभूजी थांसु प्रीति लगीजी महाराज(आंकड़ी) भ्रमण कीयो बहुकाल लगे अब सबही सुधरसी काज ॥ प्र० ॥ १ ॥ संजमधारी उग्रविहारी मिलिया छ भवो दधिपाजजी ॥ प्र० ॥ २ ॥ करम भरम वश बहु मद छाकियो नहिं कीयो धरमनूं साज ॥ प्र० ॥ ३ ॥ अब तुमसेती प्रीति लगाई आप गरीबनिवाज ॥ प्र० ॥ ४ ॥ ज्ञान दरसण निज है पर पुद्गल जाणलियो में आज ॥ प्र०॥५॥ परपरणति उच्छेद खेद तज भज निज भाव समाज॥ प्र० ॥ ६ ॥ गुलाबचंद आनंद शरणमें तुम त्रिभु-

भुवन-शिरताज ॥ प्र० ॥ ७ ॥

पुनःस्तवनम्

डोलेरे जुवन मदमाती गुजरिया डोलेरे (ए चाल)

सुनेरे सुग्यानी जिया श्रीजिन वानी सुनेरे ए(आंकडी)थारीरे प्यारी अनादिकालकी ये कुमती दूती अभिमानी ॥ सु० ॥ १ ॥ जो सुख चाहै अविचल अक्षय तो तू अब तज खोटी वानी ॥ सु० ॥ २ ॥ समझ कहा अब मांन सुगुरुका सुमति धार कर आतम ध्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ तू है कौन मोह्या तू किन संग क्यू खोया अफला भवप्राणी ॥ सु० ॥ ४ ॥ इम जाणी प्रभु सुमरण करतां कहै गुलाव पावै शिवरानी ॥ सु० ॥ ५ ॥

सुन सुनरी सखी हमारी मोय नेमपियाने विसारी (ए चाल)

तुम त्रिभुवन पति भगवाना अब किरपा मोपै ल्याना । जल वचनामृत वरसाना ॥ तुम० ॥ १ ॥ इन करमूं संग लुभाया पुद्गल ले रूप वनाया मोह मद कुकिया अनजाना ॥ तुम ० ॥ २ ॥ कुमती सग काल गमाया अब शरण तिहारे आया में वालक हूं नादाना ॥ तुम ० ॥ ३ ॥ नव तत्व

भेद सु जान्यूं जिन मेरे मन तू मान्यूं ॥ कहे गुलाब-शशी हुलसाना ॥ तुम ० ॥ ४ ॥

सुविधि जिन स्तवनम् ।

मूंगा तोय ले मूंगी मजना (ए देशी)

मुक्ति सहेली का साहिब (ए आंकड़ी) तुम स्वेत वरण तनु सोहे सुर नर मोहे रे साहिब ॥ सु० जल पय जैसें जानूं पुष्प चमेलीके साहिब ॥ मुक्ति ० ॥ १ ॥ सुबुधि भई तुम नामें शिवगति पामें रे साहिब अजर अमर सुख ज्यांमें अविचल ठामें रे साहिब ॥ मु० ॥ २ ॥ करता गरजी अरजी कीजे मरजी रे साहिब गुलाब शशी हरखायो गुन तुम गायोरे साहिब ॥ मुक्ति० ॥ ३ ॥

महाराजा पूछोन जोगनका हाल (ए चाल)

महाराजा अरज सुनो सुखकार उतारो सही संसार सें पार ॥ १ ॥ श्रीजिनराज जगत हित-कार गुणी गुणधारी गुणोपमसार ॥ महा ० ॥ २ ॥ भम्यो भवोदधि बिन्न करमांके लार मिल्यो अब ये मानव अवतार ॥ महा० ॥ ३ ॥ दयालू दयानि-धि तुह्मो सिरकार कृपानाथ अपनूं बिरुद समाल ॥

महा० ॥ ४ ॥ तेरो सरन है तेरो ही आधार कियो व्रतधारी सुगुरु अंगीकार ॥ महा० ॥ ५ ॥ जीव अजीवादि तत्व विचार समकित बोध तणां दातार ॥ महा० ॥ ६ ॥ मन वच तन शुभ योग उदार करत गुलावशशी नमस्कार ॥ महा० ॥ ७ ॥

वकवूजीरे नीमडली लाडी ना पगला धोतीरे सैणांरी घाटा जोतीरे वकवूजी वाला सण (एचाल)

जिनवरजी रे थारारे चरणांरो मैंछूं दासेरे तुम वचनामृतको प्यासेरे घणी खमां तुम वचनामृतको प्यासेरे जिनवरजी मोरा स्वांम ॥ १ ॥ जिनवरजीरे थांरी रे सेवासूं शिवगति पामेरे घणी खमां ए अजर अमर सुख ज्यांमें रे जिनवरजी मोरा ॥ स्वांम ॥ २ ॥ जिनवरजी रे ये भवसागर सेती पार उतारेरे तुम अपनूं विडद संभारेरे घणीखमां एवीनतड़ी अवधारोरे जिनवरजी मोरा स्वांम० ॥३॥ जिनवरजीरे थांराहो दरसण पे जाउं वारी रे घणीखमां तुम सूरतनी बलिहारी रे तुम मुद्रा मोहनगारी रे जिनवरजी मोरा स्वांम० ॥ ४ ॥ जिनवरजी रे चूंप धरीनें सुगुरु तुम गुण गावेरे घणी खमां तेरस-

नां सहस वणावैरे ते तोही पारन पावै रे जिनवर-जी मोरा स्वांम० ॥ ५ ॥ जिनवरजीरे थारा रे गु-ण गावतां मन हरखायेरे घणी खमां निज गुण से-ती लय ल्यायेरे कहै गुलाबशशी हुलसायो रे जि-नवरजी मोरा स्वांम० ॥ ६ ॥

राग ठुमरी

तुमसे ज्यो प्रीतलगी सो खरी जिन नांहि करी उनै नांहि करीरे (एश्रांकडी) सवं दुख भं-जन जन मन रंजन भंजन चेतन ध्यान धरीरे तुम ॥ १ ॥ सुखके दाता त्रिभुवन त्राता राता जग जस सिद्धि वरीरे ॥ तुम० ॥ २ ॥ तन मन वच-न जचन भज आतम म्हातम प्रभु संसार तरीरे ॥ तुम० ॥ ३ ॥ तुम नांमै शिव संपति पामें ज्या-में कोई नहिं वात टरीरे॥तुम०॥४॥गुलाबचंद आन-द हद पायो धन्य दिवश धन एह घडी रे ॥ तुम० ॥ ५॥

पुनः महावीरस्तवनम् ।

कडीबलकी कडी तूंमडी सब तीरथकर आईरे (एचाल)

आज आनंद वधाई थाई आज आनद व: धाई रे (ए आंकडी) श्रीवर्धमान जगतके स्वामी त्रिशलानद सुहाया रे। ओलख स्वपरगुन नव तत्व सासन तेरो पायोरे ॥ आज आनंद० ॥ १ ॥ सुनी तुम वांणी मे सत जाणी मनमानी हुलसायेरे ॥ तुम्ह आणा मे धरम तिहारो आदि अन्तमें वायोरे ॥ आज० ॥ २ ॥ सुध करणी वरणी अघ हरणी तरणी भव जल मांह्योरे ॥ द्वादश व्रत गह्यो दुख भज्यो, सुगुरु तणे सुपसायेरे ॥ आज० ॥ ३ ॥ पद अंगुष्ठ थकी इक छणमें सुरगिर तैं कंपायेरे ॥ वीर नही महावीर जगतमे एहो नाम कहायेरे ॥ आज० ॥ ४ ॥ छांड अनेरो वान्यो तेरो मारग महा सुखदायेरे ॥ गुलावचद कहे हरख धरीने सरणे,ते रे आयोरे ॥ आज० ॥ ५ ॥

जिन सुनिये अरज हमारी आयो शरण तुमारी रे जिन सुनिये (एआंकडी) करम-विडारी टारी तम अघसारी वारी प्रगट कियो उजियारी निरमल वांनी गुनखानी वरसानी पानी जैसे उमग घटा कारीरे ॥ जिन-सुनिये० ॥ १ ॥ चपलस्वभावी तावी चमकत विजुरी स्याद वाद सुखकारी ॥ द्रग्स निहारी

केइ चरन सुधारी जेइ थावे उग्रविहारी रे ॥ जिन०॥२॥ अधिक बधाई थाई सासनसूं तेरो पाई कुमति कुदेव विसारी भादो धुर एकादसी कहत गुलाब शशि पायो हर्ष अपारी रे ॥ जिन सु० ॥ ३ ॥

रागआसावरी ।

भविका जिन आणां धर्म धारो येतो मानों कह्यो हमारो रे ॥ भविका जिन० (एआंकड़ी) श्रीतीरथ पति धर्मधुरंधर जगवत्सल सुखकारो । अनंत ज्ञान दरशन गुण चारित्र तसूं कीजे नमस्कारो रे ॥ भविका जिन० ॥ १ ॥ सरधा ज्ञानानंत चारित तप मोक्ष मार्ग ए च्यारो ॥ श्रीजिन आणां में चिहुं मिलिया उत्तराधेन अधिकारोरे ॥ भवि० ॥ २ ॥ संवर नें वलि निरजरारे धर्म ए दोय प्रकारो ॥ एभल रीत आराध्यां चेतन पामें भवनों पारोरे ॥ भवि० ॥ ३ ॥ पंचमहाव्रत साधू केग श्रावक ना व्रतवारो ॥ जिन आणामैं ए बिहुं आया अवरित रहगइ न्यारो रे ॥ भवि० ॥ ४ ॥ सर्व व्रतधारी संजाति कहिये अविरत असंजय धारो ॥ बरता बरती समणो पा संगते

ब्रत जिन आंग्या मझारोरे ॥ भवि० ॥ ५ ॥ सु-
ज आणां में म्हारो धर्मछे आचारंग अधिकारो ॥
चर्म प्रमेश्वर वीर जिनेश्वर भापगया तत सारो रे
॥ भवि० ॥ ६ ॥ तेह धर्मनां दोय भेदछै दसवें
कालिक मझारो ॥ अहिन्सा है जिण किरतव मैं
तहां संजम तपसारोरे ॥ भवि० ॥७ ॥ सुगरा सी-
स पण थेहिज दीनी, आगम रैस विचारो ॥ आल-
स मति करज्यो आज्ञा में उद्यम आज्ञा वारोरे ॥ भ-
वि० ॥ ८ ॥ करन करावन वलि अनुमोदन ती-
न भेद ये मारो ॥ श्रीजिन आज्ञा सिरधारी जे, तब
होवे निस्तारोरे ॥ भवि० ॥ ९ ॥ निरवद
कारज मांही आज्ञा जिनजी दे इकधारो ॥ सा-
वद मांही आज्ञा न जाणूं नहि सदेह लगारोरे ॥ भवि
का० ॥ १० केइ आज्ञामें पाप बतावै धरम जिनआ-
ज्ञा वारो ॥ दोन्युं वातां अशुद्ध प्ररूपै ते किम पामें
भवपारो रे ॥ भविका० ॥ ११ ॥ श्रीजिन मतका साधु
वाजे भाषे बिना विचारो ॥ आज्ञा मांही पाप वता-
वे त्यांरै महा अंधियारोरे ॥ भविका० ॥ १२ ॥ पूरी
समझ पडे नहीं तो शुद्ध जपो नवकारो ॥ गुणवन्तों
का गुण गायांसू अशुभ करमसब टारोरे ॥ भविका०

॥ १३ ॥ गुणगावो पांचों पद केरा इणथी कर्म-बिड़ारो ॥ आज्ञा बाहर धर्म कहीने पर भव मतना बिगारो रे ॥ भविका० ॥ १४ ॥ उगणीसे चउपन वैसाखे सुक्काष्टमी भोमवारो ॥ गुलाबचंद आनंद अति पायो श्रीजयनगर मझारो रे ॥ भविका० ॥ १५ ॥

राग विहाग में ।

तजो तुम कुमती जनका संग (एआंकडी) कुमती जनको संगतजीने सुमती संग प्रसंग । जिन वचनां रचना सुध धारी पालो आंण अभंग ॥ त० ॥ १ ॥ समकित रतन जतन से राखो जैसे मजीठ नूं रंग ॥ सुध साधूजन कों नित वंदो करत करमसे जंग ॥ त० ॥ २ ॥ यह संसार सुपनकी माया जैसे रंग पतंग ॥ बिखरजात बादर ज्यूँ छिन में ऐसो है यह अंग ॥ ते० ॥ ३ ॥ झूंटी काया क्यूँ मुरझाया आय जमाया ढंग ॥ चेतो चेतन सुकृत करल्यो वक्त रह्या है तंग ॥ त० ॥ ४ ॥ श्रीजिनराज जगत के स्वामी ज्ञान निर्मल जिम गंग ॥ गुलाबचंद भल जाणा तणों चित आनंद हरख उमंग ॥ तजो० ॥ ५ ॥

राग उभाभ में ।

ए सुध मग सांचो मूल मतजाय (एआंकडी) दान सील तप भाव ये च्यारो शिवपुर केरोराह । झूटो पंथ छांड अब प्राणी ज्यो आतम सुखचाह ॥ सुध० ॥ १ ॥ दांन सुपातर दोहिले रे भाख्योश्री-जिनराय ॥ चित वित पात्र तीन सुध मिलिया मन वांछित फलपाय ॥ सुध० ॥ २ ॥ चित सुध दाता नूं भलोरे वित सुध वस्तु कहाय ॥ पात्र सुसाधू जानियेरे जे नहणे षट्काय ॥ सुध० ॥ ३ ॥ देतां दाता दांन सुपातर संचित कर्म हटाय ॥ उत्कृष्ठो रस आवियांरे तीर्थंकर पदपाय ॥ सुध० ॥ ४ ॥ चउथै ठाणे आखियो रे पचम उदे मे मांय ॥कुपात्रते कुक्षेत्र छेरे वोयां निरफल थाय ॥ सुध० ॥ ५ ॥ असजती अव्रतीनेरे सूत्र भगवती मांहि ॥ सचित अचित फासू अफासू दीधां पाप बंधाय ॥ सुध० ॥ ६ ॥ आनंद श्रावक लियो अभिग्रह उपासक दशा कहाय ॥ अन्य तिथी नें आजथीरे देवूं दिवावूं नांहि ॥ सुध० ॥ ७ ॥ मृगा लोढाने देखीनेरे गौतम जिनपे आय ॥ पूछे स्यूं दीधो ये पूर्वे तेहना ये फलपाय ॥ सुध० ॥ ८ ॥

प्रसंसे सावद्द दांनने रे घातीक ते षट्काय ॥ सुगडांगे इग्यारम अध्ययने वीसमी गाथा मांहि ॥ सुध० ॥ ९ ॥ पुनः पंचम अध्यनमेंरे वतीसमी जेगाह । देतां लेतां सावज दानूं मुनिन कहै हांनाह । सुध० ॥१०॥ भ्रमणा हेतु संसारनूंरे गृहस्थ भणी जेदान ॥ देवोत्याग्यो मुनिवरूरे सुयगड़ा अंगैजाण ॥ सुध० ॥ ११ ॥ वलि प्राछित चउमास नूंरे अनुमोद्यां सु आय । निसीथपनरमें उद्देसै श्री जिन भाष्यो ताहि ॥ सुध० ॥ १२ ॥ श्रावक नूं जे खाणूं पीणूं अव्रतमे छै एह ॥ सूत्र सुगडांगे दूजे श्रुतस्कंधे द्वितीय अध्ययन विषेह ॥ सुध० ॥ १३ ॥ भाव सस्त्र अव्रत कह्योरे ठाणांग दशमें ठांण ॥ तेह सस्त्र तीखो करियांथी धर्म पुन्य मतजाण ॥ सुध० ॥ १४ ॥ खाणां पीणां पहरणारे त्यागा थी हुय धर्म ॥ भोग्यां भोगायां वलि अनुमोद्यां बंधे अशुभ अघकर्म ॥ सुध० ॥ १५ ॥ साता दीयां साता हुवेरे ये अन्य तिरथी कहंत । सुयगडांग श्री जिनभाख्यो ते सुणज्यो विरतंत ॥ सुध० ॥ १६ ॥ न्यारो आरज मार्गथीरे अलगो समाधिथी जाण ॥ धर्मतणी निंदानूं करता जेह बंधे इमबांण ॥ सुध० ॥ १७ ॥ अल्पसुखारे वास्तेरे बहुतरो हारणहार । अमो खरो कार-

गा अंछेरे भाख्यो श्रीजगतार॥ सुध० ॥ १८ ॥ लोह वाणिक जिम झूरसीरे तेह परु पणाहार ॥ तिणसूं जिन मग उलखोरे ज्यूंहोवै निस्तार ॥ सुध० ॥ १६ ॥ पात्र कुपात्रें आंतरोरे सरिखो फल नहिं थाय ॥ आम भरोसे वायां धतूरो आम किहाथी खाय ॥ सुध० ॥२०॥ दांन सुपात्रें दीजियेरे देकरमतपउमाय । गुलाब कहे धन तेनरारे सिध गतिमां ते जाय । सुध० । २१ ।

आज नंदन वन जोगी आयो जोगीको,रूपमवायो है माय आज न०॥ एदेशी ॥

अे संजम जीतव मत कोई वंछो वरज्यो श्रीजिनरायोरे लो (एआंकडी)जीवणूं मरणूंनांहि वंछणूं ठाणांग दशम मांहिरे लो ॥ पुनःसुगडांगदस अध्ययने गाथा चौवीसमी ताह्योरे लो ॥ अे० ॥ १ ॥ अण आदर देतां मुनि विचेर श्रीसुगडांगे मांयोरे लो ।असँजम जीतवना अरथीते वाल अज्ञानी कहायोरे लो ॥ अे० ॥ २ ॥ सॅजम जीतव कह्यो दोहिलो असॅजम जीतव नांयोरे लो ॥ वार अनत पायो भव भव में गरज सरी नहि कायोरेलो ॥ अे० ॥ ३ ॥ ससारिक जीनानूं जीवणं वंछ्या धर्म-

न थायोरे लो ॥ रागी देख्यां राग ऊपजै द्वेसीसे द्वेष सवायोरे लो श्रै० ॥ ४ ॥ वंछै मरणूं जीवणूंरे राग द्वेस कहवायोरे लो ॥ राग ते दशमूं द्वेश इग्यारमूं भगवंत पाप बतायोरे ॥ श्रै० ॥ ५ ॥ मिथिला नगरी अगन सूं बलती देखि नमी ऋषरायोरे लो ॥ सामूं न जोयो करुणां न आंणी उत्तराध्ययनै मायों रे लो ॥ श्रै० ॥ ६ ॥ सूत्र निसीथ द्वादश उद्देसे पाठ विखें ये वायोरे लो ॥ त्रस जीव देखी अनुकंपा कर बांधै बंधावै सरायोरे लो ॥ श्रै० ॥ ७ ॥ अथवा बंधिया देख जीवां प्रतें करुणां मन मुनिल्यायो रे लो ॥ छोडै छुडावै वलि अनुमोदै तो चोमासी चरित जायो रेलो ॥ श्रै० ॥ ८ ॥ चुलनी प्रिया श्रावक मोटो पोसामें सुखदायोरे लो ॥ पुत्र तीन मुख आगल मरता देखी नाहि छुडायोरे लो ॥ श्रै० ॥ ९ ॥ माता मरती देख पोसामें उठ्यो छुडावण कामोरे लो ॥ भांगो पोसो बरत नियम सब उपासक दशामें आमूंरे लो ॥ श्रै० ॥ १० ॥ चंपा नगर तणां व्योपारी जहाज भर समुद्रमां जावेरे लो ॥ एक देव तब करण परीक्षा ते अवसर तिहा आवेरेलो ॥ श्रै० ॥ ११ ॥ अरणक

श्रावक बैठो तिणमें देव कही समझायोरे लो ॥ लोक सहित ये नाव डुबोऊंमान हमारी वायोरे लो॥ श्रे० ॥ १२ ॥ डिगायो डिगियो नाही अरणक करुणां मोहन ल्यायोरे लो ॥ उपसर्ग दूर कियो· तव निर्जर सुरेंद्र तास सरायोरे लो ॥ श्रे० ॥ ॥ १३ ॥ इत्यादिक वहु सूत्रे आख्यो स्नेह राग दुख-दायोरे लो ॥ तिणसे राग द्वेष तज चेतन ज्यों शि· व सुखनी चायोरे लो ॥ श्रे० ए संसार अगाध थकी निर वंछित तिरणू परायोरे लो ॥ गुलाव क· है वन ते नर जाणो रागरु द्वेष खपायोरे लो ॥ १५ ॥

आवत मेरी गलियनमें गिरिधारी (एचाल)

करो तुम दया धरम सुखकारी यातें जलादि होय · निस्तारी ॥(एआंकडी)पृथिवी अप तेज वायु वनस्प ति त्रसजीव अनत अपारी॥ये पटकाय हणूमत को- ई जिन आगम अविकारी ॥ करो० ॥ १ ॥ कहि पर पास,हणावो मतिने हणतां हुयां शतिसारी। भलो मतजांण पिछाण मरमये त्रहु योगे सुविचारी। करो· ॥ २ ॥ पंचकाय में जीव असंख्या भाख्या श्रीजग तारी ॥ संख्य असख्य अनत वनस्पति सका मे आ· णु लगारी ॥ क० ॥ ३ ॥ गोतम पूछ्यो पंचम अंगे

पृथवी हाथ मझारी । लेतां वेदन कितनी होवै जिन कहे दृष्टांत उदारी । क० ॥ ४॥ एक पुरुष कोई जन्मनूं आंधो पगहीण चीण कायासारी ॥ जन्मनूं बहिरो जन्मनूं गूंगो तनमें रोग अपारी ॥ क० ॥ ५ ॥ तरुण पुरुष तसु खडग भाले कर छेदै भेदै क्रोधधारी ॥ वेदन होवै अंध पुरुषने छेद्यां भेद्यां तिण वारी ॥ क० ॥ ६ ॥ तिणसूं अधिक कष्ट पृथवीने लेतां हस्त मझारी ॥ इम थावर पांचाकू वेदन जोवो आंख उघारी ॥क० ॥ ७ ॥ निगोद जमीकंद बनसपती का सुनिये येह अधिकारी ॥ अग्र सुई पे आवे जिण मैं श्रेण असंख्य कह्यारी ॥ क० ॥ ८ ॥ येक इक श्रेणमें प्रतर असंख्या प्रतर येक मझारी ॥ गोला असंख हैं येक इक गोलें शरीर असंख्य रह्यारी ॥ क० ॥ ९ ॥ येक शरीर में जीव अनंता कहित न आवे पारी ॥ इम जाणी हिन्सा नाहि करिए जिन धर्म मर्म बिचारी ॥ क० ॥ १० ॥ धुर आश्रव धुर पापनों स्थानक दुरगति दुःख दातारी ॥ आरंभ छांडि दया दिल धरिए जिम यामो भव पारी ॥ क०॥ ११ ॥ हिन्सा किया मैं धर्म न किमपी आगम मांहि सुनारी ॥ पंचेंद्री पोख्यां पुन्य नो नांहि

संचारी ॥ १२ ॥ देवल पड़िमा करे करावे प्रथवी काय विडारी॥ कह्यो अहेत अवोध नों कारण धुर अंगे जगतारी ॥ क० ॥ १३ ॥ जंतू हणे धर्म हेत मंदमति दोपन गिणे लिगारी ॥ येह अनारज वचन कह्यो जिन आचारंग संभारी ॥ क० ॥ १४ ॥ इम जाणी पर्म धर्म ए करीये अहिन्सा सुखकारी ॥ गुलावचंद कहे धन्य सुध साध्र चरन कमल वलिहारी ॥ क ॥ १५ ॥

अथ द्वादस वर्तालोयन ॥

दोहा ।

श्री अरिहंतादिक सहु पाचूं पद सुखकार ॥
मन वचनें काया करी करु तस्र नमस्कार ॥ १ ॥

अरिहत सिद्ध साहू वले केवली भापित धर्म ॥
ए चारू शरणां थकी पामे शिव सुख पर्म ॥ २ ॥

श्रावकव्रतधारक भला हितकारक वले जेह ॥
केवली भापित धर्ममें राखे नहि सदेह ॥ ३ ॥

लिया बरत पाले बले श्रीजिनमतिसूं प्यार ॥
उप सग थी चल चित नहीं लोपेनहीं गुरुकार ॥ ४ ॥

कर्म योग थी किण समे लागे दोख तिंवार ॥
गुरु मुख प्रार्श्चित लेइ कर डंडकरे अंगीकार ॥ ५ ॥

आलवणां सूधे मने करे हमेसां सार ॥
पखी चोमासी दीने चूके नहीं लिगार ॥ ६ ॥

पर्व संवत्सर मोटको ते दिन तो अवस्यमेव ॥
चौभियारी उपवास करि धर्म ध्यान से नेह ॥ ७ ॥

चोरासी लख योनि सें बारं बार खमाय ॥
बिसेस काम पाडियो हुवे तसू नाम लेवणो ताय ॥ ८ ॥

आराधक पद पावियां रुले नहीं बहुकाल ॥
मोटो लाभ इण सम नहीं जिन आगम में निहाल ॥ ६ ॥

ते बारे बरतां तणी करूं आलंवणा सार ॥
चित्त लगाइ सांभल्या पामें भवनो पार ॥ १० ॥

ढाल ।

बेदक जग बीरला (एदशी)

श्री जिन धर्म मांहीं जेरासिया त्यारे देव गुरू दिल

वसियारे श्रावक गुण रसिया ॥ हाड़ वले जेह हाड-
नी मींजी धर्मथकी रहे भीजीरे ॥ श्रा० ॥ १ ॥ कुगुरु
कुदेव नी बांछे न सेवा धीर वीर गुन गेहवारे ॥ श्रा०
धर्म में दृढ रहे नित मेवा अडिग है सुर गिर जे-
हवारे ॥ श्रा० ॥ २ ॥ ब्रत पच खाण सुधा जे पा-
ले निंज आतम उजवाले रे ॥ श्रा० अतिक्रम
व्यातिक्रम नाहि संभाले अतिचार अणाचार टा-
लेरे ॥ श्रा० ॥ ३ ॥ कर्म जोग दोष लागे किवा
रे दंड करे अंगीकाररे ॥ श्रा० ॥ वेहु टक आलंवणा
लेवै पक्षी दिन तो अवस्य मेवर ॥ श्रा० ॥ ४ ॥
चोमासी नहि चूके लिगार सुध परिणाम सुवि-
चाररे ॥ पर्व संवत्सर आवे जिवां रे पोषद अष्ट प-
हुर धाररे ॥ श्रा० ॥ ५ ॥ ध्यान करी शुभ भावना
भावे लख चोरासी योनि खमावे परमाद छांडी नि-
ज धे ध्यावे आराधक पद पावे रे ॥ श्रा० ॥ ६ ॥
भाति संसारी फुन हलुकरमी जगवलभ प्रिय धर्मी
ब्रतालोयण किम करत उदार आखूते अविकाररे ॥
॥ श्रा० ॥ ७ ॥ सम कित रतन जतन थी राखे न
हुवे दुख शिव सुख चाखैरे ॥ जिम कर्दम थी पंक
ज न्यारो वसे तिम संसारमझारेरे ॥ श्रा० ॥ ८ ॥

लूखे परिणाम वसे घरवासा राखे छांड़णारी आ-
सारे ॥ इण भव पर भवमें सुख पावे ढाल प्रथम
ए गावेंरे ॥ ६ ॥

दोहा ।

रतन त्रय में राचिया जिन आगम ना जांन ॥
धार अर्थ भंडार भरि अडिग है मेरु समान ॥ १ ॥
संका कंखा दूर करि भय सब दूर निवार ॥
राखैजिन वच आसता प्रतत्त प्रमाण विचार॥ २ ॥

अरिहंत मोटकाए (एदेशी)

समकित सुध मन आदरुए अरिहंतछे मुज देवके
गाउं गुन जेहनां ए सांचे मन करु सेव समकित
आदरुंए ॥ १ ॥ (एआंकड़ी) ते कर्म रूप
अरिजन हन्यांए रोक्याछे पापनां द्वारके ॥ राग द्वेष
खप करिए निज गुन प्रगटउदारके ॥ गा० ॥ २ ॥
लोकालोकनी वस्तु नाए जांण रह्या सर्व भाव
के ॥ जिन नाम करम थी ए अतिशय अधिक अ-
थायके। गा०॥ ३ ॥ नर सुर इन्द्रादि क सहूए नरपातिसा
रे सेवके कहूं गुन किहांलगैए मोटा प्रभू देवापति देवके

सुध साधू गुरु म्हांयरे ए पंच सुमति मे हुसि
यार के ॥ महा वय पंच पालता ए तीन गुपति
मन धारके एहवा गुरु म्हायरे ए ॥ ५ ॥ च्यार
कषाय निवार ने ए पाले छे ते रे बोल के ॥ परि
सह सहिण में ए सुर गिर जेम अडोल के ॥ गा०॥
॥ ६ ॥ धर्म जिनेश्वर भाखियो ए अहिंसा सुख-
कारके ॥ वलिजिन आंणमे ए न होवे पाप
लिगार के धर्म सुध आदरूं ए ॥ ७ ॥ वरत
मे धर्म जाणूं खरो ए अविरत अनरथ मूल के ॥
दया अनुकंपा भली ए धर्म थी छे अनुकूल
के ॥ ८ ॥ करुणा मोह स्नेहनी ए कीया पाप
सुजान के ॥ अविरत सेवाइयां ए अधर्म कह्यो
जग भान के ॥ ध० ॥ ६ ॥ कुगुरू कुदेव कुधर्म न
ए वो सराउ इण वारके ॥ यथा सक्ति आदरू ए
व्रत पचखाण उदार के ॥ ध० ॥ १० ॥ गुण गाऊ
गुणवंतना ए सुध जपूं नवकारके ॥ दूजी ढाल
भाखता ए सुख साता थई छे अपारके ॥ ध० ॥ ११ ॥

दोहा ।

समकित सांची एहवी पाई इण भव माहिं ॥
ते भव २ नहिं वीसरु सुगण गुणो हित ल्याय ॥ १ ॥

कर्म योग कुसंग थी दोष लग्यो हुवे ताहि ॥
मन वच काया थी करूं आलवणा सुखदाय ॥ २ ॥

ढाल ।

चोपांईनी देशी ॥

श्री जिनवर बच्चन उदार ॥ सांचा सरध्यान हुवे किणा बार ॥ तसु राखी नहीं परतीत ॥ रुचि या नहीं हुवे सुवदीत ॥ १ ॥ अक्षर दीर्घ लघु बोलतां ॥ आलस करि अर्थ खोलतां ॥ पद हीण कह्यां हुवे कोय ॥ लेउं मिच्छा मीदोकड़ सोय ॥ २ ॥ ज्ञाननों विनय नहिं कीनो ॥ मिथ्या बचन सांचो मान लीनो ॥ कीधी ज्ञान आसातना कोय ॥ थावो मिथ्या मींदोकड़ मोय ॥ ३ ॥ भाजन विन ज्ञान भणायो ॥ सांचो अरथ भूंठो दरसायो ॥ सुत्र विरुध परूपणां कीधी ॥ लेऊं आलवणा तसू सीधी ॥ ४ ॥ पाखंडिया रा बचन सुहाया ॥ सुत्रामें गपोड़ा बताया ॥ संका पाड़ी हुवे दूजार ॥ लेऊं मीच्छा मीदोकड़ सार ॥ ५ ॥ व्याख्यानादि करम्हांय ॥ सुणतां रे दीनी अंतराय ॥ क्रोध बस थी त्रिविध प्रकारे ॥ भाषा बोली विना विचारे ॥ ६ ॥

कुगुरु कुदेवां री तांण ॥ परसंसा करी हुवे जाण ॥ वले सासता परि चा मे रक्त॥ करी हुवे तिहारी भक्त. ॥ ७ ॥ जीवा जीव अजीव नें जीव ॥ धर्म अधर्मा धर्म अतीव ॥ साहु असाहु साहुने साध ॥ मारग कुमार्ग इम हिज लाध ॥ ८ ॥ मोक्ष वाला-ने अमोक्ष गयो ॥ हांसी स्वपर वसथी कहियो ॥ ए सर्व बोलांरो सोय ॥ थावो मिछामी दोकडं माय ॥ ६ ॥ पच प्रमोष्टिनां गुन गाउ ॥ सांची सरधूं दूजाने सरधाउं ॥ ह्मारे शिव सुखनी हद थाय ॥ तिहां जावण रो करूं छू उपाय ॥ १० ॥ मोह कर्म पतलो नित करस्यूं ॥ भव सागर पार उतरस्यूं ॥ तीजीढाल कहि अति चग ॥ थयो आनंद हरख उमग ॥ ११ ॥

दोहा ।

पंच मगा ब्रत अति भला गुगा ब्रत त्रण अवधार ॥
च्उ सिख्या ए द्वादसूं ब्रत ह्मारे सुख कार ॥ १ ॥
लेउं तस आलोयगा आराधक पद हेत ॥
लख चोंरासी नहीं रूलू सूत्रतगो सकेत ॥ २ ॥

ढाल ।

किरपण दीन अनाथण(एदेशी)

पहिलो त्र्रणुव्रत एमए स्थूल जीव मारणारा नेमए ॥ बे इंद्रियादिक न जाणए बिन अपराधीरा पचखाणए ॥ १ ॥ मरियाद उपरांते तेहए चोखा पाल्यां न हुवे जेहए ॥ अतिक्रम व्यतिक्रम धार ए अतीचार अने अणाचारए ॥ २ ॥ त्रस जीवांरे बाध्या बंधए करिया हुवे दुखना फंदए ॥ अतिभार घाल्या हुवे ताहिए चामडी छेदन किया जाहिए ॥ ३ ॥ भात पाणी नाव छेवा भाणए दीधा हुवे दिवसे कीणीए देवरु धर्म अर्थ जाणए हणिया होवे तस पाणए ॥ ४ ॥ प्रथवी अपाति उवाउ कायए बनसपति एथावर कायए ॥ देव गुरु धर्म अर्थ मारए धर्म सरध्यो हुवे किणा बाररे ॥ ५ ॥ निज बस परबस जोयए परना उपदेस थी होयए छउ कायारा घमसाणए कीधा होवे जांणा जांणए ॥ ६ ॥ ए सब गोलांरो मोयए त्रबदे २ अब लोयए ॥ थावो मिछामी दोकडं तासए आलोउं निन्दु जासए ॥ ७ ॥ स्त्री पुरष नो व्यावए तिण बेल्यां कह्यो अन्याय ए ॥ भैंस गाय हाल्यादिकनो दूधए थोडो घणों कह्यो असूधए ॥ ८ ॥ उघाडी भी भोम पीणए हाट हवेली बाग दुकान ए ॥ लेतां बेचतां भाखी कुडए कह्यो लोभ तणे बस बूडए ॥ ६ ॥ तिणासूं मिथ्या दुक्कत लेयए

पाप ठांखा दुर करेह ए ॥ इच्छा रुंधणा सारए देउं अशुभ कर्म सब टारए ॥ १० ॥ चोथी टाल रसाल ए सुणाता थावे मगल मालए ॥ धर्म कियां दुप द्रए होवे सुखमै सुख भरपूरए ॥ ११ ॥

दोहा

श्रीजिन धर्म प्रसादथी कुसल हुवे दुख जाय ॥
रिधि सम्पति पावे घणी वांछित कारजथाय ॥ १ ॥

अडिग रहु ते धर्ममें पालूं वरत रसाल ॥
कर्म जोग किण अवसरे भग थई हुवे पाल ॥ २ ॥

लेउं आलवणा सही रही धर्म में लीन ॥
गुरु सिक्षा हिरदय धरी थाउँ अती प्रवीन ॥ ३ ॥

ढाल

मन्यकोई मांत राखज्यो (एदेसी)

वरता लोयण में, करूं सुध परिणांमे होई रे भोला बालक नीपरेम्हां री आतमां लेउं धो ई रे ॥ व० (ए आंकडी) ॥१॥ आल कूंटा किण जीवरे दिया हुवे किण वारेरे ॥ ज्ञानी बात परकासनें कीयो होवे

किणारे विगारोरे ॥ लेउं मिच्छामीदोकड़ंतेहनो ॥ २ ॥ लेख भूंटा लिखाया हुवे परदाह दीधी हुवे ताह्यो रे ॥ राज पंचा मुख आगले भूंटी गवाई कह वायो रे ॥ ले० ॥ ३ ॥ थांपण मूसा जो किया मिरषा बोली हुवे बायोरे ॥ हांस कितोलादिक करी पुनः लोभ तणोवस आयोरे ॥ ले० ॥ ४ ॥ चोर तणीं पर चोरियां तालो तोड वदीतोरे ॥ पड़ कूंचियादि कारण चोरसूं करी हुवे प्रीतोरे ॥ ले० ॥ ५ ॥ साजदीयो हुवे तेहने वले राज विरुध व्योपारोरे ॥ अदल बदल कोई बस्तु न करी हुवे किणाबारेरे ॥ ले० ॥ ६ ॥ चोखी बस्तु दिखायने बस्तु निकमी आपीरे ॥ लोभ तणों बस आयने भूंटा नापणां नापीरे ॥ ले० ॥ ७ ॥ देव मनुष तिरयंच थी देवगणां संग होई रे ॥ मनुषणी अने तिरयंचणी खोटी निजरांजोई रे ॥ ले० ॥ ८ ॥ मरियाद उपरान्ति तेहसूं कुसील सेयो रक्त होई रे ॥ हस्त करमादिक जोगसूं पाप लागो हुवे कोईरे ॥ ले० ॥ ९ ॥ विन परणी अस्त्री थकी कुसीलादिक अभिलाखीरे ॥ तीव्र परिणामें सेविया माठी निजरां भांकीरे ॥ ले० ॥ १० ॥ खेतू वथू हिरण

सुवर्णनें धन धानादिक म्हांयोरे॥ कुम्भी धात द्व चोपद घणां मरियाद उपरांति वधायो रे॥ ले० ॥ ११॥ पचमी ढाल कही भली पंचाणू व्रत अधिकारो रे॥ आलवणां करतां थकी पायो सुख अपारो रे॥ ले० ॥ १२॥

दोहा

गुण वर्त छे त्रण म्हांयरे यथासक्ति परिमाण ॥
दोषलाग्यो हुवे तेहमें आलंवण तसू जाण ॥ १ ॥

तम्बोली नां पान जिम बारवार संभाल ॥
करतां आतम ऊजली प्रगट थाय गुणमाल ॥ २ ॥

चौसित्ता सित्ता समा आदरिया गुरु पास ॥
दोषण लाग्यो किणसमे आलवणां करू ताम ॥ ३ ॥

ढाल

भोला भर्म मैं क्यों भम्यो (ए देशी)

दिसि मरियाद थकी कदा आगे जड पाप कीनारे। उंची नीची तिरछी दिसि मझे कम वेसी गिण लीनारे ॥ लेउं मिछामी दोकड तेहनो ॥ १ ॥

सचित अचित दरब जीमियां गहिणां वसत्र स-
वायो रे ॥ एक अनेक वेल्यां कोई आधिको भोग
में आयोरे ॥ ले० ॥ २ ॥ पंदरा करमां धान से-
विया वले अनेरा पासे रे ॥ मन बचने काया करी
अनुमोद्यां हुवे जासेरे ॥ ले० ॥ ३ ॥ कथा क-
ही कंद्र्प्पणी भंड कुचेष्टा कीधीरे ॥ विन अरथ पा-
पारंभ किया मांस भख्यां मद पीधीरे ॥ ले० ॥ ४ ॥
सामायक में किणा समें हांस कतुल अशायो रे॥ बिन
जायां बिन पूंजियां तन वं चलता सवायोरे ॥ ले०
॥ ५ ॥ आयां विगर पारी हुवे भासा सावज बोली
रे ॥ संसारिक कारज मझे मननी लगाई ओलीरे॥
॥ ले० ॥ ६ ॥ सामायक मारियाद थी ओछी करी
होवे ताह्यो रे ॥ देव गुरु धर्म तीननो आविनामें
चित्त ल्यायो रे ॥ ले० ॥ ७ ॥ देसा वगासी जे
वरतछे ते नहीं सेयो सेवायोरे ॥ बस्तु आमी सामी
बारली आपो पुद्गल सब्दं जणायो रे ॥ ले० ॥ ८ ॥
पोषद करतां किणा समें सेया सावज कामां रे ॥ विन
जोया बिन पूंजियां फिरिया आमां न सामां रे ॥ ले०
॥ ९ ॥ आचार पास अने भोमका उपग्रण से ज्यां-
संथारो रे ॥पडिलेहणा न कीधी हुवे निन्दा विकथाथी

प्यारो रे ॥ ले ॥ १० ॥ सुध साधू निर्ग्रंथने अप्रिय वचन ज भाख्यो रे ॥ हेला निन्दा कीनी तेहनी आल अछतो दाख्यो रे ॥ ले० ॥ ११ ॥ चौदे प्रकार नो दानजो असुजतादिक दीधो रे ॥ स्व परवस किण अवसरे साधूरे काज कीधो रे ॥ ले० ॥ १२ ॥ मेल फासू वस्तु सचित पर वले सचित थी ढांके रे ॥ अण गमनो आहार साधूने मांडाणी करि नाख्यो रे ॥ले० ॥ १३ ॥ भांणौ वैस पुनि राजनी भावना नही भाई रे ॥ दान आलस थी नाहि दियो सुध मिलियां जोग वाई रे ॥ ले० ॥ १४ ॥ एद्वादस बरतां तणीं आलंवणा करि सीधी रे ॥ जिन सिध साध साखथी आतम निरमल कीधी रे ॥ ए छटी ढाल कही भली ॥ ले० ॥ १५ ॥

दोहा

अविरत थी ग्रहस्थाश्रमे अनेक पाप उतपन्न ॥
आरंभ परिग्रह छांडिस्यूं ते दिन थासे धन्य ॥ १ ॥

भव अनंतामें किया इण ससार मभ्कार ॥
स्वपर अरथ कुकर्म अति तसु मिथ्या दुकड सार ॥२॥
जीव असंजाति तेहनो जीवतव्यछ्ये होय ॥

मरणो पण बांध्यों हुवे मिथ्या दुकत मोय ॥ ३ ॥

एह लोक पर लोकनी करि आसा बंछाजेह ॥
पुनि निज मरणोंजीवणो तसू मिछा दोकडं लेह ॥४॥

अभिलाखा काम भोगनी कीधी अधिक अपार ॥
तस ठाणस आलोयणा आंज लगे सुविचार ॥५॥

ढाल

श्रीनेम कहे सांभल मुनी (एदेसी)

श्रीजिसवर जग हित करु तसुमीठी हो वांणी अमिय समान ॥ आतिसय पण तीस जेहनी सुणतां गुणंता हो त्रपति जीभ कान॥ धन २ ज्ञान जिनंदनो (आंकडी) ॥१॥ ते भिन्न २ जीव अजीव नांभाव भाख्या हो श्री सिधान्ति मझार॥ जाण पणों जग दोहिलो समकित पायां हो उतरे भवपार॥ ध० ॥ २ ॥ आंण मैं धर्म कह्यो भलो आणां बारे हो अधर्म दुख दाय सावज योग बरतावियां पाप लगे हो पुन्य नाहि बंधाय ॥ ध० ॥ ३ ॥ निरवद योग थी पुन्य बंधे ते तो जाणों हो श्रीजिन आणा म्हाय॥ कर्म झडे जब जीवरे पुन्य पुदगल हो

सहजैं लागे आय ॥ ध० ॥ ४ ॥ ते पुन्य थ-
की सुर पद लहे मनुष्य गति मै हो थावे साता
सोय ॥ ते वार अनंती पाविया इण सुखमे हो सार
में जाणों कोय ॥ ध० ॥ ५ ॥ जीव तणां निज
गुण भला ज्ञान दर्शणादि हो अक्षय अविनास ॥
निरमल स्फटिक रतन जिसा कर्म सगथी हो मइ-
ला हुया जास ॥ ध० ॥ ६ ॥ राग द्वेस वस थाय
नें आतमानें हो लगावे खोड़॥ निज घरनीजे साहिबी
ते भूली हो परघरनीहोड़ ॥ ध० ॥ ७ ॥ जिम को-
ई मदिरा पान थी गहिलो थाय हो गालियांदिक मै जाय
अशुच जगां माहि लोटतो स्व घरनी हो तेहने
खबर न काय ॥ ध० ॥ ८ ॥ कोइ स्याणा पुरुष
कहै तेहने तो तिणन हो देवे गालियां अथाय ॥ ति-
म चेतन मोहकर्म थी पुदगल मै हो सुख माने अ-
थाय ॥ ध० ॥ ९ ॥ नींव तणां जेह पानडा वि-
प पर गमिया हो मीठा अमिय समान॥ बहुल कर-
मी जीवां भणी प्यारा लागेहो काम भोगादि जान॥
ध० ॥ १० ॥ काम भोग सल्य सारखा भवि छांडो
हो ए जिन जीरी वांणा धर्म कियां दुख उप समें
सातमी ढालहो सुणए चतुर सुजान ॥ ध० ॥११॥

दोहा

तीन मनोरथ चिंतवे श्रावक गुन भंडार ॥
कर्म निरजरा अति करे पामे शिव सुख सार ॥१॥

आरंभादिक बहु करे स्वपर अर्थ अवधार ॥
पण तेहने छांडण तणों दिल राखे सुविचार ॥२॥

भावे रूडी भावना ध्यावे निरमल ध्यान ॥
गावे गुण गुणवंतना सुध राखे सरध्यान ॥ ३ ॥

ढाल

नीबड़ली हो नाह निवार (ए देशी)

श्री तीरथ पति इम उपदिसे मति हण-
ज्यो हो छऊं कायनां जीव के ॥ अनेरा पास में ह-
णावज्यो अनुमोद्यां हो लागे पाप अतीव के
भव जीवां राखो सुध सर्धनां (ए आंकड़ी) ॥ १॥
भोजन विविध प्रकारना आरंभ कियां हो नि-
पजे छै तायके ॥ छऊं कायारी हिन्सा हुवे ते
भोगवियां हो किंचित धर्म न थायके ॥ भ०
॥ २ ॥ ज्यो खाणां पीणां मैं धर्म हुवे तौ ते

त्यागां हो हुवे पाप पडूर के ॥ वले दूजाने त्याग करावियां अनुमोद्यां हो लागे अघ भरपूर ॥ भ० ॥ ३ ॥ सर्वव्रती साधू भला तेह टाली हो बाकी संसारी जीवके ॥ खाणों पीणों त्यांरे पहिरणो सब अविरत में हो जाणो दुरगति नीवके ॥ भ० ॥ ४ ॥ सावज खोटा जांण ने मुनि त्याग्या हो काम भोगादि सोयके ॥ ते सावज अरथे कियां तिण मांहिहो धर्म पुन्य किम होय ॥ भ० ॥ ५ ॥ इम हिज भषा बोलिया बोलाव्यांहो अनुमोदियां एक के ॥ अदत मइथुन सेवियां सेवायांहो हुवे वरत में छेकके ॥ भ० ॥ ६ ॥ बले पचमो आश्रव परिगरो ते राख्यां हो पाप लागे छै सोय के ॥ ते दूजाने दियां दिवरावियां भलो जाण्यां हो मत जाणो धर्म कोय ॥ भ० ॥ ७ ॥ ये श्री जिननी परूपणां विरला जाणे हो इण बातरो मर्म के ॥ व्रत अविरत जे ओलख्यो तिणने वलभहो श्रीजिनजीरो धर्म ॥ भ० ॥ ८ ॥ ज्यो त्याग किया में धर्म छै तो भोगावियां हो अशुभ कर्म बंधाय के ॥ दूजाने भोगायां अनुमोद्यां त्रहु करणां हो एक सरीखा थाय के ॥ भ०

॥ ९ ॥ कहै साता दीयां साता हुवे ते नहीं जाणिहो जिणधर्मरी बातके ॥ धर्म अधर्म न ओलख्यो त्यांरे घटमैं हो बसियो घोर मिथ्यात ॥ भ० ॥१०॥ श्री सुयगडायंग सूत्रमें तिणने मूरख हो भाख्यो श्रीजगभाण के ॥ आरज मारग सूं अलगो कह्यो इम इत्यादिक हो षट बोल पिछाण के ॥ भ० ॥ ११ ॥ दुखरो दाता परिगरो पोते राख्यो हो जाणों अनरथ खाणके॥अनेरा नेदेय रखावियाअनुमोद्यां हो तिहु सरीखा जानके ॥भ० ॥१२॥ एह आरंभ नें परिगरो छांड़ियाहो लहे शिव सुखसारके ॥ दुख पामें नांहिं सर्वथा मति राखो हो तिणमैं संदेह लिगारके ॥ भ० ॥ १३ ॥ ढाल कही ए आठमी तुम सुणज्यो हो भविक नरनारके ॥ धर्म कियां सुख पामिए तिण कारण हो म करो ढील लिगार के ॥ भ० ॥ १४ ॥

दोहा

तन धन जोबन कारमो बादर जेम बिलाय ॥
देखो दिन कर तेहनी तीन अवस्था थाय ॥ १ ॥
डाब अणी जल बिंदनो जीतव जाणो तेम ॥

तिण सूं उत्तम नर नारियां राखो धर्म सू प्रेम ॥२॥

ढाल

श्रेयास जिनेश्वर प्रणमू नित नेकर जोडरे (ए चाल)

तज बिभाव निज भावमां रमिए नर चतुर सुजाण रे ॥ निज आतम में गुण घणां मत परगुणमे सुख जाणरे॥मनि॥श्र०॥श्रावक गुण आहिका करो धर्म सदा सुखकार रे ॥ १ ॥ अनंत ज्ञान दर्शण भला वले चारित वीर्य अपाररे ॥ ए निज गुण हे थांहिरा जरा अतर ज्ञान विचाररे ॥ २ ॥ असुभ कर्म थी आतमा मयली होयरही अति जासरे ॥ सुध परिणाम सु ल्यायने परगट करिये गुण खास रे ॥प॥ श्रा० ॥३॥ मनुष जनम दुर्लभ लह्यो आरज खेतर पुन्य प्रमाण रे ॥ उत्तम कुल आय ऊपनो पायो आयु शुभ दीर्घ जांणरे ॥प॥श्रा०॥४॥ वल प्राक्रम इंद्रियां तणो मीलियो सतगुरुनो योगरे ॥ तो पण धर्म करे नहीं एहवो मूरख मूढ अयोग रे॥ए॥ श्रा० ॥५॥ इम जाणी सुध निरमलो पालो संयम सतेर पकार रे ॥ च्यार कषाय निवारने उतरो भवसागर पारे ॥

श्रा० ॥ ६ ॥ जो साध पणो नहिं ग्रह सको तो श्रावकना व्रत बाररे ॥ निर अतिचार पालिया जिम नेड़ा शिव सुखसाररे ॥ श्रा० ॥ ७ ॥ त्याग वैराग बधाविए करिए उत्तम साधूनीं सेवरे ॥ निन्द्रा विकथा परिहरो छांड़ो क्षुद्र भाव अहमेव रे ॥ श्रा० ॥ ८ ॥ मति करो धननो गारवो पायो वार अनत अपार रे ॥ सुख दुख बहुला पाविया राखो चित में समता साररे ॥ श्रा० ॥ ९ ॥ धर्म अपूर्व पावियो मीली जोग वाई सुध आयरे ॥ तो ढील करो कांई कारणे रात दिवस ये योंही जायरे ॥ श्रा० १० ॥ रोग जरा जह लग नहीं पाणी पहिलां थी बांधो पाजरे ॥ मित्र स्नेही जो आपणां देवो त्याने धर्म नों साजरे ॥ श्रा० ॥ ११ ॥ धर्म करंता जीव ने मति पड़ो तिणारे अंतरायरे ॥ फल कडुवा तेहना घणा पावे भव २ दुःख अथाय रे ॥ श्रा० ॥ १२ ॥ इम जाणी गुण वंतना गावो-गुण छैज तेह मांयरे ॥ नवमी ढाल कही भली धर्म करसी ते नहीं पिछतायरे ॥ श्रा० ॥ १३ ॥

दोहा

सामायक पोसह करे धरे धर्म नो ध्यान ॥

समता रस में झूलता धन २ ते गुणवान ॥ १ ॥

कुविमन तज भगवत भज राग द्वेप सब टार ॥
स्व आतम मे गुणघणां करिए उज्वल सार ॥२॥

ढाल

पनामारु निरखण दे गणगोर (ए दशा)

सुभ परिणाम वले शुभ लेस्यां प्रसस्य भला अद्वव साय ॥ अहनिश धर्म ध्यान दिल धरतां कर्म पटल खय थाय ॥ कर्म पटल खय थाय सुगण जन॥क॥ जीथांरो आतम गुण प्रगटाय ॥सु॥ जपिये श्रनिवकार ॥ सु० ॥ १ ॥ निज पर भाव विलोक यथारथ सरध दर्व पटकाय ॥ आरंभ छोड तोड अघघाती शिव गति नेड़ी थाय ॥ सु० ॥ २ ॥ मत्सर भाव तजी नित तूंतो गुण वंतना गुणगाय ॥ गिनाता सूत्र विखे जिन भाख्यो गोत तीर्थ कर वंधाय ॥ सु० ॥३॥ श्री जिनसासण पचमें अर्के भिक्षु गणी सुखदाय ॥ विविद मर्याद वादिगण वत्सल मिथ्या तिमर हटाय ॥ सु० ॥ ४ ॥ द्वितिय पाट गुरु माल गणाधिप त्रतीय

पाट रिषिराय ॥ तुर्य जया चार्य महा प्रभाविक लाखां ग्रंथ बणाय ॥ सु० ॥ ५॥ मघवा सम मघ राज पंचमें तस पट माणिक कहाय ॥ धीर वीर गंभीर गुणोंसे दियो मार्ग दीपाय ॥ सु० ॥ ६ ॥ तेहने पाटे वर्तमानमें शोभत जिम जिनराय ॥ मुनि पट मुनि पति डाल गणी स्वर प्रणम्यां पातक जाय सु० ॥ ७ ॥ ए जिन सासण सुखनो बासण ए गणने गणिराय ॥ अहर्निश सेवा करले भविक जन मत कर अवरनी चाय ॥ सु० ॥ ८ ॥ इण सासण में रक्त रहे त्यारी करत सदा सुर साय॥ रिधि व्रधि थाय दुख मिट जावे बिघन न होवे कांय ॥ सु० ॥ ९॥ च्यार तीरथ सुख धाम स्वाम मुज श्रीश्री डाल गणिराय ॥ तसू पर सादे गुलाब कहे मुज आनंद हर्क सवाय ॥ सु० ॥ १० ॥ संम्बत उगणीसे इकसट में द्वुतिए जेष्ठ कहिवाय ॥ ए आलवणां कही जय नगरे सप्तमी दिन सुखदाय ॥ सु० ॥ ११ ॥

अथ सुगुरु गुणा का कक्का ।

दोहा ।

तरण तारण जिन जग गुरु प्रणमूं श्रीनाभेय ।
सुखकारी निस्नेह पणों जगभ्राता जगदेव ॥ १ ॥
अस्वसेन नन्दन नमूं तेवीसमा प्रभू पास ।
त्रसलादे राणी तणा सुत वर्धमान प्रकास ॥ २ ॥
श्रीभिक्षु गणिराज कूं सुमरूं सुव चितल्याय ।
सद्गुरु गुण संग्रह करी कक्को कहूं वनाय ॥ ३ ॥

येक माली ने बाग बणाया गैद हजारा फूलोंदा (एचाल)

कहे कक्का करले तू सेवा सद्गुरु की अति सुखकारी । करम काट शिव पदकूं वरले अजर अमर पद हितकारी ॥ कर सेवा निग्रंथ गुरुकी मान कह्या सुख पावेगा । लोभी गुरु कूं छांडि चिदानंद आवागमन मिट जावेगा (ए आंकडी) ॥ १ ॥ ख ख्खा कहे कह्या मान हमारा नहि ऐसा जगमे जारी श्रीभिक्षु गण पाके यारो मति करो और तणीं यारी ॥ कर० ॥ २ ॥ ग ग्गा कहे गुरुकी संगति को करत सदा ज्यो चित ल्याई । बोल दसो प्रगटे शिव पामे

श्रीजिन मुखसे फुरमाई ॥ करि० ॥ ३ ॥ घघ्घा कहै घन जिम गुरु बरषित वांणी। अमरत जल धारा। तत्वबोध अंकूरा हुलसे सुख दिल मोर भवि प्यारा ॥ करि० ॥ ४ ॥ नन्ना कहै नमतां मुनिजन को अशुभ कर्म सबही टाले। पुन बंधे अरू कर्म खपावे शिव पामें संजम पाले ॥ करि० ॥ ५ ॥ चच्चा कहै चरनों में मस्तक धरले येक बार भाइ। शुभ भावों से मुनिजन सेव्यां कमी रहत हैं कछू नाहीं ॥ करि० ॥ ६ ॥ छछा कहै छिन छिन हिरदय में सुगुरु ध्यान तू राख सदा। रयन दिवस भजले गण इस्वर व्याधि सोग न आवे कदा ॥ करि० ॥ ७ ॥ जज्जा कहै जपले जगतारक ताते तेरा होत भला। क्रम क्रम गणीं गुण गाय सुधारस जिम सशि थावे चड़ती कला ॥ करि० ॥ ८ ॥ झझ्झा कहै झट दे माति तड़के त्तमा राखरे भवि प्राणी। जिन बचनों दी राखो आस्था मती करो खेचा ताणीं ॥ करि० ॥ ९ ॥ ञञ्ञा कहै अब येही सरध ले जिन आणां में धर्म गणीं। आणां बारे काम संसारी कारण छै ते पाप तणों ॥ करि० ॥ १० ॥ टट्टा कहै टलतो रहे अघ से राग द्वेप कूं पतला करो। जीव अनन्ता मरे जगति

में जिसके फंद में नाहिं परो ॥ करि० ॥ ११ ॥ ठठा कहे ठसका ज्यो राखे जयणा मात्र जीवों की करो। छवों कायको मतिना मारो श्रीजिनमारग राह खरो ॥ करि० ॥ १२ ॥ डडा कहै डरज्यो रे साजन इन करमों की गति भारी। बड़े बडे जोधार जीनी को इनने नहीं दीनी वारी ॥ करि ॥ १३ ॥ ढढा कहे ढबजेरे साजन जोस जोबन बयके मांही। क्रोधमान मायादिक तजिये अनरथ करी जे मति भाई ॥ करि० ॥१४॥ णाणा कहे णाणा झणणाणा झणणा ताल मृदंग राग गावे। अहिन्सा मुख से केह तो तब हिन्सा थी शिव कहां पावे ॥ करि० ॥१५॥ तत्ता कहे तत्ता थेइ ताथेइ नाच कूद क्यों कूटे मही। ध्यान परमेस्वर शुध मन करले जग वल्लभ जिन एम कही ॥करि०॥ १६ ॥ थथ्था कहे थके क्यों फोकट उछल उछल विन भाव तभी। भावे जिन भजलेरे भइया वांछित कारज थाय सभी ॥करि०॥ १७ ॥ दद्दा कहे दया हिरदय में अहो निशि राखिजे वाही। छवोंकायकों अभय दान दे यह करुणा आज्ञा मांही ॥ करि० ॥ १८ ॥ धध्या कहे धन धन मुनिवर को नव कोटी पच खाण किया। अनुकंपा अरथे इण भव

में खटकाया कों अभय दिया ॥ करि० ॥ १९ ॥ नन्ना कहे नर भव तूं पाके दान सुपातर जोग जुड़े। तव स्व हाथ थकी प्रति लाभो परधन देखी मती कुढ़े ॥ करि० ॥ २० ॥ पप्पा कहे पग पग के अंतर जयणां कीजे जीव तणी। सुध पालीजे संजम लेइये क धारा गणी आंण भणी ॥ करि० ॥ २१ ॥ फफ्फा कहे फरमावे गणीते तहत वचन सर धर लीजे। टालो कर निन्दक अण्यानीं तेह थकी वचतो रहीजे ॥ करि० ॥ २२ ॥ वबा कहे बलिहारी उनकी कुटम्ब छांड़ि के चरन गहे। स्नेह राग परचा परि हर के श्री गणपति के संग रहे ॥ करि० ॥ २३ भम्भा कहे भल रवि ते प्रकटता दिन गणी के दरिश मिले। धन धन जे नर चरन गही ने श्री जिन सासन मांहि भिले ॥ करि० ॥ २४ ॥ मम्मा कहे मत करो इसी तुम टालो करके मांहि रले। रतन पाय के नांहि बिसारो ऊंचा चढ़ि मति पड़ो तले ॥ करि० ॥ २५ ॥ यय्या कहे यह जिन फुरमाई आणा बारे जेह टले। तिणमें संजम नांहि सरधजे घर घर फिरतो करे कले ॥ करि० ॥ २६ ॥ ररा कहे रणमें जिम छत्री कबहुन पाछा पैर धरे। तिम सूरो रहे कर्म काटवा जब परिसह नों काम

परे ॥ क० ॥ २७ ॥ लल्ला कहे लह लीन रहीजे गणीं गुण एक चित्त धारी गुण वतो के गुण गायां से तिरथंकर पद लहे भारी ॥ क० ॥ २८ ॥ वव्वा कहे वही शिव पद पामें नव तत्व का पिछाण करे जाण यथार्थ करले सुध करणी रोग सोग दुख दूर टरे ॥ क० ॥ २६ ॥ सस्सा कहे समकित विन प्राणी वार अनंन्ती किरया करी ताते सुध सरधी संवर थी कर्म मुक्ति पद पाय खरी ॥ क० ॥ ३० ॥ षष्पा कहे पट मतिको जानी पटता छांडि के धर्म करो गुण गावो पांचु पद केरा निन्दा विकथा दूर हरो क० ॥ ३१ ॥ शश्शा कहे शब्द दार्थ जाणी आगम रेस में लीन रहो गहिन अर्थ में समजो नहीं तो केवलियाने भोलादिवो ॥ क० ॥ ३२ ॥ हहा कहे हणीऐ नहीं चेतन अपना जीव जीसो जानो अपणो तनमें कष्ट पड़े तो कायम रहो खरा मानो ॥ क० ॥ ३३ ॥ इम निसुणी सुगुरजन केरी सेवा कर ल्यो अहो निसा ओर कांम में धन लागत है इन में नहिं लागे पईसा क० ॥ ३४ ॥ उगणी से त्रेपन वरषों में चैत्र कृष्ण द्वितिया आयो रात्री वेलों आनंद मांही गुलाब चंद कहो गायों ॥ क० ॥ ३५ ॥

जिनदर्शनमहिमास्तवन



लगे दोय नैन चीरे वालेसे ॥ (एचाल)

लगी मोय चाह जिन वर दर्शन की ॥ (एआंकड़ी) श्री जिन दर्शन मन वस्यो हो सु-गण जन जागी अंतरंग प्रीत ॥ वीत राग थी प्रीतड़ी हो ॥ सु ॥ आतम अनुभव रीत ॥ ल० ॥ १ ॥ सुध दर्शन दरिसे तदा हो सु ॥ हुवे कु-दर्शन छेद ॥ ल० ॥ जिन दरिशन निज दर्शनो हो ॥ सु ॥ कारण निमित अखेद ॥ ल० ॥ २ ॥ लखे यथार्थ स्वपर भणीं हो ॥ सु ॥ तव छांडे पर भाव ॥ पद अकरता परिणामे हो ॥ सु ॥ फाबे चेतन दाव ल० ॥ ३ ॥ पंच हूस्व सुर बोलतां हो ।सु। बेल्या जतिथाय ॥ ल ॥ प्रगट सत्ता आतम नीं हो ।सु। अजर अमर सुख पाय ॥ ल० ॥ ४ ॥ है अ-पार गुण दरिशमां हो ॥ सु ॥ रिद्धि सिद्धि प्रगटाय ल० ॥ गुलाब कहे जिन दरिशनें हो सु वस रह्यो मुज मन मांय ॥ ल० ॥ ५ ॥

अथ मघवा गणीं गुण स्तवनम् ।

राग ठुमरी ।

चलो सखी छात्रि देखन कूरथ छाडि जदु नंदन आवत है (ए चाल)

म्हांरा परम पूज्य मघराज आज मोय याद आवत हैं बार बार (ए आंकड़ी)अस्टा दस सित्ता णवें वरपे जनम महोच्छव धार धार ॥ म्हा० ॥१॥ उगणीसे आठे मगसिर वदि चर्ण रयण लियो सार सार ॥ म्हा० ॥ २ ॥ लघू वयमें पण अति बुध वंता विनय वंत सुख कार कार ॥ म्हा० ॥३॥ वीसे युव पद जय गणी स्थापी जाण लियोजग तार तार ॥ म्हा० ॥४॥ अड़तीसे वर पाट महोछव श्रमण दीक्षातेह वार वार ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ समय न्याय हद सोध गणाधिप जिन सासण सिण गार गार ॥ म्हा० ॥६॥ बहु जन बोध पमाय गुण चासे स्वर्ग सिधारे त्यारत्यार ॥ म्हा० ॥७ ॥ तस पाटे धर माणिक गणिवर मिथ्या तिमर निवार वार ॥ म्हा० ॥८॥ सशि भानू वत अतिही छाजता सखर गुणां नहीं पार पार ॥ म्हा० ॥ ९ ॥

उंगणीसे बावन भाद्रव सित दूज दिवस गुरु वार वार ॥ म्हा० ॥ १० ॥ गुलाबचंद आनंद अति पायो देखत गणि दीदार दार ॥ म्हा० ॥ ११ ॥

अथ माणिक गणी के गुणो की ढाल।

कुकड़ नां मुख साहमों हो नित जोवे लच्छि पेमला (एदेशी)

प्रात समें अघ ताजिए हो नित भजिए माणिक महागुणी (एआंकड़ी) श्री जिनवर पय प्रणमूं हो गुंण वर्णी मूंहिव मुज स्वामनां कांइ श्रवणों भवि हित कार सुख करणो तेह सरणों हो दुखः टरणो जाप जपो सही कांइ उगंते दिन कार ॥ प्रात० ॥ १ ॥ श्री जय नगर सवाइ हो तिण मांही जेवरी दीपतो कांई ओस वंश श्रीमाल हुकमचंद छोटांदे हो सुत जनम्यों अधिक मनो हरु कांइ माणिक रतन निहाल ॥ प्रात० ॥ २ ॥ लघू बयमें बैरागी हो अनुरागी श्रीजिन धर्ममें कांइ करण आतम नों उधार उंगणीसें अठ बीसे हो फांगण में श्री जय गणींक नें कांई चरण लियो सुख कार ॥ प्रात० ॥३ ॥ सोम प्रकृति हद थांरी हो हित कारी प्यारी देखने कांई चादर दी बक-

साय युव पद स्थापीसांपी हो । भोलामगा संत स-त्यां तगी कांई गुगा चासे चेत म्हाय ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कृष्गा चेत गुगा चासे हो । शुभ दिवसे पाट विराजिया कांई प्रगटिया जेम जिनंद मिथ्या तिमिर हगा कूं हो । तपवंतो सहस किरगा समों कांइ अतिसय वंत गगिन्द ॥ प्रा ० ॥ ५ ॥ गुगा खट तीस ज-गीमे हो । गगा ईशे स्वाम सिरोमगी कांई अष्ट संम्पदा पेख तुम गुगा पार न पावे हो । गावे ज्यो सुर गुरु चूप सू कांइ मुलकत मुद्रा देख ॥ प्रा० ॥ ६॥ श्री मघ पाट सुहायो हो जस छायो जा-भो जगति में कांई पायो पद गगीं राज भविय-गारे मन भायो हो । कहायो वीर जिनद ज्यो कांई तारगा तरगा जहाज ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ महर सिरदार वखागयों हो तिहा ठागयों प्रथम चौमास ही कांई दूजो चूरू गाम ताहय निज नगरी वले कीनों हो । रंगभीनो साल बावन में कांई चौथो वीदामर म्हांय ॥ प्रा० ॥ ८॥ गड सुजागा सुहायो हो त-हां ठायो चौमासो पांचमू कांई धर्म उद्योत करन्द व्याख्यानादिक म्हांई हो वरखाई बांगी अमि समी कांई भविजन को पावंद ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ आस्विन

सुक्ला धुर दिन हो कांई ताव दस्त कारण भयो। पुन हिचकी बिच २ चालंत तो पण कछु नहीं परिवा हो। शिव पद वरवा ऊठिया समचित बेदना सहंत ॥ प्रा० ॥ १० ॥ कातिक कृष्णा तीज दिन हो पर भाते दस्त इक आवियो कांई सक्त घटी तिण वार मुनि जन शरण दिरावे हो। उचरावे अण सण स्वामने कांई उदास भाव अणगार ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ रात समें तिण वेलां हो अढाई बजियां आंसरे तीज निसा बुध वार स्वामी स्वर्ग सिधार्यां हो। जिम मध्य काले आथमें कांई तपवंतो दिन-कार ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ आतम निधि रस ध्याने हो कार्तिक सुक्ल नवमी दिने कांई सुगरु तणां सुप-साय। रामलाल रिषिराया हो चौमासे जयपुर स-हिरमें कांई गुलाबचंद गुण गाय ॥ प्रा० ॥ १३ ॥

अथ डाल गणिन्द स्तवना।

राग श्यामकल्याण।

स्वामी दरशन मोय लागे प्यारो (आंकड़ी)
श्री भिक्षु के सप्तमे पाटे डालगणीं मिण धारो ॥ गणि० ॥ १ ॥ ओस वंश उज्जैण मालवे जनम

भौम सुख कारो ॥ ग० ॥ २ ॥ लघू वय माही चरन आदर्यो छांडी विषय विकारो ॥ ग० ॥ ३ ॥ पंच आगम फुन काव्य कोप ग्रथ कंठ किया श्रीकारो ॥ ग० ॥ ४ ॥ रवि प्रगट्यो जोधाण नगर मैं मिथ्या तिमिर विडारो ॥ ग० ॥ ५ ॥ गुण खट तीस अरु अष्ट सम्पदा पोडस ओपम सारो ॥ ग० ॥ ६ ॥ गुलाबचंद की येही अरज है करि किरपा मोय त्यारो ॥ ग० ॥ ७ ॥

राग भैरवीमें ।

अमरित झड वरपावे छै देखोरी ए डाल गणिंदजी अमरित झड़ (ए आंकड़ी) श्री भिक्षु के सप्तमे पाटे जिन वर सो दरसावे छै । वाक्य सुधा रस घन जिम वरपित भविक मोर हुलसावे छै ॥ देखोरी० ॥ १ ॥ पाखंड पेलण अघ दल ठेलण तीरथ नाथ कहावे छै । मिथ्या तम मेटण रवि जेहवो ज्ञानु जास वधावे छै ॥ देखोरी० ॥ २ ॥ गद्य पद्य छंद काव्य कवितादिक आगम रैस धरावै छै । श्री जिन मार्ग पुष्ट करने कूं कथा अपूरव ल्यावे छै ॥ देखोरी० ॥ ३ ॥ वाणी निज गुण

खानी सुन कर सकल सभा हरखावै छै। देस२ना आवे जातरी दरिशन करि सुख पावे छै ॥ देखोरी०॥ ॥ ४ ॥ जय नगरी का श्रावक तुम कूं एहवी अर्ज सुनावेछै॥ कृपा करी जयनगर पधारो गुलाबचंद गुन गावे छै ॥ देखोरी० ॥ ५ ॥

राग सोहिनी ।

तूंही तूंही याद आवेरे दरिदमें एचाल ।

श्री श्री डाल गणपति प्यारो ।श्रीश्री० (आंकडी) श्रीभिक्षुके सप्तम पाटसाद्रस जिन जिम गण सिणगारो ।श्री०॥ १ ॥ षट दरशन जानी हे मानी गुणखानी बानी हितकारो। श्री० ॥ २ ॥ सकल संगने सारण वारण टारण अघ रिपु मान दीदारो। श्री०॥ ३ ॥ बांचना दान देवे मुनि जन ने तात समों इण भर्त मंझारो। श्री० ॥ ४ ॥ आचारज एहवा गुन गेहवा गुलाब कहे सेयां सुखकारो। श्री० ॥ ५ ॥

ढाल ।

माताजी सज सोले सिणगार के दरसन दीजिए होराज एचाल ।

हांजी गणी श्रीभिक्षु के मुनि पट मुनिपति

दिन करू हो स्वाम। हांजी गर्णी आसा पूरण मादम सांचा सुर तरू हो स्वाम ॥ १ ॥ हांजी गर्णी तुम गुण सिन्धु रमण स्वयंभू जेहवा हो स्वाम ॥ हांजी गर्णी किम तरिए लघु बुध्य थकी घन गेहवा हो स्वाम ॥ २ ॥ हांजी गर्णी मम अवगुण नी वातु श्रवण तमे सुर्णी हो स्वाम। हांजी गर्णी पेखी ते रगजातुं सिक्षा भली थूणी हो स्वाम ॥ ३ ॥ हांजी गर्णी जलधर बुंठ भवि तरु त्रपति सुवासना हो स्वाम ॥ हांजी गर्णी सठ हठ तार्णी सुरछित रूंख कुवासनां हो स्वाम ॥ ४ ॥ हाजी गर्णी थारा वाचा सांचा मनथी सरधिया हो स्वाम ॥ हांजी गर्णी अति हरपित थयो चित्तके दुःख दूर गया हो स्वाम ॥ ॥ ५ ॥ हांजी गर्णी अपनों सेवग जान के मल किरपा करी हो स्वाम ॥ हांजी पोतानी रिद्धि राखे ते स्यों वातरी हो स्वाम ॥ ६ ॥ हांजी गर्णी गुलाब कहे एह अर्ज हिवे अवधारिए हो स्वाम ॥ हांजी गर्णी करके पूरण मरजी के जयपुर पधारिए हो स्वाम ॥ ७ ॥

गरणाइ हो वादीला थारी भांगड़ली ए चाल ।

गरणाई हो महाराजा थारी कीरतड़ी ॥ग०॥ (ए आंकड़ी) कीरतड़ी गरिणाई थारी पूर्वी परछाइ कांई भवि मन भाइ अधिकाइ महाराज कीरतड़ी ॥ ग ० ॥ १ ॥ श्रीश्री डालगणिंद की अति सय जेम जिनंद कहाई महाराज कीरतड़ी ॥ ग० ॥ २ ॥ अधिक उजागर स्वाम सिरोमणि सासण कलस छड़ाई महाराज कीरतड़ी ॥ ग० ॥ ३ ॥ वर खट तीस गुणांलंकृत पुन अतिसय तेज सवाई महाराज कीरतड़ी ॥ग० ॥ ४ ॥ ज्ञान प्रकास प्रगट तुज बानी मिथ्या तिमिर हटाई महाराज कीरतड़ी ॥ ग० ॥ ५ ॥ पाखंड पेलण अघ दल ठेलण बचन सुधा सरसाई महाराज कीरतड़ी ॥ ग० ॥ ६ ॥ चतुर संघ कूं सारण वारण टारण भवो दिखाई महाराज कीरतड़ी ॥ ग० ॥ ७ ॥ बसुधा नामी शिव नो गामी सासण जबर जमाई महाराज कीरतड़ी ॥ ग० ॥ ८ ॥ तू मुज स्वामी अंतरजामी तेरो ही सरण सुहाई महाराज कीरतड़ी ॥ ग० ॥ ९ ॥ तू मुज तात समों गण ईस्वर तुजसें प्रीत लगाई महाराज

कीरतडी ॥ ग० १० ॥ अपनो जान कृपा नित हमपै वर्णी रहे अधिकाई महाराज कीरतडी ॥ ग० ॥ ११ ॥ उगर्णीसे गुण खट चौमासे शुभ दिन शुभ घडी आई महाराज कीरतडी ॥ ग० ॥ १२ ॥ गुलाब कहै जोधांण नगर में कीरत तेरी गाई महाराज ॥ कीरतडी ॥ ग० ॥ १३ ॥

ढाल ।

छैला थेतो वागा जलदी चालो मैं तो वागा फिरू अकेली एचाल।

श्री भिन्नु मुनि पट सोहवे कांई पेखत सुर नर म्होवे ॥ गर्णी राज प्यारोरे ॥ १ ॥ हांजी गर्णी मुख पूरण शशि जेहवो कांई वचनामृत गुन गेहवो ॥ ग० ॥ २ ॥ स्वामी तुज क्षांन्ति मही सम भारी कांई जिन जिम अतिशय धारी ॥ ग० ॥ ३ ॥ हांजी तन कान्ति रवि वत जानो कांई निर्मल मति श्रुति नाणो ॥ ग० ॥ ४ ॥ हांजी तुम दरशन री हद चाह्यो कांई हौंस घणी मन म्हायो ॥ ग० ॥ ५ ॥ हांजी सब श्रावग की यह अरजी कांई कीजे पूरण मरजी ॥ ग० ॥ ६ ॥ हांजी वहु सं-

त सती लेइ लारो कांई जयपुर नगर पधारो ॥ ग० ॥ ७ ॥ हांजी गणीं अपनो जान संभारो कांई यह विनती अवधारो ॥ ग० ॥ ८ ॥ हांजी आज आनंद हर्ष सवायो कांई गुलाबचंद सुख-पायो ॥ ग० ॥ ९ ॥

ढाल

सुंदर नेम पियारो माई एचाल ।

ए महोच्छव मन भायो देखो भाई (एआं-कड़ी) समण साति पुन श्रावक श्राविका च्यार ती-रथ हुलसायो । जात्रा करी श्रीडालगणिन्दकी पातक दूर पुलायो ॥ एमहोच्छव० ॥१॥ सुनि गण-पति एह अर्ज हमारी शान्ति सुधासम वायो । रहो कायम ए गादी जिन की तुम गणपति सुखदा-यो ॥ एमहोच्छव० ॥ २ ॥ चिरंजीव बहु काल लगे तुम रवि वत् तपो सवायो । गण भूषण गण व त्सल साहिब जिन जिम शोभ सवायो ॥ एमहोच्छव० ॥ ३ ॥ मैं श्रावक तुम नगर जोधाणे दरशन करवा आयो । किरपा सिन्धू तेरी किरपा मोपै रह अधिकायो ॥ एमहोच्छव ॥ ४ ॥ सुख साता चाहूँ

गणपतिके तन मनसे लव ल्यायो । कर जोडि कहे गुलावचंद सुज आनंद हर्ष अयायो ॥ ए महोत्सव० ॥ ५ ॥

अथ श्रावक सुजाणमल कृत

लावणी उडाणकी ।

जिनद सम भिक्षु अवतारी भारी माल द्वितीय पाट धारी तृतीय पट नृप इन्दु धारी युग पट जय वर जस धारी मघवा सम मघवा गणी चउं तीरथके इन्द तस पाटो घर दीपतास कांई माणिकचद मुनिन्द इन्द सम संप्रदि सोहंदा ॥ माणिक मुख मुज मन मोहंदा अलि जिम पेख अरिवृंदा ॥ मा० ॥ १ ॥ सिंह सम स्वाम सव्द गूंजे वचन सुण पाखंडी धूजे भविजन सुन सुन प्रति वूजे हर्ष थई न्याय मार्ग सूजे ॥ मिथ्या तमकूं खंदता करता जगमे उद्योत भवियण रे घट घालतास कांई पूज्य ज्ञानकी जोत सोहत छवि साहस दिन इन्दा ॥ मा० ॥ २ ॥ शशि सम साम्य वदन दरिशे वचन झड अमृत सो वरखे भविजन चक्षु पेख हुलसे कलेजो कुज कवि निकसे ॥ कर्म

कटक कूं काटवा वासुदेव सम सूर । भर्त खेत्रमें ग-जतास कांई माणिक नांज सतूर पूर महि कीरत छावंदा ॥ मा० ॥ ३ ॥ करूं कर जोड़ नाथ अरजी चाऊँमें तुम पूरण मरजी कलपतो चौमासो चाऊँ हुकम श्रीमुखसेमें पाऊँ ॥ अरजी पे मरजी करि दीजे हुकम चढ़ाय । नर नारी हर्षित हुवे स-बके आवे दाय ॥ चाय मुज मनकी पूरन्दा ॥ मा० ॥ ४ ॥ पुज्य पारस ज्यों महि ख्याता बोध बीज समकितके दाता । भवि जन डूबतकूं त्राता मार्ग शिव स्वर्ग तणो दाता ॥ उगणीसे बावन सेमें सुद आसोज पिछाण । चौदस दिन गुण गा-वियासे कांई जयपुर मांहि सुजाण ॥ आंण सिर गण पति धारंदा ॥ मा० ॥ ५ ॥

ग़ज़ल

छाई घटा गगनमें काली राजुलको विहर दुखभारी (एचाल)

भिक्षु भारी माल राय चंदा युग पट थये जीत जोगिन्दा । पंचम पट पुनम नंदा मघवा सम मघव मुनिन्दा । तस पाट माणिक गण इन्दा छावि छाजत जम जिन्दा । तररररतरि ज्यों तारे सर

ररर सिन्धु पारं चररररर बहु दुख वार गमारा जनम जरा दुखमेट मेलत शिवठेट तारत जन वृन्दा पूज्य वदन विलोकि चंदा भवी नयन कुंज हुल-संदा ॥ पुज्य० ॥ १ ॥ उदयाचल गिरि ओपंदा ता सम सामग सोहंदा । तापे माणिक मुनिन्दा प्रगटे हें जेम दिनन्दा ॥ भवि निरखे नयन अरि· कंदा कवि चकवा चित्त हुलमंदा ॥ काररर काप्यो कूरं परररर कियो पूरं चररररतम दल चूर । भवि उर करत उद्योत बौद्ध वसु जोत रिपु अघ करत निकंदा ॥ पुज्य० ॥ २ ॥ सिंह सम मही विच गुंजन्दा । मृग पाखंड अति धूजन्दा । तन सुरपति कवि छावन्दा वीर वाक्य वज्र धारन्दा । गण सभा सुधर्मा उन्दा सामानिक संत सोहन्दा । मररररर मियल सेन साजी ज्ञान धररररर नो-बत बाजा गररररर गुजे सत गाजी ॥ गाग भर्म गढ देत वखेर कियो मोह जेर मुनि विजय वरिन्दा ॥ पुज्य० ॥ ३ ॥ सुर गिर सम स्वाम म-धीरं नमों दधि जेम गंभीर कीरत भई जगमें कीर सम सप सुधा पुन नीर सुरवीरम्याप मोडीर भानु मती निरमल जिम हीरं । चररररर चरना आयां

सररररर सीस नमायो हररररर हर्ष सवायो उं-
गणीसे बावन म्हाय काती सुद गाय सुजाण
आनन्दा ॥ पुज्य० ॥ ४ ॥

राग काफी होली

गणपतिकी छवि प्यारी मुद्रा मोहन गारी
(ए आंकड़ी) आदिनाथ जिन वर जिम प्रघटे
श्रीभिक्षू मणधारी। तस मुनि पट गणिडाल रिषी-
श्वर दिनंद समो अवतारी। मिथ्या तम करत वि-
डारी ॥ ग० ॥ १ ॥ मालव देश उजीण नगर में
जनम्यां गणि यसधारी। कन्हीरामजीके नन्दा नी-
का जड़ाव सति कूंख उजियारी। वंश यो ओस श्री-
कारी ॥ ग० ॥ २ ॥ वालक बयमें अति बुधवंता
चरण लियो सुख कारी। आगम कोप अनेक सा-
सत्रनों अभियास कियो अतिभारी हुये जगमांही
जारी ॥ ग० ॥ ३ ॥ शशिसम सोम वदन यो
सोहै मोहै मन नर नारी। वाक्य सुधासम वर्षित
हर्षित सुण भवि दिल मंझारी। प्रफुल्लित हूवे गण
क्यारी ॥ ग० ॥ ४ ॥ खट दश ओपम असृस्म
पदागुण खट तीस उदारी। कामधेनु सम गण इन्द्रा

चिन्तामणि कल्प मंदारी। ज्ञान अरु बोध दातारी ॥ ग० ॥५॥ क्षमा सुरा अरिहन्त तणी पर ए गुण तो अधिकारी। समरथ वान पणे अति खिम्मा वाह वाह तुज बलियाहारी। थारा दरशन पर वारी ॥ ग० ॥ ६ ॥ गरजी अरजी करत चोमासो कीजे अति गुणकारी। माघसुक्ल रवि सप्तमी के दिन अरजी सुजान गुजारी। करो गणी वेग तयारी ॥ ग० ॥ ७ ॥

ढाल देसीख्यालकी।

थाने मुजरो पाता जावा गढ तखत आगर कामनी (एचाल)

म्हारी अरज सुणीजे किरपा तो कीजे पुज्य दयालजी (ए आंकडी) करजोडी अरजी करू सकांई नीचो शीस नवाय ॥ म्हांग स्वामीजी नींचो ॥ चाय करे तुज दरशन केरी मेरी नगरी मांय। भवि आस करत हे खास दरशनकी हो डाल गणिन्दजी ॥ म्हारी अरज सुनिजे० ॥ १ ॥ वाक्य श्रवन सुनने को उमावो चायो करे भवि वृन्द ॥ म्हा० ॥ आनद कंद। थई हुलसावे सुणी वाण सुख कन्द हो जी काटे भवफंदा छोडी

सब बन्धा सेवा करे आपरी ॥ म्हारा० ॥ १ ॥
बहुत देसना मानवीम कांई आवे वारं बार ॥
म्हारा० ॥ बहु सुख पावे नयन सभीके देखन तुम
दीदार । कीर अब जारी कीजे म्हेर करद्राज हो
जयपुर सैर पे ॥ म्हारा० ॥ ३ ॥ कल्पतरू जिम
आप स्वामीजी चिन्तामणि मणाधार ॥ म्हारा ॥
कामधेनु सम को सईस कांइ इणमें फरक न मार ॥
वार अब मतना कीजे किरपा कर दीजे हो गण
रिक्षपालजी ॥ म्हारा० ॥ ४ ॥ गरजी अरजी सु-
जाण करत है देवो अव फुरमाय । नर नारी हर-
षित हुवेस कांइ सबके आवे दाय गय सबकी हे
येही श्रीजयनगर पधारो स्वामजी ॥म्हारा०॥५॥

राग ठुमरी में ।

गणी पदपंकज अलि मन म्हायारे जैसे च-
कोर चन्दकों जोयारे॥ (ए आंकड़ी) श्रीभिक्षूके
सप्तम पाट जिन सम डालगणिंद अवलोयारे ॥
ग० ॥ १ ॥ मेरू सो धीर संयमभू सो गंभीर नि-
रमल जैसे गंगनी तोयारे ॥ ग० ॥ २ ॥ दानी
ज्ञानी कल्प कुबेरसो बलि बलि करण विक्रम

गुणाल खोयारे ॥ ग० ॥ ३ ॥ जस पुष्प महिमा तेरी सूं मृगमद मोद कपूर छिपोयारे ॥ ग० ॥४॥ भूमंडल जाइ रिसाइ राखी रहेना कीरत कस-बोयारे ॥ ग० ॥ ॥ ५ ॥ पूरण महर न्हेर करि मीचो जयनगर बिटप वडेरा बोयारे ॥ ग० ॥६॥ उगणीसय गुण पट भादू पूनम सुजान गुण गाइ पातिक धोयारे ॥ ग० ॥ ७ ॥

इति सम्पूरणम् ॥

अथ गणी गुण महिमा स्तवनम् ।

ढाल ॥ मामी सग भाणजी वीरारे (एचाल)

गणिन्द गुण सागरू गणी रे अधिक उजागरू गणीरे ॥ (एआंकडी) सुणिए गणपति वीनती स्वामीरे हारे स्वामी अरज करत कर जोड ॥ ग० ॥ १ ।शरण गहोमें आपरो गणीरे ॥ हां ॥ गणी मेट अब गुणरी खोड़ ॥ २ ॥ रतन चिन्तामणि सम तूंही गणीरे ॥ हांरे ॥ गुणवंता सिरमोड़ ॥ ग० ॥ ॥ ३ ॥ गणवत्सल गण वालहो गणीरे ॥ हांर ॥ कवण करे तुज होड ॥ ग० ॥ ४ ॥ सुगुरु स्वमुख गुण करे गणीरे ॥ हांरे ॥ रसना करि कोडां कोड

॥ ग० ॥ ५ ॥ गणि गुण पार पावे नहीं गणीरे ॥ हांरे ॥ अतिसयनो नहि ओड़ ॥ ग० ॥ ६ ॥ तख्त भिक्षु कायम रहो स्वामीरे हांरे गुलाब कहे कर जोर

ढाल जिलाकी देसीमें

जिलाजी म्हांनो राजरा डेरा निरखण आईजी (एचाल)

म्हाराजा तुम दरशन करि आनन्द हर्ष अथायोजी म्हारा गणि शिरताज ॥ पूरव पुन्योदयथी ए सद्गुरु पायोजी म्हाराज ॥१॥ म्हा॥ निरमल बानी गरजत अमि बरसायोजी ॥ म्हारा ॥ सुन गुन गावत हृदय कमल बिकसायोजी म्हाराज० ॥ २ ॥ म्हाराजा कठिन जुवासमम पाखंड भुंड़मुरझायोजी ॥ म्हारा ॥ बाजे सुजस सुडंक तीरथ चहु म्हायोजी म्हाराज ॥ ३ ॥ म्हाराजा आप जिनंद सम सासण जबर जमायोजी ॥म्हारा॥ हूं तुज दास खास चरना चित्त ल्यायोजी म्हाराज ॥ ४ ॥ म्हाराजा ॥ मुनि जर धर करि किरपा सरणे आयोजी ॥म्हारा॥ गुलाब कहे तुम रवि वत तपो सवायोजी म्हाराज० ॥ ५ ॥

हम दम देके सोतन घर जाना (एचाल)

श्रीगणिराज लागत मोय प्यारो ॥ (आंकडी)
शशि सम सूरत निरख तिहारी गत मिथ्या तम भ-
यो उजियारो ॥ श्री० ॥ १ ॥ लख निज आतम पद
परमातम चाह लगी बरवा सुखमारो ॥ श्री० २ ॥
भवोदधि तरनो पार उतरनो लीनोमें साहिब शरण
तिहारो ॥ श्री० ॥ ३ ॥ कल्पतरू जिम आसा पूरण
भविकू सद्गति माति दातारो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पद
पकजमें लीन भ्रमर चित गुलाब कहे थयो हर्ष
अपारो ॥ श्री० ॥ ५ ॥

आलीजा थानें कैयां समजावहो जला (एदेसी)

गणिन्दा ह्याने घणाई सुहावोजी गणींद ॥
(आंकडी) श्रीभिक्षुपट सोहवनाहो गणिद
गणीन्दजी रिपिपति सखर सोहंद ॥ ग० १ ॥
सुख पूरण शशिवत सहीहो ॥ ग० ॥ चरण कमल
सुखकंद ॥ ग ॥ २ ॥ गुण भंडार कुबेर समहो
॥ ग ॥ ग ॥अतिसय जेम जिनद ॥ ग ॥ ३ ॥ तू
मुज मन मांही वस्योहो ॥ ग ॥ ग ॥ जिम भमरे
अरविन्द ॥ ग ॥ ४ ॥तीरथ च्यार बिचे फ-

व्योहो ॥ग ॥ग॥ सुर सभा जेम सुरिन्द ॥ ग ॥ ५ ॥ वज्रायुध छै तेह तणो हो ॥ ग ॥ ग ॥ मेटया अरि- नो धंघ ॥ ग ॥ ६ ॥ तिम तुम जिन वचने थकीहो ॥ ग ॥ ग ॥ पेलो पाखंड फंद ॥ ग ॥ ७ ॥ ग- णा रिछपाल अछो तुमेहो ॥ ग ॥ ग ॥ महिमें जिम नर इन्द ॥ ग ॥ ८ ॥ गुलाब कहे तुज सरणाथी हो ॥ ग ॥ ग ॥पायो अधिक आनन्द ॥ ग० ॥ ९ ॥

चाल गीतकी ।

माली थारा बागमेंरे म्हाने नीबूरो पेड़ बतायरे (एदेसी)

गणिवर थारा गण मझेरे भल संत सती सुख- काररे । त्यारी सुरतनी बलिहाररे ॥ गणी म्हारे मन बसी थारी सेवना रे स्वामी करत सदा सुखकाररे ॥ १ ॥ तुज सिख सिखणी गुण निलारे त्यारे स्म- वेग बसियो गेहरे । तुम आंण न खडे कदेहरे ॥ ग- णी म्हारे ॥ २ ॥ पंच महाव्रय पालतां रे वले पाले पंच आचाररे । एहना गुणानों न आवे पाररे ॥ ग- णी म्हारे ॥ ३ ॥ ॥ निज अथवा तुज गण मझे- हो सुध संजम जाणो तेहरे । बलि सुरतरु सम मुनि- जेहरे ॥ गणीं म्हारे ॥ ४ ॥ श्रावक ब्रत धारक

भलोरे नव तत्व तणा तेह जाणरे। धर्म अधर्म लियो पिछाणोरे॥ गणी म्हारे॥ ५॥ प्यारी लागे थारी वांचानोरे म्हाने मीठी अम्रत धाररे। सुणिया मिट अघ अंधियाररे॥ गणी म्हारे॥ ६॥ हिव मुज आसा पूरीयेरे स्वामी म्हांरे सहर फदाररे। करिए उपगार अपाररे॥ गणी म्हारे॥ ७॥ अपनो जान किरपा करोरे स्वामी निज बाडी ल्यो संभाररे। प्रफुलित करिए गण क्याररे॥ गणी म्हारे॥ ८॥ नयन त्रपाति सुख अतिथयोरे॥ स्वामी निरखत तुज दीदाररे। कहे गुलाबचंद सुखकाररे॥ गणी म्हारे॥ ९॥

होलीका गीतकी चाल।

म्हारा बाला जोबनमें किण मारी पिचकारीरे (एदेशी)

वारी जाउंरे सांवरीया थारी मुद्रा मोय प्यारीरे॥ वारी जाउंरे गणिन्दा सुरतनी बलिहारीरे (ए आकड़ी) श्रीभिक्षु पाट थाट कीयो अति जिन सासण सिणगारीरे॥ वारीजाउंरे० ॥ १॥ अतिशय धर वर गुनके सिन्धू जग बन्धु जगतारीरे॥ वारीजाउंरे० ॥ २॥ रविवत तेज प्रताप

तिहारो मिथ्या तिमिर विडारीरे ॥ वारीजाउंरे० ॥ ३ ॥ सोम वदन सशिवत सुख दाई दरशनरी बलिहारी रे ॥ वारीजाउंरे० ॥ ४ ॥ पाप ताप संताप हरणकूं शान्ति खड़्ग कर धारीरे ॥ वारीजाउंरे० ॥ ५ ॥ पूरण म्हैर करो करुणानिधि म्हारे सहर पधारी रे ॥ वारीजाऊंरे ॥ ६ ॥ गुलाबचंद आनन्द हद पायो वारीजाउं वारहजारी रे ॥ वारीजाउंरे ॥ ७ ॥

रागकाफी होली ।

आज आनन्द बधाई सुगुरुकी सेवा पाई (ए आंकड़ी) आज भलो रवि जगमें प्रगट्यो आज आनन्द बधाई । गुण गिरवो गणनायक निरख्यो नयन चकोर हुलसाई । फली मुज आस सवाई ॥ आ० ॥ १ ॥ वाणीं अमरित श्रवणों सुण कर हृदय कमल बिकसाई । प्रफुलत भविक थया अधिकेरा तन मनसें लव ल्याई । करे सेवा सुख दाई ॥ आ० ॥ २ ॥ एक अर्ज सुनिए अब मेरी जयपुर सहैर सवाई । अपनों जन पद जान कृपानिधि पधारो मुनिराई । तो सब जन हर्षित

थाई ॥ आ० ॥ ३ ॥ स्वाम तिहारो विडद सभारी संतसती सगल्याई। कीजे थाट बाटबहु जोवत ज्ञान गुलाल महकाई कर्मदल दूर हटाई ॥ आ० ॥ ४ ॥ समकित रंग रंगिया घट भिन्तिर व्रतधर फाग खिलाई। गुलाबचंद आनन्द हद पायो कर जोडी सीस नवाई विनयसे अरज सुनाई ॥ आ० ॥ ५ ॥

ढाल ।

कसींया ने तरूडा काई सिखलराय खडा कियाहो (एदेशी)

स्वामी अर्ज सुनीजे मानीजे हित कामी सही हो म्हारा स्वाम (ए आंकडी)। श्रीभिक्षुके पाट गहे घाट थाट कियो घणों हो म्हारा स्वाम। वतलायो शिव वाट कतियो वातू काटे ते माटे तेहनी ओपमां हो म्हारा स्वाम ॥ आपण अघरिपु चाट ॥ स्वामी० ॥ १ ॥ आप थये उपगारी अवतारी आरे पंचमें हो म्हारा स्वाम। जसधारि गणिराय अहो तुज क्षान्ति दान्ति पुन कान्ति ओपे गात्रनीहो म्हारा स्वाम। शान्ति अधिक अथाय ॥ स्वामी० ॥ २ ॥ त्रसला अंगज नेहवो

गुनगेहनो सादस जिन समोहो म्हारा स्वाम । एहवो अवरनकोय प्राक्रम मृगपति तेहवो गुंजवो सब्द उचारिये हो म्हारा स्वाम । वर्पित घनवत सोय ॥ स्वामी० ॥ ३ ॥ अमृत वाणी आणी बरसावो हिव मुज नगर मेहो स्वाम ॥ करता बहुजन आस चावत चंदचकोरा तिम दरशन तोरा मन बस्याहो म्हारा स्वाम ॥ श्रावगनी अरदास ॥ स्वामी० ॥ ४ ॥ भवि जन उर तुम ध्यानं जिम धनां दिल अघ खय करू हो स्वाम । गोप्यां मन गोविन्द तिशासे वेग पधारो अब धारो म्हारी विनती हो म्हारा स्वाम ॥ कहै गुलाब चंदआनन्द ॥ स्वामी० ॥ ५ ॥

ढाल—बाजेतेरा विछुवा० ।

सुगरु गणांधिपति मेरे मन बसिया (ए आंकड़ी) मनमोहनि सुरति तुम निरखी हर्ष भयो जेसे जिनजी दरसिया ॥ सु० ॥ १ ॥ वांणि सुधा गर जत घन जेहवी श्रवण त्रपति मानू मोर हुलसिया ॥ सु० ॥ २ ॥ चरण कमल बन्दित आनन्दत भव भव केरा पातिक नासिया ॥ सु०

॥ ३ ॥ च्यार तीरथ सुख धाम स्वामी मुज जयो २ धर्म पूज्य सुगुणोंके रसिया ॥ सु० ॥ ४ ॥ गुलाबचंद आनन्द सरणमें हिरदयकमल भवीजन के विकसिया ॥ सु ॥ ५ ॥

रागमांढ़में ।

प्यारी म्हाने लागेहो गणीन्द होजी हो गणीन्द थारी वांणी प्यारी (ए आंकडी) लोकालोक प्रकाश जिनागम अगम अगोचर जान वचन आदेज हेजथी सुणतां मीठा अमिय समान ॥ प्या० ॥ १ ॥ गद्य पद्य छन्द संध बहु मेलत फेलत न्यायन तांण । स्याद वाद धर विपवाद हर जिन आगां अग वाणु ॥ प्या० ॥२॥ सावद निरवद्र ओलख गोलख भरत करत शुभ ध्यान । गुलावचंद कहै धन धन ते नर नित तुज सुनत बखाण ॥ प्या० ॥ ३ ॥

ढाल-देसीजाड़ाकी ।

जाडा जुगम पडकेजी राज (ए देशी)

होजी म्हारा गण वत्सल गण इश्वरजी

म्हारा पर्म पूज्य परमेस्वरजी म्हारे सहर फदारो-जी राज (ए आंकड़ी) श्रीभित्तु तखत छाजता-जी कांई सादस जेम जिनंद । मिथ्या तम मेटण भलाजी कांई फाबत तेम दिनन्द ॥ होजी० ॥ १ ॥ गुण पट तीस सु शोभताजी कांई ओपम पट दस सार ज्ञानादिक अति निरमलाजी कांई कहिता न आवे पार ॥ होजी० ॥ २ ॥ सुर गिर जिम तुम धीरताजी कांई बीरता जिम महावीर बज्र धारि अघ कापवाजी कांई बांणी विमल गंग नीर ॥ होजी० ॥ ३ ॥ सुनिजर धर करुणां करो कांई बीनती येक अवधार म्हारे नगर फ-दारिएजी कांई अपनो बिड़द संभार ॥ होजी० ॥ ४ ॥ दास आस बहु करत है जी कांई धरत स-दा तुम ध्यान अबतो निजर निहारिएजी कांई अरज सेवककी मान ॥ होजी० ॥ ५ ॥

मजा देते हैं क्या यार तेरे बाल घूंघर वाले (एचाल)

सुनिए गण वत्सल गण स्वामश्री जिन मतिके रखवाले ॥ आंकड़ी ॥ मेंहु तेरेही आधीन रहता सेवामें लयलीन हिव करीए मुजे

प्रवीण समकित रतन यतनसे भाले ॥ सु० ॥ १ ॥ पाई समकित तुज पर साद जीवाजीव भेद बहुलाध थायो चितमें पर्म समाधि छांड़े पाखंड़ कुगरु काले ॥ सु० ॥ २ ॥ जान्यां निज गुन पर गुन भेद । आतम सुखनी करी उमेद । मिलिया तुम गुरु मिट गई खेद । त्यारो शिवपुर जाने वाले ॥ सु० ॥ ३ ॥ तुमहो सुर गिर जेम सधीर शोभत साद्रस जिम महावीर बांणी निरमल गंगनों नीर कीरत छाई लोक बिचाले ॥ सु० ॥ ४ ॥ विराजत कीधा बहुला थाट इहांभी जोवत तेरी बाट अब कर्म भर्म सब काट । मेटा अवगुण केरे छाले ॥ सु० ॥ ५ ॥ है श्रावक बहु सुविनीत । लागी तुमसे अतही प्रीत । कीधा चौमासा गणि जीत मघवा माणिक गणिभी सभाले ॥ सु० ॥ ६ ॥ सब भायोके यह आस । अबकेही कीजे चौमास करता गुलाबचंद अरदास बकसो अनुग्रह रूप दुसाले ॥ सु० ॥ ७ ॥

नयना कसूभी रग होरहे (एदेसी)

सुनिए यह अरज हमारी रे ॥ अ ॥ पर्म पूज्य

जगतार ॥ सुनिए ॥ आकड़ी ॥ यक रेन जाग्रत सोतां रे ॥ जा ॥ होता तुम दीदार ॥ सु० ॥ १ ॥ मुज देश स्वाम पधारे रे ॥ स्वाम ॥ लारे समगा पर वार ॥ सु० ॥ २ ॥ त्रिहु तीरथ विच सोहवे ॥ ती ॥ खोवे मिथ्या अंधियार ॥ सु० ॥ ३ ॥ देसनां गरज घन वरशे ॥ ग ॥ वांगी अमरित धार ॥ सु० ॥ ४ ॥ काव्य कोप कथा ना ग्रन्द ॥ क ॥ छंद भाषा अलंकार ॥ सु० ॥ ५ ॥ ए स्वपन सांचो कीजे ॥ सां ॥ रीजे बहु नरनार ॥ सु० ॥ ६ ॥ सहु श्रावगनी अरजी ॥ था ॥ मरजी कीजे जग तार ॥ सु० ॥ ७ ॥ कहे गुलाव गुग तुज गावे रे ॥ गुं ॥ पावे शिव सुखसार ॥ सु०

ढाल ॥ देसी चंद्रावलीकी

महाराज हमारी वीनतड़ी अव धारीए ॥महा०॥ आंकड़ी ॥ वीनतड़ी अवधारके राज पधारिए जी कांई ॥ सुख साता सेती नर नारी त्यारी ए जी कांई ॥ पा खंडीयारो मान महात्म गारीए ॥ पगा हां सेवगनी अरदास ये मनमें धारिए माहाराज हमारी ॥ १ ॥ श्रीभिक्षुके तखतके

आप वीराजताजी कांई ॥ सादस जिन महाराज तणीं पर छाजताजी कांई ॥ गहरा धीर गंभीर जलधि जिम गाजता ॥ पणहां मोहनमुद्रा निरखत अघ सब भाजता ॥ महाराज हमारी ॥ २ ॥ तिमिर हरण निशिअत प्रगट रवि तेजसूंजी कांई जिम मिथ्या मति नांश वचन आदेजसूं जी कांई ॥ शशिवत निरमल ज्ञान उत्तर द्यो हेजसू ॥ पणहां वांणि तुमारी अधिकी मींठी पेजसू ॥ महाराज हमारी० ॥ ३ ॥ जयपुर नगर सुधाम स्वामि किरपा करोजी कांई ॥ सब भायां रे सरणेछै गणीं आपरोजी कांई ॥ कीजे तुरत भीयार वचन मानो खरो ॥ पणहां थासे बहु उपगार मार जलदी करो ॥ महाराज हमारी ॥ ४ ॥ सुर गरु स्वमुख रसना सहस्र बनावताजी कांइ गणीं गुण अपरंपार कभी नहि पावताजी कांई ॥ निरजर इंद्र नरेंद्र मुनिंद गुन गावता ॥ पणहां गुलाबचद येक ध्यान तुमारो ध्यावता ॥ महाराज हमारी ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ राग सारग होरी ॥

गे मुनिण नाथ अर्ज गांगी (एआंकडी)

विनय करी तोरे पाय पड़तहूँ ॥ हां रे लाला ॥ वीनती करत हूँ करजोरी ॥ एसुनिए ॥ १ ॥ शरन लियो भवसिन्धु तरनको ॥ हां रे लाला ॥ कुगुरु कुदेव कु पंथ छोरी एसुनिए ॥ २ ॥ सहस्त्र निसा-कर कोड़ दिवा कर ॥ हांरे लाला ॥ ता सम तन दुति हद तोरी ॥ एसुनिए ॥ ३ ॥ अति सय जिन सम निर मम खम दम ॥ हांरेलाला ॥ काट कर्मकी भकभोरी ॥ एसुनिए ॥ ४ ॥ आंण अखंड़ प्रचंड वांणि तुज ॥ हांरे लाला ॥ जयों २ श्रीगछपति थोरी ॥ एसुनिए ॥ ५ ॥ पूरण महर नहरथी सींचो ॥ हांरेलाला ॥ अव संभार वाड़ी तोरी ॥ एसुनिए ॥ ६ ॥ बनीरहे सुनिजर नित हमपे ॥ हां रेलाला ॥ गुलाब कहे विनती मोरी ॥ एसुनिए ॥ ७ ॥

ढाल

सालें सालेजी नणद वाई रो वीर काटो सालेजी ॥ एदेशी

चालो चालो जी गणिन्द महारे देस पूज्य फदारोजी (एआंकड़ी) ॥ भविजन मन आधार हो रे वावा जिम महीके अहि सेष ॥ पूज्य फदारो

जी ॥ वालो० ॥ १ ॥ आशा पूरण कीजिय-
रे बावा अहो २ पूज्य परमेश ॥ पूज्य ॥ २ ॥
चिन्ता चूरण तू खरो रे बाव। सादस मणीं रतनेस
॥ पूज्य ॥ ३ ॥ बहुत लाभ थांसे सही रे बावा
सांभल तुज उपदेस ॥ पूज्य ॥ ४ ॥ अतिशय
धर गुणासागरू रे बावा ओपत जेम जिनेश
॥ पूज्य ॥ ५ ॥ करि करुणां हिव त्यारिएरे
बावा चात्र मांम करेस ॥ पूज्य ॥ ६ ॥ गुलाबचद
सविनय करी रे बावा करतां अरजी पेस ॥ पूज्य। ७।

ढाल

करवेया न क्रूओ हमार बिदरदी हॉगालमा (एचाल)

सुन सुनए यह अरज हमारि क्रिपासिन्धु
हो साहिवा (एआंकड़ी) करूं दरश तभी हर्ष
अधिक होता हे शशिवदन सदन नयन चकोर
मोहता है। मन भपट लपट रपट खोता है ग्राहि सखर
सुगुण चुनमुक्तिदाम पोता है। नाहि पावत तुम
गुण पार क्रिपासिन्धु हो साहिबा ॥ सुन० ॥ १ ॥
परूं पाय नमूं सीस मे तुज चरणोंमें। सुणूं वाक्य
सुधा मुज करणोमें। करो देस सुची नांथ लीयो

सरणोंमें । किरपा करि त्यार वांछु तरणोंमें तुम-
हो वांछित फल दातार ॥ क्रिपा० सु ॥ २ ॥
न करूं अर्जतो करूं किस आगे । जे होवे दाता
ताहिसे मांगे । देवे चिन्तत फल कल्पद्रुम जे
सागे देख दुर कंटित जुवाससे भगि अव सुनि-
जर मुजपे निहार ॥ क्रिपा ॥ सु ॥ ॥ ३ ॥
तुज रटत कटत कर्म भर्म नहिं रहता । समकित सु-
ध धार सार ग्राहिता । मोह कींच धोय सोय निज घ-
र रहता । पाखंड भंड खंड मंड डहता । पावे सेवाथी
शिव सुखनार ॥ क्रिपा ॥ ४ ॥ ए अरज करज
दरज कर जानीजे । करो और म्हैर सहर जयकानी-
जे ॥ कहे गुलाब जाव सताब आपीजे तुज रीज ची-
ज किरपा करि सांपीजे । थावे आनंद हर्ष अपार
॥ क्रिपा ॥ सु ॥ ५ ॥

ढाल

थांपे वारी म्हारा गणपति ये विनती अव-
धारिके राज पधारिये हो स्वाम (ए आंकडी)
श्रीभिक्षुगण तखत सोहंद । थांपे वारी म्हारा गण
पति मेटण मिथ्या मंद । प्रत्यक्ष दिवा करूंहो

स्वाम ॥ थांपे वारी म्हारा गणपति ये विनती० ॥ १ ॥ अतिशय धारी जेम जिनंद ॥ थांपे वारि म्हारा गणपति गणवत्सल गुणसिन्धुके सांचा सुर तरू हा स्वाम ॥ थांपेवारी येविनती- ॥ २ ॥ करि पूरण किरपा ऐ जितेंद ॥ थांपेवारी म्हारा गणपति ॥ साथ लेइ रिषि व्रन्द हुकम करो सहीहो स्वाम ॥ थांपे वारी । येविनती ॥ ३ ॥ मोर पपैया चाहत चद ॥ थांपे वारी म्हारा गण-पति । जिम अभिलापा करिन्द । श्रावक सहु तुम तणी हो स्वाम ॥ थांपे वारी । ये विनती० ॥ ४ ॥ आसा वहु दिनसें गण धार ॥ थांपे वारी म्हारा गणपति ॥ अवतो निजर निहारवो देस संभारी एहो स्वाम ॥ थांपे वारी ये विनती० ॥ ५ ॥ उपगारी करते उपगार ॥ थांपे वारी म्हारा गण-पति ॥ तारन तरन कहावो तो हिव तारा ए हो स्वाम ॥ थांपे वारी ये विनती० ॥ ६ ॥ तुमसे न करूंतो करु किनसे पुकार ॥ थांपे वारी मैं म्हारा गणपति ॥ इण भव में आधार मिल्यो तू चिन्तामणी हो स्वाम ॥ थांपे वारी । ये विनती० ॥ ७ ॥ भक्ति कियां तारे जगतार ॥ थांपे वारी

म्हारा गणपति । बिन भक्ती जे तारे सही तस तार वो स्वाम ॥ थांपे वारी बिनती० ॥ ८ ॥ गुलाब कहै सरणे सुखकार थांपे वारी म्हारा गणपति ॥ एह संसार असारथी पार उतारी एहो स्वाम ॥ थांपे वारी य बिनती० ॥ ९ ॥

अथ दर्शनकर गावणेकी ।

गणी गुणधारी रे सुखकारीरे भेटयारे धन भाग्य हमारा (एआंकड़ी) इण गणपतिरी महिमा मोटी अतिशय गुणहित कारामें वारी जाउं ॥ आ॥ सुर गुरु स्वमुखथी नितगावे तोही न पावे पारारे ॥ धन्य भाग्य हमारा ॥ गणीं ॥ १ ॥ दुख उपद्रव सब नासियारे इत भयादि बिडारा ॥ मेंवारीजाउं हुलसत अंकुर तन थकी रे देखत दरश तिहारा रे ॥ ध ॥ ग० ॥ २ ॥ आज कृतार्थ में थयो रे भल रवि गगन सिधारा ॥ में॥ कल्पतरु मुज आंगण फलियो गणीं मुख नयन निहारारे ॥ ध ॥ ग० ॥ ३ ॥ सांभल मीठी देसनां रे श्रवण त्रपाति थया सारा ॥ तुम पदपंकज मुज मन भ्रमरा सरण ग्रहा सुखकारारे ॥ ध ॥ ग० ॥ ४ ॥ सुन सेवग-

नीं वीनती रे, अनुग्रह करि जगतारा ॥ मैं ॥ वनीरहे सुनिजर नित हमपे आनंद हर्ष अपारे ॥ ध ॥ ग ॥ ५ ॥

अथ सहर पधारियां गावणांकी ।

एक दिवस विखे न्रपसुत साथ चोगाने धनोआवे (एदशी)

थयो हर्ष अपार श्रीगणराज आज मुज सहर पधार ॥ सब मिल नर नार तारन तरन जहाजनो दरश निहारे ॥ (एआकड़ी) गादी धर गिरवा गुणवंत । उपसम रस भरि वाक्य वदंत । सुन सुन भविजन मन हुलसंत ॥ थयो० ॥ १ ॥ साथ संत सत्यानों व्रन्द । जिम तारा बिच सोहवे चंद । आतिशय तनु क्रान्ती ओपद ॥ थयो० ॥ २ ॥ पूरण महिर करी आया सब जनके मन मांही । भाव्या करि सेवा सुकृत संचाया ॥ थयो० ॥ ३ ॥ जिनागम स्वमुख फुरमावे संसार अनित नित दरसावे अपूर्व कथा बिच बिच ल्यावे ॥ थयो० नित सुनिजर हमपे वनी, रहे भायांवाई सब शरण गहे लेवा शिव रमणी गुलाब कहे ॥ थयो ॥ ५ ॥

मधरो हालरियाका गीतमें ।

पांदर चालोजी श्रीसुमतिनाथजीरा दरशन करस्यांजी (ए देशी)

गावो बधावो हे गावो बधावो हे गणीनाथके चरणा सीस नवावोहे ॥ (ए आंकड़ी) कल्पतरू म्हारे आंगण प्रगट्यो आनन्द हर्ष उमावोहे आ ॥ मोतियन चोक पुरावो हे ॥ गावो० ॥ १ ॥ मंगलाचार थयो बहुतेरो सुध संवेग सजावो हे ॥ सु ॥ पातक दूर पुलावो हे ॥ गावो० ॥ २ ॥ हिल मिल सजनी दिवसरु रजनी पूज्य परमपद ध्यावो हे ॥ पू ॥ सेवा कर लीजे लाहो हे ॥ गावो० ॥ ३ ॥ सुस्वर कंठ जयणा युतथी श्रीगणपतिना गुण गावो हे ॥ ग ॥ संचित कर्म हटावो हे ॥ गावो० ॥ ४ ॥ विघन विनाशक प्रियवच भाषक सांचा सतगुरु पाया हे ॥ सां ॥ दरश करि हर्षित थावो हे ॥ गावो० ॥ ५ ॥ गोचरी वेल्यां दिसि अवलोकी वैसी भावना भावो हे ॥ वै ॥ प्रीत धर साता चावो हे ॥ गावो० ॥ ६ ॥ आंगण आया विनय भक्तिसे सुध चिहु आहार वहिरावो हे ॥ सु ॥ गुलाब कहे शिव पद पावो हे ॥ गावो० ॥ ७ ॥

अथ श्रीधर्मजिनस्तवनम् ।

पीपलीका गीतमें ।

अब घर आना विलां लगरही जी (ए देशी)

धर्मोदधि जिम धर्मजिनेश्वर गुण निलाजी होजी कांई जाप जपूं सुखकार । अंतरजामी स्वामी सासणनां धणीजी होजी कांई त्रिभुवनपति सिरदार । जियातू जपले प्रभु महावीरनेजी (ए आंकडी) ॥ १ ॥ विवद परि सह उपसृग जीतियाजी कांई कर्म रिपू क्षय कीध । ज्ञानानन्त गुण स्थानक तेरमेंजी । होजी कांई प्रगट कियां सुप्रसिद्ध ॥ जिया तू जपले० ॥ २ ॥ द्वादसांग वच अतिही गरजताजी कांई बरषत अंमरित धार । भवी जन मोर पपीहा हर्षताजी होजी कांई लोकालोक विचार ॥ जियातू० ॥ ३ ॥ गण धर ग्यार प्रभूजी तारियाजी कांई श्रमण सहु चौदे हजार । सातसह निगामां केवलीजी होजी कांई पाम्यां शिव सुखसार ॥ जियातू० ॥ ४ ॥ चंदन वाला आदिदेजी कांई साधवी सहस छतीस । निरमल चारित्र पाल्यो भावसूंजी

होजी काई म्हासतियां सुजगीस ॥ जियातू० ॥ ५ ॥ नाण अवधि मन परियवाजी काई थया बहुत अणगार। आतम ध्यानी तपस्वी अतिघणा-जी होजी काई लब्ध तणा भंडार ॥ जियातू० ॥ ६ ॥ पायो सासण आपरोजी काई मेंहू च-रणारो दास गुलाबचन्द कहै सरणों आवियोजी होजी काई मेटो भव दुख पास ॥ जियातू० ॥७॥

पुनः स्तवनम् ।

छवि दिखलाजा बांके सांवरिया ध्यान लगा

मीय तोरारे (ए देशी)

श्री वर्धमान स्वाम सुख कराजिन जाप ज-पूंमें तोरारे। सीतल बानि खानि निजगुन सुन हरषत दरशत प्रगट पाप पुन्य फल दुख सुख है शुभाशु-भ योग ताते कुमति संग छोरारे ॥ श्रीवर्ध० ॥१॥ लागी लगन धर्मसे मेरी सिरपर धारी आणातोरी प्रीत जगी अंतर आतम चित्त जैसे चंदचकोरारे॥ श्रीवर्ध० ॥२॥ सुख बासन शासन तुज नामी मन वाञ्छित फल दायक स्वामी। गुलाब कहे ये अरज हरज कर कारतहूं कर युग जोरारे॥ श्रीवर्ध० ॥३॥

पुनः स्तवनम् ।

हान जोर तोरे चरणपरी आनो नगर मोरे हरी (ए देशी)

शरण लियो भव सिन्धु तरणको तारो जिन करुणा करी. (ए आंकड़ी) आप निरंजन जन मन रंजन चेतन मजन भव दुःख भंजन राहलियो तोरो कुगति टरी ॥ तारो जिन करुणा करी० ॥ १ ॥ वीतराग तुम धर्म रागि हम आमित जागि रम परिणत आतम निज गुन सारत विपत हरी ॥ तारो० ॥ २ ॥ उन मारग तज सुध मारग भज करणा सिद्धि करू गुनगावत तुज गुलाबचंद कहे आनन्द घरी ॥ तारो० ॥ ३ ॥

अथ निजजीवको प्रतिबोधनेकी ग़ज़ल ।

माया करो इधरभी मेरी ध्यान कभी ? (ए देशी)

। ल्याया करो शुभ भाव चेतन योग मही सही । मिलेंगे सुख तभी अपरपार मही २ ॥ (ए आंकड़ी) कावूमें करके दिलको चलो सिद्धि स्थानकी तरफ । वहां हे अनन्त शक्तिवंत वहार सही २ ॥ ल्याया० ॥ १ ॥ तू हे वैसाही याद कर निजरूप भूपको

मगर कर्मोंके संग रंग छार सही २ ॥ ल्याया० ॥ २ ॥ निज पहिलोंको तू भूल पर रूलमें रमें गमे नहीं ये रीत प्रीत वार सही२॥ ल्याया ॥ ३ ॥ मत कर पराई बात घात प्रांगा मात्र ही । अहिन्सा धर्म पर्म नरम सार सही२ ॥ ल्याया० ॥ ४ ॥ अब चेत प्यारे पाप टार साधना वही । महाबरत पंच करत अंगीकार सही २ ॥ ल्याया० ॥ ५ ॥ भवन भव दुःख ज्यो चाहे अगर नहीं तो सचे गुरुकू करो नमस्कार सही २ ॥ ल्याया० ॥ ६ ॥ पावेंगे सुख अजर अमर गुलाब यों कही । रखु जतन रतन तीन सार सही २ ॥ ल्याया० ॥ ७ ॥

दयाधर्मस्तवनम् ।

चाहे बोलो या न बोलो दिलो जानमें फिदा हूं (ए चाल)

ये बात सही कर जानो जिन धर्म दयामें मानो (ए आंकड़ी) बिन दया धर्म नहिं होवे । तू चेत जरा क्या सोवे । छउ कायाको पहिचानो जिन० ॥ १ ॥ सब मतमें दया बताई । हिन्सा खोटी दरसाई । कुल बेद पुरान बखानो ॥ जिन० ॥ २ ॥ जिन आगम मांहि सुन्योछै अहिन्सा

धर्म थुन्योछो। ये रतन वतन पहिचानो॥ जिन०
॥ ३ ॥ मत हणो प्राण खटकाई। कही परसे ह-
णावो नाहीं। हणताने भलो मतजानो ॥ जिन०
हिन्सामें धर्म ज्यो लाधे। तो दया कियां अपराधे
करो गोर झूँठ मततानो ॥ जिन० ॥ ५ ॥ इक-
इन्द्री जीव मराई। त्रसकू साता उपजाई। तब दया ध-
र्म कहां ठानो ॥ जिन० ॥ ६ ॥ ये मर्म धर्मनो
सोचो जरा अंतरघट आलोचो। बेर बेर न नर भव
पानो ॥ जिन० ॥ ७ ॥ धर्म हेत जंतु जे मारे। मा-
ने नहिं दोष लगारे। ये अन तीर्थक नि वानो ॥
जिन० ॥ ८ ॥ भगवत तणी ये बांणी। तिरिया
जे सत्य कर जांणी। सुध समकित दिलमें आनो
जिन० ॥ ९ ॥ जे दया धर्म आदरियो। तसु भव
भ्रमनां दुख टरियो। संजमथी शिवगति स्थानो ॥
जिन० ॥ १० ॥ पंच आश्रव द्वारको टारो। जब
थावे सुःख अपारो। कहे गुलाबचंद हुलसानो ॥
जिन० ॥ ११ ॥

जिनवाणी स्तवनम्।

बरसा गूषणदेर मीजाजिडा बरसा (ए चाल)

बांणी अमरित धार प्रभूजी थारी ॥ बां॥ मोय

प्यारी मुख कारी बानि हारी जिनंद थारी वांणी अमरित धार (ए आंकड़ी) प्रभु मुख निःकासि कुसम वत् विकसी प्रफुलित करी गणा च्यार । हे सोहम गणधर संग्रह करके आगमी सूत्र मंझार । ॥ मोयप्यारी ॥ १ ॥ स्याद बाद सज विषंवाद तज पज भवसागर तार । हे मुन संजम धर तत्व विलोकि चरता शिव सुखनार ॥ मोयप्यारी ॥ २ ॥ नय निक्षे.प यथारथ समजी किया सुगरू अंगीकार हे कहे गुलाब तेरो पंथ पायो थायो हर्ष अपार । ॥ मोयप्यारी ॥ ३ ॥

महावीर जिनस्तवनम् ॥

भरी गगर मोरि ढुरकाई छैल (एचाल)

सुनो अरज मोरी जिन राज आज ॥ सु ॥ करो सिद्ध काज देवो शिवको राज ॥ सु ॥ (ए आंकड़ी) दुस्तर भव जल पलमें तरनकों मिले मोय सुगर गुणोंकी जहाज ॥ सुनो ॥ १ ॥ तूं अलमस्त समस्त प्रकाशत श्रीमहावीर गरीब निवाज ॥ सुनो ॥ २ ॥ आतम संमपति प्रकट करन कूं दया धर्म सुध पर्मसाज ॥ सुनो ॥ ३ ॥ व्रत भूषण दूषण रुन बरजित शिरधारी तुम

आंण ताज ॥ सुनो ॥ ४ ॥ गुलाबचंद हद आनंद पायो सरणआयकी रखिय लाज ॥ सुनो ॥ ५ ॥

अथ कव्वालीकी चालमें ।

अब मोह नगरियामे नहि रहुं मोय प्यारी लगे अपनी नगरी ॥ मोयप्यारी लगे ॥ (एआंकडी) काल अनादिसे वास लह्यो । अस्ट कर्मोंके सग उलंठ भयो चक्र भम्यो डगरी डगरी ॥ मोय प्यारी लगे अपनी नगरी ॥ १ ॥ अब जिन वच सांभल लगन लगी । उरमें सुध समकित जोत जगी । तब घोर मिथ्यात्वकी नीदटरी ॥ मोयप्यारी लगे ॥ २ ॥ निज आतम रिधि है सिद्ध जिसी । एजान ज्ञानोदयसे हुलसी । करस्यु करणी सखरी सखरी ॥ मोयप्यारीलगे ॥ ३ ॥ एकाविकरणता भाव झिले । भिन्नाविकरणता दूर टले । सुख साशय वेग मिले तबरी ॥ मोय प्यारी लगे ॥ ४ ॥ कहे गुलाबचंद आनद लहे । जे नाथ निरंजन सरण गहे । प्रभु ध्यान कीयां प्रभुता मगरी ॥ मोयप्यारी लगे अपनी नगरी ॥ ५ ॥

अथ श्रीडालचंदाचार्यस्तवनम् ।

होलीका गीतकी चाल ।

हां सखीजीनें पेड़ा भावे (एदेशी)

हांके गणीवर डाल पियारो । सासणपति सत् जग उजियारो । च्यार तीरथरो साहिबो तेरापंथवारोरे । के गणीवर डाल पियारो ॥ १ ॥ मालवदेश उजेण मंझारो । सेठ कनीराम जात पियारो । तस सुत अदभुत कान्ति सान्ति चित गुण युत सारोरे ॥ के गणीवर डाल पियारो ॥ २ ॥ लघुवयमें संजम व्रतधारो । प्रबल बुद्ध धरि शुध आचारो । नीत निरमल बल तेजसे पाखंड सब टारोरे ॥ के गणीवर डाल पियारो ॥ ३ ॥ मांणक पट थट करत अपारो । ज्ञानालय अतिशय सुखकारो विविध रीत हित साध सती बिच बाग्रत कारोरे ॥ के गणीवर डाल पियारो ॥ ४ ॥ गुण गिरवो अति मोहनगारो । भविजन मन थयो हर्ष अपारो । गुलाबचंद आनंद कंद लह्यो सरण तिहारोरे ॥ के गणीवर डाल पियारो ॥ ५ ॥

राग सारंग ।

च्यार तीरथरा लाडलाजी म्हारे जयोश्री डालगणिन्द (एआंकड़ी) श्रीभिक्षु तुज गणा मलभोजी कांई ये मुनिवरनों बन्द ॥ च्यार तीरथरा लाडलाजी म्हारे जयोश्री डालगणिन्द ॥ १ ॥ वलि म्हासतियां दीपतीजी कांई श्रावग श्राविका कन्द ॥ च्यार ॥ २ ॥ गणपति गिरवा शोभताजी कांई जिम सुर सभामें मकिन्द ॥ च्यार ॥ ३ ॥ ज्ञानोदय तुम रवि समोजी कांई मेटण मिथ्या मन्द ॥ च्यार ॥ ४ ॥ गरजत घन जिम देसनाजी कांई वाग्रत वयन अमन्द ॥ च्यार ॥ ५ ॥ पिय लागे तनु संपदाजी कांई सुख पूरण जिमचन्द ॥ च्यार ॥ ६ ॥ करि दरशन सुख पावियोजी कांई गुलाबचन्द आनन्द ॥ च्यार ॥ ७ ॥

म्हारा पूज्यजी नमगणी देवा पूजा म्हारा आबादे (पचाल)

देसना घन जिम अति गाजे श्रीडालचंद गणी। गाजेहो म्हाम । म्हाने म्हालो लाग सन्त सभा जे हो म्हाम । सुणन्यां हुवे वांछित का

जेहो स्वाम ॥ देसना घन जिम अति गाजे ॥ (एआंकड़ी) श्री भिक्षु मुनि पट मलारे ज्ञान गुणो भंडार । संत सत्यां विच शोभतारे ओपता जिम जगतार सार सुखसाजे हो स्वाम ॥ देशनां ॥ १ ॥ समकित तरू प्रफुलित हुवेरे भवि-जन हृदय मंझार । चरन पुष्प फल नीपजेरे तिणा-से खेवो पार जहार गुणा छाजेहो स्वाम ॥ देशनां ॥ २ ॥ पूज मिष्ट वच छोड़केरे मिच्छत विषमत धार । गुलाव कहे सुखते लहेरे थोवजे अणगार स्वार अघ भाजेहो स्वाम ॥ देशनां ॥ ३ ॥

ढाल देसीगीतकी

क्या जादूडारायें म्हारी लीयां ढाडीर उपरन क्या जादू डारा (एचाल)

क्या छविप्यारी थांरी मुद्रा मोहनगारी हो स्वाम ॥ क्या० ॥ तुम पंच महाव्रत धारीहो स्वाम ॥ क्या० ॥ में निरख निरख बलिहारीहो स्वाम क्या छवि (एआंकड़ी) बैठाश्रीजिन गादी ऊपर शोभे अतिशय धारी । करी प्रफुलित गणा गुलक्यारीहो स्वाम ॥ क्या छवि प्यारी ॥ १ ॥

च्चान्ति दान्ति चित सान्ति गुणांगर निरमम निरहंकारी । देयो पाखंड पंथ विड़ारीहो स्वाम ॥ क्या छवि प्यारी ॥ २ ॥ विविध मरियाद अमृत हित वचथी संभलायो । सुखकारी करो सरणा संत सत्यांरो हो स्वाम ॥ क्या छवि प्यारी ॥ ३ ॥ किरपा सुनिजर रहे नित हमपे करुणा भाव विचारी थांरी सेवा अति हितकारीहो स्वाम ॥ क्या छवि प्यारी ॥ ४ ॥ माफ करो अवगुण सब मेरे बिडद जाण पोतारी ये अरज गुलाब गुजारी हो स्वाम ॥ क्या छवि प्यारी ॥

ढाल नाटककी चालमें ॥

सुख पारे तूंतो प्यारे जीया डालगणिन्द गुण गारे (एआंकड़ी) मुनी पट भित्तके हृदसो हवे तस चरणां चित ल्यारे ॥ जिया डालगणिन्द गुण गारे ॥ तू-यारे ॥ १ ॥ पदवी धर गण वत्सल साहिब सुमग्त कर्म ग्वपारे ॥ जिया ॥ २ ॥ दायक समकित चर्ण तणा ये देख दरश हुलसारे ॥ जिया ॥ ३ ॥ वागिर्त वच जिन मार्ग यथारथ सुध दरशन दरसारे ॥ जिया ॥ ४ ॥

दूजो एहवो नाहिं भर्तमें होतो माय बतलारे ॥ जिया ॥ ५ ॥ सुध आचारजके गुण गातां तिरथं कर पद पारे ॥ जीया ॥ ६ ॥ गुलाबचंद आनन्द सरणमें हुलस २ गुण गारे ॥ जिया ॥ ७ ॥

चाल नाटककी ।

श्रीराजमाता गणनाय नगरी म्हारानी म्हारानी (प्रचाल)

श्रीडालचंद गणीराज गच्छपत म्हाराजा म्हाराजा ॥ तुमहो तारन जिहाज गच्छपति म्हाराजा ॥ म्हाराजा (एआंकड़ी) तुम शिव गामी अंतरजामी भवदधिकेपाजा सुरनर वंदे । पाप निकन्दे पाय पड़े राजा ॥ श्रीम्हाराजा म्हाराजा ॥ १ ॥ मनसा पूरण चिन्ता चूरण चिन्तामण ताजा संकट हरो तेरो सरणो है गरीब निवाजा ॥ श्रीम्हाराजा ॥ म्हा ॥ २ ॥ गुलाबचंद कहे थयो अति आनन्द गुन गावत साजा ज्यो तुम ध्यावे शिव सुख पावे बाजे जस बाजा॥ श्रीम्हाराजा ॥ म्हाराजा ॥ ३ ॥

इति संपूरणम् ॥

सवैया ३१ सा ।

एसो जिन सासन है प्रकट प्रवीन जामें भविक लहलीन रहे गणि गुण गाय के। अनुतर भुवनके अमर धरत ध्यान जिन सा मुनिन्द जान कहे सुख पायके मुनि पट भित्त के फावत डाल इन्द महिमां अप्रम पार करे अघ तोडके कीरत सुजस जाकी मधुर वचन ताकी जावे वलि हारी ए गुलाब चद जोड़के ॥ १ ॥

पुनः सवैया ३१ सा ।

शोभत है सोहम सभापति सकेन्दसे भूपति दरबार फावै चक्रराय आनिए तारा गण शशि पुन पडिता भूषण गुन बनिता सिणगार सील तन मैं प्राणि ए । ओपे क्रिया ज्ञानतें सधी तत्व ज्ञानतें आत्माहूके ध्यानते अध्यामर्ता बखानिए । कहते-गुलाब ऐसें आज इस भर्तमांहि शासन सिरोमन श्रीडाल भशिजानिए ॥ १ ॥

इति संपूरणाम् ।

अथ उपदेस वर्णन कलस ।

चाल गीतकी छन्द

वर अथिर ये संसार सगपण लघू बड़पण कारमों । जिम ओस बिन्दू जिहांसो भिन्दू निश निकन्दू नां रम्यो फुन स्वपन में इक मानवी मन जानवीहूं नर पती । वहु गरथ पाई दुख गमाइ रिधि सझाई है अती । ते रंक बंक निसंक निद्रा पाय सूतो बन महों । शिर हेट हड़ियां कर पकड़ियां स्वान अड़ियां जागही । नहिं राज पाट सु थाट नरनो चिन्तवे ये स्योंथयो । इम कहै गुलाब सतावसे धर्म कीजेये जे जिन कह्यो ॥ १ ॥

त्रिभंगी छन्द ।

पहिले गुन ओलख । पेख अमोलक । खोले गोलख तब वानियां । तो नफा उठावे चित हरकावे गगर बजावे भर पनीयां । इम भविगुर धारे ज्ञान विचारे कुगरु निवारे धन संगी । बिपत मिटावे शिव पद पावे छन्द कहावे तिरभंगी ॥ १ ॥

सवया २१

कुमति कुनारो नाह ताहिको विचारो सारो कुगुणा कुठागे जसो सांपको पिटारो है। निन्दक अपारो विन आणा धर्मधारो जिन सासनसे न्यारो निज गुणको ठगारो है। राग द्वेष यारो माया लोभमे मथारो ऐसो कुगुरु धुतारो तन मनसे बिसारो है। कहत गुलाब जब हर्ष आनन्द सब पाई समकित अब तेरो पंथ प्यारो है १ ॥

उपदेस कलस।

अहो प्राणी क्यों अजाणी रहे तनसदा निज उत्पत्तिको याद कर डर गर्भ दुखपायो तदा पदऊंच मस्तक नीच कर दोय मुष्ट चच्चू पामही पुन भाकसी जिम पेख देख गुमान मति कर जासही ॥ १ ॥

पुनः कलस।

चेत चैतन्य अथिर है तन धन जोवन नितना रहे इसवास्ते निज वस्तुजानी इक ठिकानी चित गहे वलि अजलीना नीर जिम पुन पान पाको गिर-

तही इम कुगुरु करमी। जीव डूबत सुगरु संगी तिर-
तही ॥ १ ॥

कलस चाल गीतकी छन्द।

श्रीवीरसासन सुखको वासन धर्म आसन जानही। भिक्षुगणीनो गण अनोपम मिल्यो निज गण थानही। सुध दरश दरस्यो आतम फरस्यो उदय समकित नो थयो। गणी डालचंद प्रसाद श्रावक गुलाब कहै आनंद भयो ॥ १ ॥

इतिसंपूर्णम्।



शुद्धाशुद्धिपत्रम ।

पान	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
७	१०	पुद्गल	पुदगल
८	१४	माल्लु नहोमक्का	मम्पूरणमालूमनहोसक्का
९	११	भूमण्डल	भूमंडल
१३	१३	मंद्यनो	मंथनो
१३	१६	सुर	सुख
१४	२	यांमे	पामें
१६	३	केलनी	कलनी
१६	४	आनानो	अननो
२०	९	निजपर्याय	कुलमर्याय
२२	७	सिडाय	सिझाय
२३	१९	धाजीवे	धावेजी
३१	१३	कुथु	कुथु
३८	१८	हृदनाकोजी	हृदनींकोजी
५१	१९	सुगुरु	सुरगुरु
५२	१०	त्राता	त्राता
५३	७	अन्तमें	अगमें
५४	१८	पामग	पासग
५७	१९	ओखियोगे	आखियोरे

पाने	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
५६	५२	मजंम	असंजम
५९	१७	वीर	वार
६२	१८	यामो	पामो
६६	१४	खप	खय
६९	१३	मणा	मणू
७०	५	अस	त्रस
७०	९	देवरु	देवगरु
७०	१८	वाल्यादिकनों	छाल्यादिकनो
७४	६	विनजायां	विनजोयां
७५	८	पुनिराजनी	मुनिराजनी
७६	१	वाध्योहुवे	वांछ्योहुवे
७६	८	श्रीजिसवर	श्रीजिनवर
९८	१५	भवोदिखई	भवोदधिखाई
१०१	१२	साम्य	सौम्य
१०२	१६	जम	जेम
१०३	१	गणांरी	गणीं
१०३	७	अरिकंद	अरिविन्दा
१०३	१५	बाजा	बाजी
१०६	४	कीर	कार
१०६	४	करताज	करदीजे

जाहिर खबर ।

सर्वजनोंको विदितहोके हमारे यहां पीढियोंसे माणक, पन्ना, मोती, हीरा आदि जवांहिरातका व्योपार चला आता है। तथा सोना मीनाकारी-का कामभी किफायतसे वनाया जाता है। लाकट, सीटी, कैरी, हातमें पैननेके कड़े, चूड़ीजोडे, लकड़ी-के लगानेके पोले, चमचा, चैन, कानोंकी लोंग; या मुरकीजोड़ी, अंगूठी, छल्ले वगेरा अनेकतरहके सादा वा जड़ाउ तयार होते हैं और ठीक कीमत पर बेचे जाते हैं तथा जड़ाईका कामभी फायदेसे कराया जाता है सो जिस साहिबको जरूरतहो नीचे लिखे नामसे चिठी व्यवहार करें कभी धोखा न होगा। जोंहरी गोरूमल चौथमल लूणिया-

अथवा-

गुलाबचंद लूणिया जोंहरी-

सवाई जयपुर